समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• दिसम्बर २०२२ • वर्ष ७३ • अंक १२

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

८८वाँ स्थापना दिवस विशेषांक

मुख्य अतिथि

श्री सुजीत बोस

दमकल मंत्री, (स्वतंत्र प्रभार)
पश्चिम बंगाल सरकार

सम्मानित अतिथि

श्रीमती अमला रुइया

(समाज सेविका)
अध्यक्षा, आकार चैरिटेबल ट्रस्ट

सभापतित्व

श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मुख्य वक्ता

श्री सीताराम शर्मा

मानद कंसुल जनरल, बेलारुस गणराज्य
एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.मा.स.

स्वागताध्यक्ष

श्री संतोष सराफ

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

Premsons Motor

MARUTI SUZUKI

ग्राहक देवो भवः

NEW CAR SHOWROOMS

ARENA KANKE ROAD, RANCHI	-	P: 93081 11111
ARENA BARIATU ROAD, RANCHI	-	P: 93082 12121
NEXA MAIN ROAD, RANCHI	-	P: 96088 00400
NEXA BARIATU ROAD, RANCHI	-	P: 95550 47047
NEXA HAZARIBAGH CENTRAL	-	P: 98323 83838
NEXA DEOGHAR CENTRAL	-	P: 92629 91212
ARENA DALTONGANJ	-	P: 93048 07309
ARENA GUMLA	-	P: 93048 07323

RURAL OUTLETS

KHUNTI	-	P: 93048 07329
SIMDEGA	-	P: 93048 07323
GARHWA	-	P: 93868 95721
SILLI	-	P: 93862 56841
BUNDU	-	P: 93862 56841
ORMANJHI	-	P: 93048 07329
LATEHAR	-	P: 93048 07323

TRUE VALUE (Pre-Owned Cars)

(We buy & sell cars of all brands & makes)

TRUE VALUE	KANKE ROAD, RANCHI	P: 62092 99910
TRUE VALUE	BIRSA CHOWK, RANCHI	P: 76771 77704
TRUE VALUE	KOKAR CHOWK, RANCHI	P: 62037 50004
TRUE VALUE	PUNDAG, RANCHI	P: 92628 99010

11 WORKSHOPS ACROSS JHARKHAND

(Centralized Service Number 909 8400 400)

- LOWER CHUTIA NAMKUM INDUSTRIAL ESTATE
- TUPUDANA INDUSTRIAL HATIA
- KOKAR INDUSTRIAL AREA
- KANKE ROAD
- BARIATU
- DALTONGANJ
- HAZARIBAGH
- DEOGHAR
- GUMLA
- GARWAH
- KHUNTI

Premsons Earthmovers

Authorised JCB Dealership

(A Unit of Premsons Motor Udyog Pvt. Ltd.)

JCB

RANCHI P: 6287242422 | JAMSHEDPUR P: 6287242425
KODERMA P: 6287242454 | HAZARIBAGH P: 6287242461
DALTONGANJ P: 6287242464

Premsons Motor

(Authorised Ather E-Scooter Dealership)

ATHER

A PREMSONS GROUP CSR INITIATIVE

DAWAI DOST BRANDED GENERIC MEDICINES

दवाई दोस्त

(GENERIC MEDICINE CHARITY SHOPS)

UPTO **85% DISCOUNT**

P : 76778 07777

www.dawaidost.co.in

CENTRAL BOARD OF
SECONDARY EDUCATION

BIRLA PUBLIC SCHOOL
MINDS ON WINGS
KISHANGARH

A Birla education trust, Pilani Institution

BIRLA PUBLIC SCHOOL

KISHANGARH - AJMER (RAJ.)

www.bisk.edu.in

KNOWLEDGE - TRADITION - DISCIPLINE

Ranked as

02

CO-ED Boarding
School in Rajasthan

- English medium co-educational premier residential school for boys and girls.
- Efficient, qualified and trained faculty at par with the best in the country.
- Well-equipped science labs and a state of the art Design & Technology lab.
- Superb sports facilities with specialized Coaches for all sports.
- Excellent pastoral care with separate A/C hostels for boys and girls.

ADMISSION OPEN

FOR GRADE V-IX & XI · 2023-24

Address : Milestone 82, Jaipur-Ajmer Highway (NH-8), Kishangarh, Ajmer-Rajasthan

Contact : +91 92510 28311/301 Email : admission@bisk.edu.in

L K SINGHANIA EDUCATION CENTRE

Gotan, Dist. Nagaur, Rajasthan, INDIA

10+2 CBSE Affiliated Residential School for Boys & Girls

AFS Intercultural Programs India

ROUND SQUARE MEMBER SCHOOL

Ranked No.1 in Rajasthan & No.5 in India in the category of 'Top 20 Day-Cum-Boarding Schools' in a survey conducted by Educationtoday.co

ADMISSION OPEN
For Classes I to IX & XI
Session 2023-24

Distinctive Features

- 250 acres of beautifully landscaped campus
- Around 1000 boarders from different parts of the country
- Trained committed teachers
- State-of-the-art Laboratories and Libraries
- Absolute homely boarding facilities for students
- Air-conditioned classrooms and dining halls
- World- class sports facilities for indoor and outdoor games
- Purely hygienic vegetarian mess facility with pure cow milk
- Go-karting facility
- MIG-23 Airframe is set up in the School Campus, commemorating the Indian martyrs and infusing flag-waving fondness amongst the youth
- 100 bed dispensary with all modern medical equipments along with Pathology lab for special test like Vitamin D3, Thyroid etc.
- School's own Dairy, RO Water Plant, Bakery, Agr.farm & Laundry
- ISO 9001, 14001 & 22000 Certified by LRQA, U.K.
- Recipient of British Council International School Award (ISA) 2017 - 2020
- Member IPSC & Participating Institution in the UNESCO, ASP Net
- Olympic size fully roofed and protected all-weather swimming pool
- Entire campus is under surveillance with CCTV cameras

27 Jan., 2023
BERHAMPORE
THE FEM

28-29 Jan., 2023
KOLKATTA
THE SAMILTON

31 Jan., 2023
DEOGHAR
IMPERIAL HEIGHTS

01 Feb., 2023
GIRIDIH
HOTEL ORBITZ

03 Feb., 2023
RANCHI
THE RASO

For above admission centres contact :
Mr. R K Mahapatra
9414586847
Mr. Biplab Agasty
9602414050

Call us at:
01591-231022, 231077
+91 9413427404 / +91 9784594396

fax: 01591-231075
email: info@lksec.org

www.lksec.org
/lksecgotan

Sponsored by:
JKCement
J K WHITE CEMENT WORKS, GOTAN
(ISO-9001, ISO-14001, ISO-45001, ISO-50001 & SA-8000 Certified)
WhiteMax
Totally Committed to Product Excellence, Customers' Service and Social Responsibilities

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

4बी, डकबैक हाउस, 41, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-700017
टेलीफोनः (033) 4004 4089, ईमेलः aimf1935@gmail.com
वेवसाइट: www.marwarisammelan.in

88वाँ स्थापना दिवस समारोह

(सम्मान समारोह व सांस्कृतिक कार्यक्रम)

दिनांक : रविवार, 25 दिसम्बर 2022 • सुबह 10 बजे

स्थान : जी.डी. बिड़ला सभागार, बालीगंज, कोलकाता

मुख्य अतिथि	:	**श्री सुजीत बोस** माननीय दमकलमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पश्चिम बंग सरकार
सम्मानित अतिथि	:	**श्रीमती अमला रुइया** (समाज सेविका) अध्यक्षा, आकार चैरिटेबल ट्रस्ट, महाराष्ट्र
मुख्य वक्ता	:	**श्री सीताराम शर्मा** मानद कंसुल जनरल, बेलारुस गणराज्य पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
समारोह का सभापतित्व	:	**श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
सम्मान	:	**मारवाड़ी सम्मेलन राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान-2021** (रामनिवास आशारानी लाखोटिया) जल संचयन एवं संरक्षण के क्षेत्र में अद्वितीय अवदान कर समाज का नाम रोशन करने हेतु **श्रीमती अमला रुइया** को।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध **मंत्र इवेन्ट्ज** द्वारा **युवा कलाकार श्री आलोक डागा** के कुशल निर्देशन में राजस्थान – हरियाणा के मनमोहक लोक गीतों की पारम्परिक वेशभूषा में संगीत एवं नृत्य के साथ अनुपम-अद्भुत प्रस्तुति (एलईडी स्क्रीन के साथ) ***'धोरां रो म्हारो देस'***

आपकी सपरिवार उपस्थिति सादर प्रार्थित है

संतोष सराफ
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
स्वागताध्यक्ष

भानीराम सुरेका, पवन गोयनका,
पवन सुरेका, अशोक जालान,
श्याम सुन्दर हरलालका, विजय लोहिया
राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण

संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री

गोपाल अग्रवाल, सुदेश अग्रवाल
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

बसंत मित्तल
राष्ट्रीय संगठन मंत्री

दामोदर बिदावतका
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

Telephone:+91-33-40044089 Website: marwarisammelan.in E-mail:aimf1935@gmail.com

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला), 41, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-700017
4B, Duckback House (4th Floor) 41, Shakespeare Sarani, Kolkata-700017

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

- १९३५ में अखिल भारतीय स्तर पर स्थापित प्रवासी मारवाड़ियो की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था।
- सदस्यता : राजस्थान, हरियाणा, मालवा एवं उनके निकटवर्ती भू-भागों के रहन-सहन, भाषा एवं संस्कृति वाले सभी व्यक्ति जो स्वयं अथवा उनके पूर्वज देश या विदेश के किसी भाग में बसे हो – सम्मेलन के सदस्य हो सकते हैं।
- ब्रिटिश शासन द्वारा प्रवासी मारवाड़ियों को मतदान के अधिकार से वंचित किये जाने पर हुई थी संस्था की स्थापना।
- इसके खिलाफ हुए आन्दोलन से प्रवासी मारवाड़ियों को मिला था मतदान का अधिकार।
- बाद में सम्मेलन ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ शुरु किया आन्दोलन।
- दहेज प्रथा, घूँघट प्रथा का किया विरोध, विधवा विवाह, लड़कियों की उच्च शिक्षा के पक्ष में सामाजिक चेतना जगाई।
- खत्म हुई घूँघट प्रथा, होने लगे विधवा विवाह, लड़कियों को दी जाने लगी उच्च शिक्षा तथा दहेज प्रथा पर लगा अंकुश।
- समय परिवर्तन के साथ समाज में पनपी नई बुराइयों एवं कुरीतियों के खिलाफ शुरु की वैचारिक लड़ाई।
- प्रवासियों की सामाजिक सुरक्षा हेतु पूर्वोत्तर, ओडिशा सहित अन्य जगहों पर संगठित होकर किया आंदोलन, पाई सफलता।

कार्य एवं उद्देश्य

- समाज का सर्वांगीण विकास करना।
- बिना धार्मिक या जातिगत भेदभाव के अभावग्रस्त एवं पिछड़े वर्ग के लोगों के आर्थिक, शैक्षणिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विकास हेतु प्रयत्न।
- उच्च शिक्षा के लिये समाज के बच्चों को आर्थिक अनुदान (संचित धन के ब्याज से)
- सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों के उन्मूलन के तहत विवाह समारोह में मद्यपान, बारात में परिवार की महिलाओं द्वारा सड़कों पर नृत्य, बढ़ते तलाक, घटता बुजुर्गों का सम्मान, टूटते परिवार, दिखावा व आड़म्बर, महँगे शादी कार्ड, फिजूलखर्ची जैसी अनेक सामाजिक बुराइयों एवं ज्वलन्त समस्याओं पर विचार गोष्ठियों के माध्यम से समाज में जागृति लाने का प्रयास।
- समाज में राजनैतिक चेतना जागृत करने हेतु कार्यकर्ता सम्मेलन, गोष्ठियों का आयोजन।
- आपसी विवादों के निपटारे के लिये पंचायतें बनाना।
- कोलकाता में मारवाड़ी सम्मेलन भवन का निर्माण।
- सामाजिक एकजुटता के तहत समाज की सभी संस्थाओं को एक मंच पर लाने का प्रयास।
- समाज के शिक्षित बच्चों को नौकरी दिलाने के लिए रोजगार सहायता।
- समाज के बच्चों के विवाह सुनिश्चित करवाने के लिए वैवाहिक डाटा बैंक।
- मारवाड़ी भाषा, साहित्य व संस्कृति के विकास, प्रचार-प्रसार हेतु बहुविध प्रयास।
- होली-दिवाली, सम्मेलन स्थापना दिवस आदि विभिन्न अवसरों पर आयोजन कर आपसी मेल-मिलाप को बढ़ाना।
- पूरे देश में १७ प्रादेशिक शाखाओं (पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, पूर्वोत्तर, दिल्ली, महाराष्ट्र, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडू, कर्नाटक, गुजरात, तेलंगाना, केरल) एवं इन राज्यों की करीब ३६० शाखाओं के माध्यम से समाज सुधार, समाज सशक्तिकरण एवं सेवा कार्य।
- सम्मेलन के मासिक मुखपत्र समाज विकास का प्रकाशन।
- बच्चों में संस्कार-संस्कृति-चेतना जागृति हेतु गोष्ठियाँ।
- प्रान्तों द्वारा शिक्षा कोष के माध्यम से समाज के बच्चों को आर्थिक सहायता।
- समाजसेवा, मारवाड़ी भाषा के विकास व प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले साहित्यकारों तथा मारवाड़ी व्यक्तित्व का सम्मान।
- संगठित समाज, सशक्त आवाज के तहत प्रत्येक मारवाड़ी घर से कम से कम एक सदस्य बनाने की दिशा में प्रयास।
- समाज के लोगों को मतदान करने तथा राजनीति में सक्रिय बनाने के लिए जागरूकता एवं प्रोत्साहन।
- प्रान्तों व शाखाओं द्वारा समाज के मेधावी बच्चों का सम्मान।
- प्राकृतिक आपदा की स्थिति में प्रभावित लोगों की सहायता।
- सामाजिक सुरक्षा के तहत समाज की आवाज को केन्द्र एवं राज्य सरकारों के साथ-साथ प्रशासनिक हलकों तक पहुँचाना।
- अन्य ऐसे कार्य, जो समाज व देश की उन्नित तथा प्रगति में सहायक हों।

संस्कारों की नाव पर समय की धार पर

समाज विकास

◆ दिसम्बर २०२२ ◆ वर्ष ७३ ◆ अंक १२
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **८८वाँ स्थापना दिवस समारोह का विवरण**	५
● **मारवाड़ी सम्मेलन का कार्य एवं उद्देश्य**	६
● **विगत अधिवेशन और पदाधिकारी**	८
● **सन्देश**	९
● **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति का विवरण**	१०
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** सम्मेलन : शताब्दी की ओर बढ़ते कदम	११-१२
● **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** सम्मेलन का स्थापना दिवस - गौरवशाली इतिहास एवं सुनहरा भविष्य	१३-१४
● **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति का बैठक**	२०-२१
● **आलेख : प्रह्लाद राय अगरवाला - विजय कुमार लोहिया**	२३
भानीराम सुरेका – दूसरे समाजों को प्रेरित करें	२५
अशोक जालान – मृत्योपरांत देह दान की घोषणा से संबंधित खुला इच्छापत्र	२६
डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका – सम्मेलन आठ दशक पूर्व और आज	२९
● **राष्ट्रीय महामंत्री का प्रतिवेदन : संजय हरलालका**	३१-३४
● **संजय हरलालका, ओमप्रकाश खण्डेलवाल, सुभाष अग्रवाल**	४३-४७
● **सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों के उद्‌गार**	४९-५६
● **प्रादेशिक समाचार** – झारखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, गुजरात, बिहार, पूर्वोत्तर	५७-६७
● सम्मेलन - एक विहंगम परिचय	६८-७०
● **कहानी** : पारस पत्थर - **चेतन स्वामी**	७१-७३
● **आलेख** : सदा सुहागण राजियै रा सोरठा – **केसरीकांत शर्मा 'केसरी'**	७४
मायड़ ने मानीता क्यूं नी? – **डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत**	७५-७६
● **मारवाड़ी के जरिए स्टार बनी कौशल्या चौधरी**	७७
● **स्वास्थ्य ही धन है**	७८-८८
● **बाल श्रमिक – शिव कुमार फोगला**	८९
● **देव-स्तुति – डॉ. जुगल किशोर सर्राफ**	९०

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : ४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७, फोन : ०३३-४००४ ४०८९
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com ◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के विगत अधिवेशन और पदाधिकारी

कार्यकाल	स्थान	अध्यक्ष	महामंत्री
१९३५-१९३८	कोलकाता	स्व. रायबहादुर रामदेव चोखानी (कोलकाता)	स्व. भूरामल अग्रवाल
१९३८-१९४०	कोलकाता	स्व. पद्मपत सिंघानिया (कानपुर)	स्व. ईश्वरदास जालान
१९४०-१९४१	कानपुर	स्व. बद्रीदास गोयनका (कोलकाता)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
१९४१-१९४३	भागलपुर	स्व. रामदेव पोद्दार (मुम्बई)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
१९४३-१९४७	दिल्ली	स्व. रामगोपाल मोहता (बीकानेर)	स्व. बजरंगलाल लाठ
१९४७-१९५४	मुम्बई	स्व. बृजलाल बियाणी (अकोला)	स्व. रामेश्वरलाल केजड़ीवाल
१९५४-१९६२	कोलकाता	स्व. सेठ गोविन्ददास मालपानी (जबलपुर)	स्व. नन्दकिशोर जालान
१९६२-१९६६	कोलकाता	स्व. गजाधर सोमानी (मुम्बई)	स्व. रघुनाथ प्रसाद खेतान
१९६६-१९७४	पूना	स्व. रामेश्वरलाल टांटिया (कोलकाता)	स्व. रामकृष्ण सरावगी स्व. दीपचन्द नाहटा
१९७४-१९७६	राँची	स्व. भंवरमल सिंघी (कोलकाता)	स्व. नन्दकिशोर जालान
१९७६-१९७९	हैदराबाद	स्व. भंवरमल सिंघी (कोलकाता)	स्व. नन्दकिशोर जालान
१९७९-१९८२	मुम्बई	स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार (मुम्बई)	स्व. बजरंगलाल जाजू
१९८२-१९८६	जमशेदपुर	स्व. नन्दकिशोर जालान	स्व. बजरंगलाल जाजू श्री रतन लाल शाह
१९८६-१९८९	कानपुर	स्व. हरिशंकर सिंघानिया (दिल्ली)	श्री रतन लाल शाह
१९८९-१९८९	राँची	स्व. रामकृष्ण सरावगी (कोलकाता)	स्व. दुलीचंद अग्रवाल
१९८९-१९९३		स्व. हनुमान प्रसाद सरावगी (कार्यवाहक अध्यक्ष)	
१९९३-१९९७	दिल्ली	स्व. नन्दकिशोर जालान (कोलकाता)	स्व. दीपचंद नाहटा
१९९७-२००१	हैदराबाद	स्व. नन्दकिशोर जालान (कोलकाता)	श्री सीताराम शर्मा
२००१-२००४	कानपुर	स्व. मोहनलाल तुलस्यान (कोलकाता)	श्री सीताराम शर्मा
२००४-२००६	मुम्बई	स्व. मोहनलाल तुलस्यान (कोलकाता)	श्री भानीराम सुरेका
२००६-२००८	भुवनेश्वर	श्री सीताराम शर्मा (कोलकाता)	श्री रामअवतार पोद्दार
२००८-२०१०	दिल्ली	श्री नन्दलाल रुँगटा (चाईबासा)	श्री रामअवतार पोद्दार
२०१०-२०१३	पटना	डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया (कोलकाता)	श्री संतोष सराफ
२०१३-२०१६	गुवाहाटी	श्री रामअवतार पोद्दार (कोलकाता)	श्री शिव कुमार लोहिया
२०१६-२०१८	कोलकाता	श्री प्रह्लाद राय अगरवाला (कोलकाता)	श्री शिव कुमार लोहिया
२०१८-२०२०	वाराणसी	श्री संतोष सराफ (कोलकाता)	श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला
२०२०-	राँची	श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया (राँची)	श्री संजय हरलालका

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग
भारत सरकार
Minister
Road Transport and Highways
Government of India

MESSAGE

I am glad to know that the All India Marwari Federation is organising its 88th Anniversary of Foundation at the G.D. Birla Sabhagar, Ballyganj, Kolkata on 25.12.2022.

I am also happy to note that All India Marwari Federation is actively engaged in social reforms, national integration and development, and is doing yeoman service against dowry, ostentation, purda-pratha, and espousing and promoting widow marriages, education for the female child, and has made immense contributions towards achieving these goals.

On this important occasion, I have great pleasure in conveying my greetings for the above programme to be a grand success. I also convey my best wishes to the organisers for their unstinted efforts and endeavour to perform the above great services, meeting various challenges.

(Nitin Gadkari)

Date: 21st December, 2022
Place: New Delhi

Room No. 501, Transport Bhawan, 1, Sansad Marg, New Delhi – 110 001, Tel.: 011-23710121, 23711252 (O), 23719023 (F)
E-mail: nitin.gadkari@nic.in; website-www.morth.nic.in

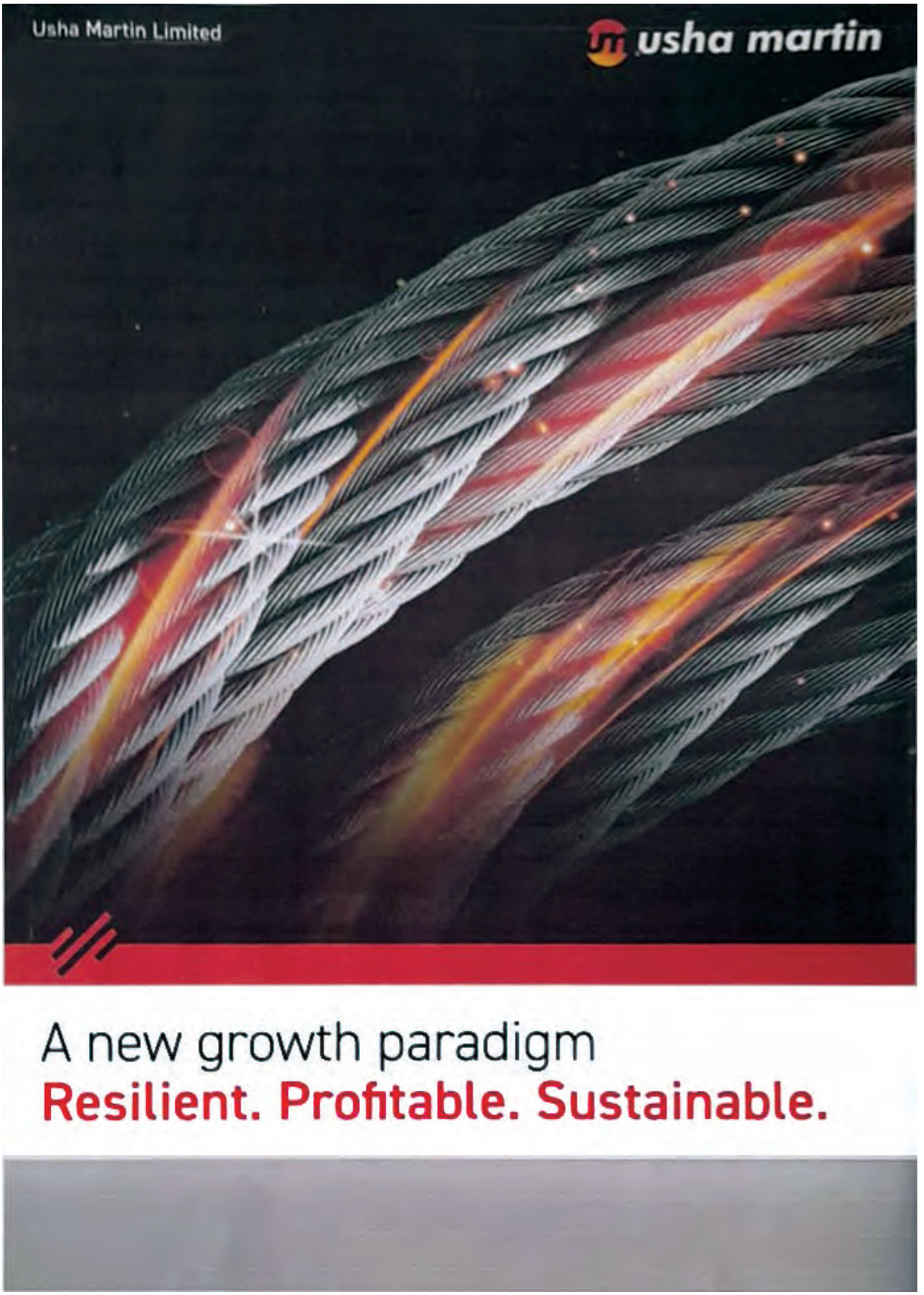
Usha Martin Limited
usha martin
A new growth paradigm
Resilient. Profitable. Sustainable.

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम./सन्देश/ओएसडीएफ/2022
जयपुर, 30 नवम्बर, 2022

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता के 88वें स्थापना दिवस समारोह का कोलकाता में 25 दिसम्बर, 2022 को आयोजन और मासिक पत्रिका "समाज विकास" के विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रवासी राजस्थानियों के देशव्यापी संगठन अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का स्थापना दिवस समारोह अपने आप में महत्वपूर्ण है। इससे इस संगठन की दीर्घकालीन सेवाओं, उपलब्धियों और भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श का मार्ग प्रशस्त होता है।

आशा है संस्था के स्थापना दिवस के कार्यक्रम प्रदेश और देश के औद्योगिक विकास, समृद्ध संस्कृति, कलाओं, लोक विरासत और विशिष्टताओं को व्यापक बनाने की दृष्टि से सार्थक सिद्ध होंगे।

मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों और सहयोगियों को 88वें स्थापना दिवस की बधाई देते हुए इसके सभी कार्यक्रमों की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

श्री गोवर्द्धन प्रसाद गाड़ोदिया राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन,
4-बी डकबैक हाउस, चौथा तल्ला,
41 शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता-700017
Emai :aimf1935@gmail.com
मो.094315 82989

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति

पदाधिकारीगण

श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया (राँची), राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री भानीराम सुरेका (कोलकाता), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पवन कुमार गोयनका (दिल्ली), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री अशोक कुमार जालान (सम्बलपूर), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री संजय हरलालका (कोलकाता), राष्ट्रीय महामंत्री
श्री सुदेश कुमार अग्रवाल (कोलकाता), राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका (कोलकाता) राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री श्याम सुन्दर हरलालका (गुवाहाटी), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पवन कुमार सुरेका (दरभंगा), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री विजय कुमार लोहिया (चेन्नई), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री गोपाल अग्रवाल (कोलकाता), राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री बसंत मित्तल (राँची), राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सदस्यगण

श्री आनंद कुमार अग्रवाल (कोलकाता)
श्री अशोक कुमार तोदी (कोलकाता)
श्री बाबूलाल धनानिया (कोलकाता)
श्री विनय सरावगी (राँची)
श्री दीपक जालान (कोलकाता)
श्री दिनेश कुमार जैन (कोलकाता)
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा (चेन्नई)
श्री कैलाशपति तोदी (हावड़ा)
श्री नंदलाल सिंघानिया (कोलकाता)
श्री राज कुमार केडिया (राँची)
श्री रतन लाल बंका (राँची)
श्री सज्जन भजनका (कोलकाता)
श्री सुशील कुमार अग्रवाल (धनानिया) (कोलकाता)
श्री अरुण कुमार सुरेका (कोलकाता)
श्री आत्माराम सोंथलिया (कोलकाता)
श्री बनवारीलाल शर्मा 'सोती' (कोलकाता)
श्री बिनोद तोदी (पटना)
श्री देव किशन मोहता (कोलकाता)
श्री हरि प्रसाद बुधिया (कोलकाता)
श्री जुगल किशोर सराफ (कोलकाता)
श्री मधुसूदन सीकरिया (गुवाहाटी)
श्री नारायण प्रसाद डालमिया (कोलकाता)
श्री राज कुमार मिश्रा (दिल्ली)
श्री रविन्द्र चमड़िया (कोलकाता)
श्री संदीप फोगला (कोलकाता)
श्रीमती सुषमा अग्रवाल (पटना)
श्री अशोक कुमार गुप्ता (हावड़ा)
श्री अतुल चुड़ीवाल (कोलकाता)
श्री भागचंद पोद्दार (राँची)
श्री विश्वनाथ भुवालका (कोलकाता)
श्री दीनदयाल गुप्ता (कोलकाता)
श्री जगदीश प्रसाद चौधरी (कोलकाता)
श्री जुगल किशोर जाजोदिया (कोलकाता)
श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल (कोलकाता)
श्री पवन कुमार जालान (कोलकाता)
श्री रमेश कुमार बूबना (कोलकाता)
श्री सजन कुमार बंसल (कोलकाता)
श्री श्रीकुमार बाँगड़ (कोलकाता)
श्री विवेक गुप्ता (कोलकाता)

स्थायी विशिष्ट आमंत्रित

श्री अनिल कुमार जाजोदिया (वाराणसी)
श्री भरत कुमार जालान (कोलकाता)
श्री गौरी शंकर अग्रवाल (बलांगीर)
श्री जोधराज लड्ढ़ा (कोलकाता)
श्री केदार नाथ गुप्ता (कोलकाता)
श्रीमती ममता बिनानी (कोलकाता)
श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला (पटना)
श्री ओम प्रकाश प्रणव (राँची)
श्री राजकुमार तिवाड़ी (गुवाहाटी)
श्री रतन लाल अग्रवाल (कोलकाता)
श्री शिव कुमार अग्रवाल (कोचीन)
श्री अशोक कुमार जैन (गिरिडीह)
श्री ब्रह्मानंद अगरवाला (कोलकाता)
श्री गोविन्द सारदा (कोलकाता)
श्री कमल कुमार दुग्गड़ (कोलकाता)
श्री किशन गोपाल मोहता (कोलकाता)
श्री मनीष डोकानिया (कोलकाता)
श्री निर्मल कुमार काबरा (जमशेदपुर)
श्री प्रेमचंद सुरेलिया (हावड़ा)
श्री रमेश कुमार सरावगी (कोलकाता)
श्री संदीप कुमार सिंघल (सूरत)
श्री उमेश शाह (पू. सिंहभूम)
श्री बनवारीलाल मित्तल (कोलकाता)
श्री धरमचंद जैन 'रारा' (राँची)
श्री जगदीश गोलपुरिया (बरगढ़)
श्री कमल नोपानी (पटना)
श्री किशन लाल चौधरी (विशाखापत्तनम)
श्री मुरारी लाल खेतान (कोलकाता)
श्री ओम प्रकाश पोद्दार (बैंगलोर)
श्रीमती पुष्पा भुवालका (राँची)
श्री रंजीत कुमार जालान (हरिद्वार)
श्री संवर धनानिया (कोलकाता)

पदेन सदस्य

श्री चांदमल अग्रवाल (विशाखापतनम)
श्री पोडेश्वर पुरोहित (विशाखापतनम)
श्री महेश जालान (पटना)
श्री जुगल किशोर अग्रवाल (सुपौल)
श्री बसंत कुमार मित्तल (राँची)
श्री रवि शंकर शर्मा (राँची)
श्री राज कुमार पुरोहित (महाराष्ट्र)
श्री निकेश गुप्ता (महाराष्ट्र)
श्री रमेश कुमार बंग (हैदराबाद)
श्री रामप्रकाश भंडारी (हैदराबाद)
श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल (गुवाहाटी)
श्री अशोक कुमार अग्रवाल (गुवाहाटी)
श्री लक्ष्मीपत भुतोड़ीया (दिल्ली)
श्री ओम प्रकाश अग्रवाल (दिल्ली)
श्री गोविन्द अग्रवाल (झारसुगुड़ा)
श्री जयदयाल अग्रवाल (झारसुगुड़ा)
श्री संतोष खेतान (हरिद्वार)
श्री संजय जाजोदिया (हरिद्वार)
श्री गोकुल चंद बजाज (सूरत)
श्री राहुल अग्रवाल (सूरत)
श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया (रायपुर)
श्री अमर बंसल (रायपुर)
श्री उमाशंकर अग्रवाल (वाराणसी)
श्री विजय कुमार लोहिया (चेन्नई)
श्री मुरारी लाल सोंथलिया (चेन्नई)
श्री सुभाष अग्रवाल (बेंगलुरु)
श्री शिव कुमार टेकरीवाल (बेंगलुरु)
श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल (कोचीन)
श्री भावेश चांडक (कोचीन)
श्री विजय कुमार संकलेचा (जबलपूर)

श्रीमती नीरा बथवाल, राष्ट्रीय अध्यक्षा, मारवाड़ी महिला सम्मेलन
श्री कपिल लाखोटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष, मारवाड़ी युवा मंच
श्रीमती रूपा अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री, मारवाड़ी महिला सम्मेलन
श्री प्रशांत खण्डेलिया, राष्ट्रीय महामंत्री, मारवाड़ी युवा मंच

सम्मेलन : शताब्दी की ओर बढ़ते कदम

सन् १९३५ में भारत विधेयक का प्रस्ताव ब्रिटिश संसद में पेश होने वाला था। उस समय देश के विभिन्न प्रांतों में अन्यान्य प्रांतो से बसे लोगों को यह आशंका होने लगी कि कहीं ऐसा न हो इस विधेयक के अंतर्गत एक प्रांत से दूसरे प्रांत में आकर बसे वाले लोगो का अधिकार छीन लिया जाए। मारवाड़ी समाज के लिये यह प्रश्न सर्वाधिक महत्व का था, क्योंकि बहुत बड़ी संख्या में राजस्थान से निकल कर इस समाज के लोग पूरे देश के सभी भागों में बस गये थे। इस आशंका का संज्ञान लेते हुए समाज के सुविज्ञ लोग, जिनमें स्वर्गीय रामदेव चोखानी एवं स्वर्गीय ईश्वर दास जालान मुख्य रूप से शामिल थे, समाज का एक मंच बनाने की पहल की। इसके तहत अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की नींव पड़ी। सम्मेलन के दूरदर्शितापूर्ण प्रयासों से देश के प्रत्येक नागरिक को देश के किसी भी भाग मे बसने एवं काम करने का अधिकार इस विधेयक में स्वीकार किया गया। सम्मेलन की यह बड़ी सफलता थी। उस समय भी अग्रवाल ब्राह्मण, माहेश्वरी, ओसवाल सरावगी, जैन आदि जाति के लोगो की विभिन्न संस्थाएँ थी, पर उनका दृष्टिकोण उतना व्यापक नहीं था। उस समय संगठन को व्यापक एवं दृढ़ करने के लिये सम्मेलन ने उन मुद्दों को अपने उद्देश्य में नहीं रखा जिसमें विभिन्न जातियों मे परम्परा – भिन्नता थी एवं सनातनी एवं सुधारकों की श्रेणी के लोगो के विचारों में विभेद था। इस प्रकार सम्मेलन ने संगठन, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक विकास और राजनीतिक जागरुकता का कार्यक्रम अपनाया। शनैः-शनैः संगठन व्यापक हुआ। प्रांतों में प्रादेशिक एवं जिला समितियाँ गठित हुई। जगह जगह शाखाओं की स्थापना हुई। आजादी के पहले तक सम्मेलन ने एक काम ऐसा किया जो कि अत्यंत महत्वपूर्ण था। प्रान्तीयता के जहर को काबू में लाया गया। अप्रैल १९४७ में बम्बई में छठा अधिवेशन आयोजित हुआ। राजनीति में ऊँचा स्थान रखने वाले बृजलाल जी बियानी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उनको "बरार केसरी" कहा जाता था। उनकी अध्यक्षता में सम्मेलन का ध्यान समाज के सर्वांगीण विकास की ओर गया। यह अधिवेशन अनेक दृष्टि से सम्मेलन के इतिहास मे एक नया मोड़ लेकर आया। सम्मेलन का ध्यान राजनीति की ओर भी गया। सारे देश मे मारवाड़ी समाज की जो स्थिति थी उस पर असंतोष प्रकट किया गया। जिन प्रस्तावों पर अधिक से अधिक जोर दिया गया उनमें पर्दा प्रथा निवारण, महिलाओं का उत्थान, रियासतों में उत्तरदायी शासन गठन की व्यवस्था, राजस्थान प्रांत का निर्माण, दहेज का विरोध शामिल किया गया। इसी अधिवेशन में समरसता की बात शामिल की गई। अधिवेशन में मारवाड़ियों से अनुरोध किया कि राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में वे सक्रिय भूमिका निभाये और कोई भी ऐसा क्षेत्र ना हो, जिसमें मारवाड़ी समाज के लोग शामिल न हों। व्यापार-व्यवसाय के अलावा सरकारी नौकरियाँ, पढ़ाई-लिखाई के कार्यों में, विलायत जाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दें। उसके बाद ही कलकत्ता में पर्दा प्रथा के विरुद्ध सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। देश के अन्य भागों में भी उस आंदोलन को प्रभावी बनाने के लिये हर संभव प्रयास किये गए। नई चेतना के तहत बालिकाओं के लिये नये विद्यालय एवं महाविद्यालय खोले गये। उपरोक्त अधिवेशन में बियानी जी ने कहा – हम जिस प्रांत में रहते हैं वहाँ के होकर रहें और वहाँ के लोगों के साथ हमारा केवल व्यावसायिक और उद्योग धन्धो का ही संबंध न रहे, बल्कि उस प्रांत के मूल निवासियों के साथ हमारी एकता कायम हो एवं हम उनके सुख-दुःख मे शामिल हों। प्रत्येक प्रकार के उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य बोध में हम उनका साथ दें।

सम्मेलन के स्थापना काल से ही संस्थापकों ने सम्मेलन के लिये अन्य सामाजिक संगठनों से हटकर एक विशिष्ट पथ चुना था। इसका ध्येय एवं लक्ष्य समग्र समाज को एक मंच पर लाकर उनका सशक्त प्रतिनिधि संस्था के रूप में काम करने का था। स्थापना के प्रथम दो से तीन दशकों में सम्मेलन के प्रयासो से समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन घटित हूआ। इस संघर्ष में बदलाव समर्थक कार्यकर्त्ताओं को उपहास, लांछन, गाली-गलौज, मारपीट एवं यहा तक कि कहीं-कहीं लाठियों की मार भी सहनी पड़ी। इन कार्यों में समाज के समर्पित युवाओं ने निःस्वार्थ भाव से अपनी सेवायें अर्पित की, जिसका लाभ पूरे, समाज को सदा सदा के लिये प्राप्त होता आया है एवं प्राप्त होता रहेगा। इस संदर्भ में मैं पूर्वजों द्वारा घोषित सम्मेलन के ध्येय वाक्य "**म्हारो लक्ष्य – राष्ट्र री प्रगति**" की ओर सुधि पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा। यह एक अत्यंत ही सोची समझी महत्वपूर्ण उद्घोष है। हमारा दायरा एवं उद्देश्य व्यापक हैं। प्रगति एक गतिशील अर्थ की द्योतक है। नये विचार, नयी सोच, नये जोश, नई उर्जा से ही नई दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। उसके बिना प्रगति असंभव है। परिस्थितियों में निरंतर परिमार्जन करते हुए निरंतर आगे बढ़ते जाना ही प्रगति का पर्याय है। समाज की सभी सामाजिक संस्थाओं में सम्मेलन का विशिष्ट स्थान है, क्योंकि इसने समाज को नई दिशा दी है, समाज की आवश्यकताओं के प्रति जागरुक है। सम्मेलन द्वारा निष्पादित कार्यों से समाज मे आमूल चूल परिवर्तन घटित हुआ है। समाज सदा सदा के लिये बेहतरी की ओर मुड़ गया। अतएव, हम समझ सकते है कि सम्मेलन ने एक मेडिकल सर्जन का कार्य किया, जिसका कोई विकल्प नहीं है। हमारे रिसते हुए घावों को मखमल से ढककर मुस्कराते हुई अपनी छवि पेश करते रहेंगे तो एक दिन वह नासूर हमें मजबूर कर देगा। समाज में आज आड़म्बर, दिखावा का दानव अपने पंख फैला रहा है। संस्कार, संस्कृति नेपथ्य में जा रहे है। मातृभाषा मारवाड़ी की सरे आम अवहेलना हो रही है। घर मे, समाज मे बड़े-बुजुर्गो की उपेक्षा हो रही है। पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों में तनाव बढ़ रहे है। विवाह बंधन अब संस्कार नहीं होकर समझौतों में परिवर्तित हो रहे हैं। यत्र तत्र सर्वत्र धन का प्रभाव बढ़ रहा है। एक ही लक्ष्य की ओर हम अग्रसर हो रहे है – धनोपार्जन। कुछ अल्पसंख्यक लोग, जो समाज हित की बात सोचते है, वे असमंजस मे हैं। हमारे सोच प्रदूषित हो गये है। समाज प्रदुषण के गिरफ्त मे हैं। जो लोग इनमे लिप्त हैं वे भी खुश नही, संतुष्ट

नहीं है। खुश रह नहीं सकते। कहीं न कहीं अल्पज्ञता जनित मजबूरी है जिसके कारण वे ऐसे सोच के अधीन रहते हैं। कहा भी गया है जरुरतें तो गरीब की भी पूरी हो जाती है, ख्वाहिश तो राजा की भी पूरी नही होती।

ऐसी स्थिति में सम्मेलन जैसी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि राष्ट्रीय संस्था, जिसका इतना गौरवमय इतिहास है, जिसने अतीत मे भी समाज को सही दिशा प्रदान की है, जिसका उद्देश्य समाज का सर्वांगीण विकास है, जिसका ध्येय वाक्य "म्हारो लक्ष्य – राष्ट्र री प्रगति है", क्या वह अपने दायित्व एवं भूमिका का पालन किये बिना रह सकता है। विगत कुछ वर्षों में सम्मेलन के संगठन में और भी अधिक मजबूती आई है। समाजबंधु सम्मेलन की आवश्यकता एवं भूमिका के प्रति सजग हुए हैं। नये-नये प्रदेशो में शाखायें खुली है। पारम्परिक रूप से सम्मेलन बिहार, उड़ीसा, झारखंड, असम में मजबूत रहा है। इन प्रदेशों में समाज को संगठित करने में सम्मेलन ने अहम एवं मुख्य भूमिका निभाई हैं। इन प्रदेशों में सम्मेलन शाखाओं के माध्यम से गाँवों एवं छोटे-छोटे शहरों में भी अपने प्रभाव का विस्तार कर चुकी है। इनमे से कुछ स्थानों का दौरा करते हुए सम्मेलन के प्रभाव का मैं प्रत्यक्षदर्शी रहा हूँ। सम्मेलन की पहल के कारण मारवाड़ी समाज स्थानीय समाज से घुल मिलकर मैत्री भाव रखते है। भूतकाल की कड़वाहट शनैः-शनैः अब कम होती जा रही है। इसीलिये कहा जाता है कि सम्मेलन प्रांतों में बसता है। सम्मेलन का सही मुल्यांकन शाखाओं की गतिविधियो की जानकारी के बिना संभव नहीं है। सन् २०१५ के दौरान बरगढ़ से बलांगीर जाते हुए बीच में एक छोटे से गाँव में, समाज के कुल ३० घर ही थे वहाँ भी सम्मेलन सक्रिय था। सम्मेलन के सभी समाजबंधुओं की प्रतिबद्धता का अहसास आज भी मेरे मानस पटल पर अंकित है। इसी तरह बिहार, असम मे भी अनेक उसी प्रकार के अहसास अभी भी तरोताजा है। इन समाजबंधुओं को सम्मेलन के साथ जुड़कर एक भरोसे का अहसास होता है। सम्मेलन से इनको मार्गदर्शन की अपेक्षा रहती है ताकि सामाजिक दृष्टि से उनकी उन्नति हो। दोस्त, किताब, रास्ता और सोच गलत हो तो गुमराह कर देते हैं और सही हो तो जीवन बना देते हैं। सम्मेलन की यह पवित्र जिम्मेदारी है कि समाजबंधुओं को सही रास्ता दिखायें। कुछ लोगों को मैं कहते सुनता हूँ कि समाज सुधार की बात कोई नही सुनता, सेवाकार्यों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में मुझे उस समय की बात याद आती है जब पर्दा प्रथा एवं अन्य कुरीतियों के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ हुआ था। उस आंदोलन के विरोधी का उस समय कहना था कि सैंकड़ों वर्षों की प्रथा कैसे समाप्त हो सकती है। समाज के जुझारु कार्यकर्ताओं ने जब लगन, निष्ठा, समर्पण से असंभव को संभव बना दिया, तो वे लोग ही, जिन्होंने पहले शंका व्यक्ति की थी, कहने लगें आंधी को कौन रोक सकता है। समाज को आज भी एक आंधी की आवश्यकता है। समाज सम्मेलन की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। यह एक कटु सत्य है जो व्यक्ति सेवा भाव दर्शाते है एवं समाज की सेवा के महत्व का गुणगाण करते है, वे स्वयं या तो अपने ही घर मे उपेक्षा के शिकार होकर चुप रहने को वाध्य होते है, या स्वयं घर मे बुजुर्गो की उपेक्षा में लिप्त रहते हैं। घरो में वैमनस्य, असहिष्णुता एवं असमानता का बोलबाला है। बाहर में सब सदाचार का पाठ पढ़ाते नहीं अघाते। युवाओं के सामने घर मे बुजुर्गों की एक नहीं चलती। धन का इतना बोलबाला है कि जिसकी आयु अधिक है, उसकी नही चलती, जिसकी आय अधिक है उसकी चलती है। संस्कार-संस्कृति को तिलांजलि दी जा रही है। हालत यह है कि वर्तमान पीढ़ी के बाद मारवाड़ी भाषा बोलने वालों को ढूढ़ना पड़ेगा।

किसी भी समाज या राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी युवा होते हैं। एक युवा का जीवन सफल होने के साथ साथ सार्थक भी होना चाहिए। सार्थक जीवन के चार बिंदु हैं – शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संधान। इस संदर्भ में आज की परिस्थिति का जायजा बिना अधिक परिश्रम के ही मिल जायगा। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में सामाजिक गतिविधियों में शामिल होने का आह्वान किया था। इससे न केवल बेहतर समाज बनेगा बल्कि इससे युवाओ का व्यक्तिगत विकास भी होगा। स्वामी जी ने कहा था कि बाकी हर चीज की व्यवस्था हो जायगी, लेकिन सशक्त, मेहनती, आस्थावान युवा खड़े करना बहुत जरुरी है। हमें ऐसे विचारों को संजोना है जो व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण एवं चरित्र निर्माण कर सके। समाज निर्माण ही चरित्र निर्माण एवं व्यक्ति निर्माण का प्रतिफल है एवं सर्वोपरि भी है। गर्व से हम कह सकते है कि सम्मेलन ने समाज निर्माण करने की भूमिका बखूबी निभाई है। यही उसकी पहचान एवं विशिष्टता है। समाज के व्यापक हित में काम करने के उद्देश्य से उसकी स्थापना हुई थी। उसका ध्येय वाक्य भी हमें यही संदेश देता है। सांगठैनिक दृष्टि से सम्मेलन में जो मजबूती आई है, उसका विस्तार करना ही आवश्यक है ही। उससे भी अधिक जरुरी है कि जो वर्तमान संगठन है व्यापक समाज हित में उसकी दिशा निर्धारित हो। यह हर्ष का विषय है कि प्रांतीय स्तर में ऐसे समर्पित कार्यकर्ता हैं जो उचित मार्गदर्शन के तहत, अभीष्ट लक्ष्य हासिल करने में सक्षम है। इस विषय में चिंतन-मनन की आवश्यकता है। ऐसी कोई भी समस्या नहीं जिसका समाधान न हो। समस्या से अधिक हमें समाधान पर नजरें गड़ाये रखना है। समाज मे व्याप्त विसंगतियों के निवारण हेतु प्रत्येक स्तर पर चिंतन शिविर में से जो विचार एवं सुझाव छन कर आयेंगे, उनका विश्लेषण कर आवश्यक दिशा-निर्देश के साथ कर्मसूची तैयार हो सकेगी।

मारवाड़ी समाज देश मे सदैव ही अग्रणी समाज रहा है। एक समय था जब समाज के लोग सिर्फ व्यापार-उद्योग के लिये ही जाने जाते थे। शिक्षा, कला एवं अन्य क्षेत्रों में उनकी पैठ नहीं थी। समाज आज बदल चुका है। प्रत्येक क्षेत्र में हमे अग्रणी भूमिका निभानी हैं। किन्तु स्वयं के समाज की जरुरतों के विषय मे हमारी बेरुखी चिंताजनक है। समाज के युवा वर्ग को जागरुक होकर इस यज्ञ में महती भूमिका निभानी है। अगले बारह वर्ष सम्मेलन के लिये अति महत्वपूर्ण हैं। इस दौरान सम्मेलन को अपने भूतकाल मे पाये सफलता से प्रेरणा लेते हुए फिर से संकल्पबद्ध होकर आगे बढ़ना चाहिए ताकि शताब्दी वर्ष के पहले ही समाज को फिर से एक नया स्वरूप प्रदान कर सकें। नये समाज निर्माण के माध्यम से व्यापक समाज हित के लिये संकल्पबद्ध होकर काम करने का दशक हो अगले दस वर्ष। नूतन संचार व्यवस्था एवं सोशल मीडिया का लाभ उठाते हुए सम्मेलन को एक नया स्वरूप देने का अवसर हमारे सामने है। तीव्र से तीव्रतर होते हुए परिवर्तन के दौर में सम्मेलन को भी इन परिवर्तनों के साथ कदम से कदम मिलाकर बढ़ना है।

शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

सम्मेलन का स्थापना दिवस – गौरवशाली इतिहास एवं सुनहरा भविष्य

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

नमन उन्हें है जिन लोगों ने सम्मेलन का पौधा लगाया,
और उन्हें भी जिस लोगों ने पाला पोसा और बढ़ाया,
सब लोगों ने तन मन धन से इतना महती काम किया है
तभी तो जाकर इस पौधे ने बरगद का रूप लिया है

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ८८ वें स्थापना दिवस पर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई, सादर अभिवादन एवं हार्दिक अभिनन्दन।

हमारे दुरदर्शी मनीषियों ने आज से ८७ वर्ष पूर्व समाज के सर्वांगिण विकास की मंशा से इसका गठन किया, हालांकि तात्कालिक कारण भले ही राजनैतिक या नागरिकता के मूल अधिकार प्राप्त करने के लिए आवाज बुलंद करना रहा हो, पर मूलतः सम्मेलन ने सदा ही अपने उद्देश्यों में समाज सुधार एवं समाज विकास को प्राथमिकता दी है। जब हम हमारी कुरीतियों, कमियों, विसंगतियों पर मनन करेंगे तब ही हम उनके निराकरण में सक्षम हो पायेंगे सम्मेलन ने भी यही किया। पर्दाप्रथा, बालविवाह, दहेज आदि कुप्रथाओं का सम्मेलन ने पुरजोर विरोध किया और इनके उन्मूलन में सफल भी रहा। विधवा विवाह एवं नारी शिक्षा के प्रचार प्रसार का बिगुल फूंका और सम्मेलन इसमें भी सफल रहा। बदलते समय के साथ नित नई विसंगतियाँ अपने समाज को भी अपने घेरे में लेती रही है। सम्मेलन इन कुरीतियों का निवारण कर समाज के लोगों को जागरुक करके दिशा निर्देश देने का प्रयास करता है, साथ ही समय समय पर कुरीतियों के खिलाफ पुरजोर अभियान चलाता है। सम्मेलन के मुखपत्र समाज विकास, मीडिया एवं विचार गोष्ठियों के जरिये धार्मिक एवं वैवाहिक समारोहो में आडंबरों के खिलाफ लोगों को सचेत करने का प्रयास करता है। सम्मेलन ने बदलते दौर के साथ वैवाहिक आयोजनों में अनाप-शनाप खर्च, सड़कों पर महिलाओं द्वारा नृत्य, सामूहिक मृत्युभोज, विवाह समारोह में मद्यपान, विवाह पूर्व फोटो शूट, धार्मिक आयोजन में आडम्बर का समावेश आदि विसंगतियों का पुरजोर विरोध किया है। यह नकारात्मकता नहीं है। इसके सकारात्मक परिणाम देखने में आये है। सम्मेलन सदैव उच्च शिक्षा का समर्थक रहा है। समाज के बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करना एवं सहयोग करना सम्मेलन का उद्देश्य रहा है। समाज को एक सूत्र में पिरोने में संगठन की शक्ति को मजबूत करना अपरिहार्य होता है। इसी भावना के तहत समाज की अन्य संस्थाओं के साथ सम्बद्ध किया जा रहा है। समाज के हर परिवार का कम से कम एक सदस्य सम्मेलन से अवश्य जुड़े। पूरे देश में इस दिशा में पहल की जा रही है। संगठात्मक एकता से बड़ा कोई रक्षा कवच नहीं होता। **संधे शक्ति युगे युगे**

हमारा समाज एक जुझारु समाज है। हमारा जन्म ही ऐसी विकट परिस्थितियों और वातावरण में हुआ है जहाँ जल का अभाव, अन्न का अभाव, हरियाली एवं वनस्पतियों का अभाव, फलों का अभाव। जलवायु असामान्य, ठण्ड में कड़ाके के ठण्ड, जहाँ पारा शून्य डिग्री सेंटीग्रेड पर पहुंच जाता है तो गर्म में तपती रेत ५० जिग्री सेंटीग्रेड का तापमान। गर्म हवाओं के साथ रेत भरी आंधी, तो वर्षा ऋतु में बहुत ही कम बरसात। ऐसे वातावरण में जन्में व्यक्ति में कुछ भी कर गुजरने का साहस होता है जीवट होता है। हमने निचली पायदान देख ली है अतः जोखिम लेने की हमारी क्षमता अपार है। नकारात्मक वातावरण से यह सकारात्मकता छन कर निकली है। एक समय था जब देश के व्यापार एवं उद्योग जगत में मारवाड़ी समाज का आधिपत्य था। देश के बड़े उद्योगपतियों में जैसे बांगड़, बिरला, सिंघानिया, गोयनका, डालमिया, बजाज आदि का ही नाम शीर्ष पर आता था। यह हमारे संघर्ष का प्रतिफल था। नई औद्योगिक क्रांति को नेतृत्व प्रदान करने में हम कुछ पीछे रह गये पर अब वापस परिस्थितयां बदल रही है।

राजस्थान की रज रक्त रंजित है वीर प्रसूता है जिसे ललाट पर लगाकर हम गर्व अनुभव करते हैं हमारे पूर्वजों ने पश्चिम से आने वाले आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया है। राजस्थान की वीर गांथाओं से पूरा देश परिचित है, जिसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ की क्षत्राणियां ने अपनी मर्यादा की रक्षा हेतु जौहर किये। आज भी भारतीय सेना में राजस्थान के वीर सपूतों की भरमार है। शायद हम ही प्रथम स्थान पर हैं। महाराणा प्रताप, राणा सांगा, राणा कुम्भा, दुर्गा दास राठौड़, पृथ्वीराज चौहान, वीर हमीर, वीर आल्हा उदल, हाड़ा राणी, रानी पद्मिनी, पन्ना धाय आदि के बलिदानों को कोई कैसे बिसार सकता है। वीरता में राजस्थान का गौरवशाली इतिहास रहा है और आज भी है। इस माटी को हम नमन करते है। समर्पण भाव के साथ प्रभु भक्ति में भी हम उत्कृष्ट है। मीरा बाई, संत दादू, रैदास को कौन नहीं जनता। एक अरसे से सनातन शास्त्रों का भारत की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करके उनका प्रकाशन करना तथा उन्हें लागत से भी कम मूल्य पर उपलब्ध कराना, संस्कृति की रक्षा हेतु बेजोड़ सेवा है और यह सेवा गौरखपुर की संस्था गीता प्रेस लम्बे अरसे से करती आ रही है जिसका संचालन

मारवाड़ी समाज के मनीषी करते आ रहे हैं। पहले हमारी पहचान उद्योग एवं व्यापार तक ही सीमित थी, हमारी सोच बदली, हमने ठान लिया कि उद्योग व्यापर से इत्तर भी हमें कुछ करना है और हमने कर दिखाया। आज देश में सबसे ज्यादा सीए मारवाड़ी है। बड़ी-बड़ी सीए फर्म मारवाड़ियों की है। हमने चिकित्सा के क्षेत्र की तरफ मन बनाया, आज चिकित्सा की हर विधा के प्रमुख चिकित्सक डॉक्टर मारवाड़ी मिल जायेंगे और वह भी प्रचुर संख्या में। सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में भी समाज के युवाओं की भरमार है। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रशासनिक सेवाओं में भी मारवाड़ी युवाओं ने अपनी पहचान बना ली है। हर वर्ष प्रशासनिक सेवा के लिए चयनित प्रार्थियों में लगभग १० प्रतिशत की संख्या अपने समाज के युवाओं की होती है, चाहे आईएएस हो, आईपीएस हो, आईएफएस हो या और कोई सेवा शाखा हो, मारवाड़ियों का स्थान अब अच्छी पायदान पर है। वकालत एवं न्यायाधीशों में भी समाज की अच्छी स्थिति है।

राजस्थान उच्च न्यायालय में अपने समाज के एक दम्पति श्री महेन्द्र कुमार गोयल एवं श्रीमती शुभा मेहता गोयल न्यायमूर्ति के पद पर शोभायमान है पूरे देश में यह पहला उदाहरण है।

साहित्य के क्षेत्र में मारवाड़ियों का योगदान सदा से ही रहा है और आज भी है। भारतेंदु हरिशचंद्र, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, धर्मवीर भारती, हनुमान प्रसाद पोद्दार, राधेश्याम खेमका, भारत भूषण अग्रवाल, काका हाथरसी, केदारनाथ मित्तल, शेरजंग गर्ग, प्रभा खेतान, कन्हलालजी सेठिया, कल्याण सिंह राजावत, मृदुला गर्ग आदि। कला और संगीत जैसे स्थापत्य गीत, नृत्य, संगीत, चित्रकला, लोक कला आदि के क्षेत्र में भी हमारा हस्तक्षेप रहा है। चाहे पत्थरों पर नक्काशी हो या दीवारों पर चित्रकारी - भित्ति चित्र - आज भी लोग लौहा मानते है। कई नामी गायक एवं संगीतज्ञ बंधु राजस्थान में हुए है जैसे अल्लाह जिला बाई, गवरी बाई, डाबर बंधु, जगजीत सिंह, बन्नो बेगम, मांघी बाई, रामकिशन पुष्कर, चाँद मोहम्मद खान, शकुंतला प्रवार आदि। अल्लाह जिलाई बाई का गाया हुआ **"केसरिया बालम आओ नीं पधारो म्हारे देश"** बहुत ही प्रसिद्ध लोक गीत है। यहाँ का कालबेलिया नृत्य बहुत ही प्रसिद्ध है। यहाँ के मजबूत किले सुरक्षा की दृष्टि से अपनी शान रखते है। हर छोटी बड़ी रियासतों में किले होते थे जिनके अंदर राजाओं के महल के अलावा साधारण जनता के रहने का भी प्रबंध होता था। चित्तौड़गढ़ का किला सबसे बड़ा मजबूत और अभय रहा है जो मिलो तक फैला है। मेवाड़ के कुम्भलगढ़ के किले की दिवार इतनी चौड़ी है कि उसके ऊपर दो गाड़िया आसानी से चलाई जा सकती है। इस किले की दीवारे दुनिया की दूसरी सबसे लंबी और चौड़ी दीवारों की गिनती में आती है। इस किले का कोई शानी नहीं है।

राजस्थान की हवेलियां सैकड़ों साल पहले बनाई गई थी उन हवेलीओं पर भित्ति माँडणा आज भी उतनी चमक के साथ कायम है। लगता है जैसे वह चित्रकारी आज की ही है। इन भित्ति चित्रों और हवेलिओ को देखने आज भी विदेशी पर्यटक अच्छी संख्या में आते है। स्त्रियों के गहनों के रूप से मारवाड़ियों के पास अथाह सोना है। हाल फिलहाल में राजस्थान में सोने एवं तेल का अच्छा भंडार भी मिला है। हमें गर्व है कि देश का प्रथम परमाणु परीक्षण पोकरण, राजस्थान में हुआ।

विदेशों में भी मारवाड़ी बंधु विभिन्न देशों में अच्छी संख्या में बसे हैं। हम जहाँ भी प्रवासी बनकर गए है वहां अपनी परम्पराएं एवं संस्कृति को कायम रखते हुए स्थानीय लोगों के साथ उनकी संस्कृति में भी उसी तरह घुल मिल गए हैं। हम किसी से भी बेवजह से झगड़ा मोल नहीं लेना चाहते है तथा सब जगह हिल मिलकर रहते है। व्यापार के क्षेत्र में मारवाड़ी समाज के प्रति अन्य लोगों का विश्वास है, क्योंकि हम अपने कार्य के प्रति निष्ठावान है।

समाज सेवा एवं धर्मार्थ कार्यों में अपना समाज अग्रणीय है। आज देश में स्थित अधिकतर मंदिर, धर्मशालाएँ, अस्पताल, शिक्षण संस्थान गौशालाएं आदि मारवाड़ियों द्वारा निर्मित है। निःशुल्क या बहुत कम दर पर भोजन यही समाज बिना भेदभाव के उपलब्ध कराता है। आज भी पारिवारिक सौहार्द एवं संयुक्त परिवार मारवाड़ी समाज में कायम है। कोरोना काल में समाज ने हर वर्ग की हर तरह से सहायता की थी। मारवाड़ी समाज में मातृ शक्ति को भी पूरा सम्मान दिया जाता है तथा उसे लक्ष्मी और माँ अन्नपूर्णा की संज्ञा दी जाती है। दया, करुणा, सेवा, सहायता हमारे खून में है। हमें मारवाड़ी होने पर गर्व है।

आज राजस्थान में न जल का अभाव है न अन्न का अभाव है और तो और वहां से खाद्यान, दलहन और मसाले अन्य प्रांतों को निर्यात होते है। आज राजस्थान से वस्त्रों का अन्य प्रदेशों एवं विदेशों को निर्यात होता है। वजन में हल्की और गर्म जयपुरी रजाईयों से कौन अपरिचित है। सांगनेरी प्रिंट और कोटा की साड़ियां सब का मन लुभाती है। प्रिंट मीडिया में अधिकांश स्वामित्व मारवाड़ियों का है जैसे हिन्दुस्थान टाइम्स, नवभारत टाइम्स, इंडियन एक्सप्रेस, भास्कर, जागरण, प्रभात खबर, राजस्थान पत्रिका आदि।

"हमें अपने मारवाड़ी होने पर गर्व होना चाहिए एवं अपनी संस्कृति व परम्पराओं को यथोचित सम्मान देना चाहिए। पश्चिमी तड़क-भड़क और अलगाववादी संस्कृति के मोहजाल में नहीं फंसना चाहिए। आज समाज से परे जो अपने को समझते है उन्हें अपनी सोच के परिणामों पर गौर करना चाहिए। विपत्ति में भाई बंधु और समाज ही साथ देता है। अपनी सोच सदा सकारात्मक रखिये। हम इस बात पर गर्व कर सकते है कि हम एक अति विशिष्ठ समाज के अंग है।"

"सेवा है डीएनए में हमारे, करते रहे हैं करते रहेंगे,"

"मन में दृढ़ संकल्प हमारा, एक रहे हैं एक रहेंगे।"

"जय समाज, जय राष्ट्र।"

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

SUPER-SPECIALITY
MENTAL HEALTH FACILITY

PSYCHIATRIC UNIT & COUNSELLING

PSYCHOMETRIC ASSESSMENT

CAREER COUNSELLING

CHILDREN'S DEVELOPMENTAL UNIT

PAEDIATRIC PHYSIOTHERAPY

HEARING & SPEECH CLINIC

54 A SARAT BOSE ROAD, KOLKATA 700025

98364 03766 | 70444 26035

www.caringminds.co.in | info@caringminds.co.in

With the Best Compliments from :

M/s. Angus Jute Work

9, INDIA EXCHANGE PLACE
KOLKATA – 700001
PHONE : 033-2230 3185

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

संक्षिप्त परिचय

श्रीमती अमला अशोक रुइया

अध्यक्ष - आकार चैरिटेबल ट्रस्ट (एसीटी)

ट्रस्ट के बारे में : आकार चैरिटेबल ट्रस्ट का गठन २००३ में किया गया था। हम ग्रामीण भारत के सूखे और प्यासे लोगों को वर्षा जल संचयन विधि का उपयोग बनाकर अत्यधिक समर्पण और पारदर्शिता के साथ चेक डैम पानी उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे उन्हें उनकी कल्पनाओं से बहुत परे आर्थिक आत्मनिर्भरता के नये स्तर पर लाया जा सके।

उपलब्धियां : अगस्त २०२२ तक ६०८ चेक डैम बनाए जा चुके हैं। इनसे ७५७ गाँव के १५ लाख से अधिक लोगों का जीवन बदल गया है। महामारी के दौरान, १०३ चेक डैम बनाए गए, जिससे २.४ लाख लोगों पर अनुकूल प्रभाव पड़ा।

आर्थिक परिणाम : हमारे प्रायोंजकों द्वारा ७० प्रतिशत और ग्रामीणों द्वारा ३० प्रतिशत के अनुपात में चेक डैम परियोजनाओं पर ४२.६० करोड़ रुपये खर्च किये गए हैं। ग्रामीण लोग लगभग रु. २,००० करोड़ सालाना शुद्ध आय अर्जित कर रहे है। एक बार खर्च करके आने वाली पीढ़ियों के लिए आमदनी जारी है।

भविष्य का लक्ष्य : अक्टूबर २०२१ से अक्टूबर २०२२ की अवधि के लिए किए गए। २०० चेक डैम बनाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है। इनमें से १५७ चेक डैम अगस्त २०२२ तक पूरा कर लिया गया है।

१९४६ में यूपी के एक संपन्न परिवार में जन्मी, अमला जी की परवरिश एक उच्च साहित्यिक और आध्यात्मिक वातावरण में हुई। अमला जी का जीवन बहुत सादा और अनुशासित था। साथ ही जीवन में समृद्धता के साथ अधिक सन-सर्ग होने के कारण धन के प्रति कोई अनुचित आकर्षण नहीं था, क्योंकि इसे बहुत करीब से जिया और अनुभव किया गया था।

स्वास्थ्य, प्राकृतिक चिकित्सा और योग में हमेशा अमला जी की पहली प्राथमिकता रही है, वह १९९६-९९ के बीच, उन्नत योग और प्राकृतिक चिकित्सा की ओर आकर्षित हुई और लगभग उसी समय, उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा में डिप्लोमा की और फिर एक छोटा स्वास्थ्य केंद्र चलाना शुरु किया, जिसमें मरीजों के लिये राइफ और जॉन राइट मशीनों के तहत उपचारों के साथ-साथ विभिन्न वैकल्पिक उपचारों का विस्तार किया। हमने कुछ बेहद कठिन रोगों का सफलतापूर्वक इलाज किया।

अमला जी १९८६ से २००१ तक आध्यात्म को समर्पित रही, जहाँ वे भागवत गीता के अद्वैत दर्शन में डूबी रही। सत्संग और प्रवचन उनके दिन का क्रम था। इससे समाज सेवा की जमीन तैयार हुई।

१९९९ में, अमला जी आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के श्री श्री रविशंकर के संपर्क में आयी और उत्सव और सेवा के उनके संदेश ने उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

२००१ में, अमला जी राजस्थान में अकाल की दुर्दशा से द्रवित हो गई थी और चूंकि उनके पति का परिवार वहीं से है, इसलिये अमला जी उनके लिए एक स्थायी समाधान खोजना चाहती थी। इस संदर्भ में अमला जी राजस्थान में पहले से ही काम कर रहे कुछ एनजीओ के काम को देखा, उनकी उपलब्धियों को देख कर अचंभित हुई और उनके मॉडल को दोहराने का फैसला किया।

इस मामले में उनको मुख्य विचार यह मिला कि निर्णय लेने के सभी चरणों में समुदाय की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए और उन्होंने निर्माण के लिए आवश्यक सभी पत्थर, बजरी और पानी का योगदान देने के लिये प्रोत्साहित किया। श्रम के रूप में मिट्टी के काम के लिए भी १/३ योगदान दे। इस तरह उन्हें लगता है कि यह उनका चेक डैम है और चेक डैम पूरा होने के बाद उन्हें सौपे जाने पर वे इसका संरक्षण करने के लिए तैयार रहें।

अमला जी कहती है कि मेरा मानना है कि हमारे देश में दो सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है पानी और शिक्षा, इसलिए मैं जिस भी गाँव में जल संचयन करने जाती हूँ, वहाँ प्राथमिक शिक्षा का मुद्दा भी उठाया जाता है, जो लोगों की इच्छा और उत्साह पर निर्भर करता है।

राजस्थान और महाराष्ट्र सें जल संचयन के लिए

१) रामगढ़ और चूरू में २०० पेयजल कुंड। इनमें कुल मिलाकर १ करोड़ लीटर शुद्ध पेयजल इकट्ठा करते है।

२) राजस्थान, यूपी, एमपी, बिहार और महाराष्ट्र में जल संचयन में जमीनी स्तर पर काम करने वाले कई गैर सरकारी संगठनों को आर्थिक सहायता दिया।

३) महाराष्ट्र में २००३ से २००८ तक लगातार तीन वर्षों तक उस गाँव को हर साल एक लाख रुपये का आकार जल पुरस्कार दिया गया जो अधिक से अधिक ग्रामीणों को प्रेरित करने के विचार के साथ सबसे अच्छा जल संचयन किया था।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक

१२ राज्यों से समाज के प्रतिनिधियों ने लिया भाग

मारवाड़ी समाज ने सब-कुछ अपने पुरुषार्थ के बल पर हासिल किया है – विधायक सत्यनारायण शर्मा

मारवाड़ी समाज इस देश की ताकत है, लोगों में दान-धर्म की भावना का पनपना हमारे समाज की ही देन है। मारवाड़ी समाज ने अपने पुरुषार्थ के बल पर सब कुछ प्राप्त किया है। हमारा समाज किसी के रहमोकरम का मोहताज कभी नही रहा बल्कि अपनी कर्मठता, कार्य कुशलता, क्षमता के बल पर आगे बढ़ा है। उक्त कथन है पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा छत्तीसगढ़ से सातवी बार विधायक चुने गये श्री सत्यनारायण शर्मा का, जिन्होंने छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में रायपुर में आयोजित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बतौर मुख्य अतिथि उक्त बाते कहीं।

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने कहा कि मारवाड़ी समाज के लोगों ने चर्तुदिक सफलता का परचम लहराया है। सबसे बड़ी बात है कि हमारी युवा पीढ़ी नित नये मुकान हासिल कर रही है। साथ ही उन्होंने समाज में पुरानी के साथ-साथ नित नई पनप रही कुरीतियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे समाज में सम्बन्ध विच्छेद एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। घर के बुजुर्गों की अवहेलना तथा उनके मान-सम्मान में कमी समाज को पतन की ओर ले जा रहा है। हम सबको मिलकर इस दिशा में ठोस एवं सार्थक कदम उठाने होंगे, लोगों को जागरुक करना होगा।

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने कहा कि आज सम्मेलन में सदस्य सभी विषयों पर खुलकर चर्चा कर रहे है, यह सम्मेलन की बढ़ती सार्थकता है। एक समय था जब सिर्फ समाज सुधार पर बातें होती थी, आज समाज सेवा की भी बात होने लगी है। अब हमें पुरानी बातों के बजाय समाज में पनप रही नई कुरीतियों पर विचार करना चाहिए।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने विगत दिनों के कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। साथ ही कहा कि पूरे देश में मात्र सम्मेलन ही एक मात्र ऐसी संस्था है, जिस पर किसी समाज का गहरा विश्वास है। तभी तो कहीं भी समाज पर संकट आता है तो लोग सम्मेलन की ओर आशा भरी नजरों से देखते हैं। सही मायने में कहा जाये तो सम्मेलन मेडिक्लेम की तरह है, जो संकट का सहारा भी है। बैठक में राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण श्री पवन कुमार सुरेका (बिहार), श्री पवन कुमार गोयनका (दिल्ली), श्री अशेक जालान (उत्कल) सहित बिहार के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री महेश जालान, पूर्वोत्तर

के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, उत्कल के अध्यक्ष श्री गोविन्द अग्रवाल, दिल्ली के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया, झारखण्ड के अध्यक्ष श्री बसन्त मित्तल, आन्ध्र प्रदेश के अध्यक्ष श्री चांदमल अग्रवाल, यूपी के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान सहित अन्यों ने तलाक के पीछे लड़के-लड़कियों में इगो को प्रमुख कारण बताया। इसके अलावा डेस्टिनेशन मैरेज, लड़कों की शादी की समस्या, प्री वेडिंग शूट, पूल पार्टी आदि के बढ़ते चलन जैसे कई मुद्दों पर गहरी चिन्ता जाहिर की। बैंगलौर से आये श्री ओम प्रकाश पोद्दार, मप्र से श्री कमलेश नाहटा, उत्कल से श्री जगदीश गोलपुरिया, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कैलाशपति तोदी, श्रीमती सुषमा अग्रवाल, श्री सत्यनारायण सिंघानिया, श्री पारसचन्द जैन, श्री लोकेश कबाड़िया, चैन्नई से पधारे श्री जगदीश प्रसाद शर्मा सहित अन्यों ने भी अपने विचार रखे।

इसके पूर्व छत्तीसगढ़ प्रान्त के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि हमें इस बैठक के आतिथ्य का भार देकर केन्द्र ने हम पर विश्वास जताया। प्रादेशिक महामंत्री श्री अमर बंसल (पार्षद) ने प्रांतीय गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट रखते हुए कहा कि आखिर कब तक हम कुरीतियों पर सिर्फ चिन्तन करते रहेंगे। आज समय है एक्शन लेने का, जिससे के समाज में पनपी बुराईयो पर अंकुश लगे।

बैठक में आगामी सत्र के राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्वाचन के लिए एडवोकेट श्री नन्दलाल सिंघानिया को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया। राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका के अलावा सर्वश्री जयदयाल अग्रवाल, विजय केडिया, पोडेश्वर पुरोहित, पवन कुमार जालान, सज्जन शर्मा, मनोज जैन, घनश्याम पोद्दार, रमेश कुमार बजाज, जगदीष मिन्नी, ओम प्रकाश प्रणव सहित काफी संख्या में पूरे देश से सदस्यों की उपस्थिति रही।

धन्यवाद ज्ञापन श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया ने किया।

स्वागत है अभिनन्दन है, आप सभी का वन्दन है, स्वागत गीत के साथ प्रारम्भ हुई बैठक का राष्ट्रगान के साथ समापन हुआ।

Shyam Steel के पास है 60 सालों से भी ज़्यादा का तजुर्बा

किसी भी क्षेत्र में लम्बे समय का अभ्यास एवं तजुर्बा ही लोगों को श्रेष्ठ बनाता है। तभी तो हमने चुना है **Shyam Steel 550D Flexi-Strong TMT REBAR**. और इसमें है मज़बूती एवं लचीलेपन का सही संतुलन, जो भूकम्प से रखे सुरक्षित और आपके घर को बनाए ज़्यादा मज़बूत। 60 सालों से भी ज़्यादा के तजुर्बे से बनी इस कारीगरी से बनाएं अपना घर।

Follow Shyam Steel India @

retail.india@shyamsteel.com

Shyam Steel Industries Ltd., Shyam Tower, Plot No.- 03-319 (DH- 6/11), Street No - 319, New Town, Rajarhat, Kolkata - 700 156

A Mark of TRUST

SHYAM® **550D** a sign of authenticity that promises strength and quality

अपने बच्चों के साथ जिस तरह से व्यवहार करते हैं, उससे अधिक सठीक किसी समाज की आत्मा का कोई रहस्योद्‌घाटन नही हो सकता है। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला सबसे बड़ी विरासत जो हम अपने बच्चों और नाती-पोतों को दे सकते है, वह धन या अन्य भौतिक चीजें नही हैं जो किसी ने जीवन में जमा किया है, बल्कि चरित्र और विश्वास की विरासत है।

हम सबके अंदर एक बच्चा है और आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर इस जोशीले और तीव्र उत्कांठा को आत्मसात कर समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करें, माता-पिता के रूप में, हम सभी चाहते है कि हमारे बच्चे बड़े होकर जिम्मेदार नागरिक और अच्छे इंसान बनें। हम चाहते है कि वे समाज की भलाई और राष्ट्र निर्माण के लिए महसूस करना, सोचना और सम्मान के साथ कार्य करना सीखें।

अपनी मातृभूमि भारत को अपनी युवा शक्ति पर गर्व है। युवा जोश और अनुभवी मार्गदर्शन के समन्वय से ही हम राष्ट्र के विकास में सकारात्मक प्रभाव ला सकते हैं। आइए इस अवसर का लाभ उठाएं और एक बेहतर, उज्ज्वल और समृद्ध भारत बनाने का संकल्प ले।

इतना कहने के उपरांत, मैं भारत के हिंदू सन्यासी स्वामी विवेकानंद के प्रसिद्ध उदाहरण को दोहराने से स्वयं को रोक नहीं सकता – उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए...।

यह हम सभी का ज्वलंत मंत्र होना चाहिए।

प्रह्लाद राय अगरवाला
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रति वर्ष २५ दिसम्बर को मारवाड़ी समाज का स्थापना दिवस मनाया जाता है। गत ८७ वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने मारवाड़ी समाज के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा के लिए सम्मेलन की स्थापना की थी। उस समय स्थापित सम्मेलन का अब पूरे भारत में कमोबेश विस्तार हो चुका हैं, जिसके तहत अनेक तरह के सेवा मूलक कार्य सम्पादित-संचालित हो रहे हैं। परन्तु बच्चों में संस्कारों की कमी आना चिन्ता का कारण बनता जा रहा है। बोलचाल में मारवाड़ी भाषा का प्रयोग नहीं हो रहा। त्यौहारों का ज्ञान नहीं, अपनी वेशभूषा पहनना पसंद नहीं आदि कई मुद्दे है, इसमें सुधार कैसे लाया जाय यह सोचने की बात है। बच्चे ही समाज का भविष्य है उनको सिखाना बहुत जरुरी है।

दक्षिण भारत में आज भी मन्दिरों में ड्रेस कोड है। प्रसिद्ध तिरुपति में कुछ दर्शनों में धोती व दुपट्टा ही पहनना पड़ता है, कुछ दर्शनों ने कुर्ता पजामा चलता है। इस तरह बच्चे भी त्योहारों पर धोती-कुर्ता और टोपी या पगड़ी पहने तो परम्परागत पहनावे में वह सुन्दर दिखेंगे और मारवाड़ी पहनाये का ज्ञान भी होगा।

दूसरा संस्कार है खान-पान। बच्चों को पता नहीं मारवाड़ी खान-पान क्या है वह तो चाइनिज खाना ज्यादा पसंद करते हैं, या जंक फूड बर्गर आदि खायेंगे। बाजरे की रोटी, बेसन की रोटी, सांगरी की सब्जी का उन्हें ज्ञान ही नहीं है।

तीसरा संस्कार भाषा का है। बच्चे अपने घर में मारवाड़ी भाषा में बातचीत नहीं करते है। उन्हें घर में मारवाड़ी बोलना आना चाहिये। घर में इसका प्रचलन हो ताकि धीरे-धीरे बच्चे भी बोलने लगे।

चौथा संस्कार त्योहारों की जानकारी है। उनको यह पता नहीं तीज त्यौहार, गणगौर कब और कैसे मनाये जाते है। समाज में इस आयोजनका होना चाहिये। तभी बच्चे इसके बारे में जान सकेंगे। आजादी के वक्त वंदे मातरम् का जय घोष किया गया और जनता को यह आभाष दिलाया, स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है तभी हमें आजादी मिली।

सम्मेलन का ध्यय है "**म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति**" है। इसे सही मायने में दायित्व निभाना है तो संस्कारों का ज्ञान बच्चों में होना चाहिये।

– विजय कुमार लोहिया
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

With Best Compliments From:

Rajasthan Vidya Mandir

A CISCE, New Delhi affiliated School for Girl's with well equipped laboratories providing Science, Commerce & Humanities Course from Lower KG to Class XII & It is the 1st English Medium Girl's School in North Kolkata.

Founder Secretary Atmaram Kajaria managed & run by Rajasthan Chhatra Niwas Trust, 36, Baranashi Ghosh Street, Kolkata-700 007.

Special classes for Bhagwat Gita are also counducted in the School.

RAJASTHAN VIDYA MANDIR

36, Baranashi Ghosh Street

Kolkata-700 007

Phone : 033-7963 8314

दूसरे समाजों को प्रेरित करें

– भानीराम सुरेका
वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अ.भा.मा.स.

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ८८ वें स्थापना दिवस पर सम्मेलन से जुड़े सभी पदाधिकारियों, प्रादेशिक इकाइयों के प्रमुखों और प्रवासी मारवाड़ी समाज के प्रत्येक सदस्य को हृदय से नमन! किसी संस्था का इतने लंबे समय तक गतिशील बने रहना और लोकतांत्रिक व्यवस्था में कार्य करते हुए निरंतर समीचीन बने रहना बड़ी उपलब्धि है और इस उपलब्धि के लिए मैं सभी सुधी पदाधिकारियों और सदस्यों सहित समाज विकास के सभी पाठकों को बधाई देता हूँ, अभिनंदन करता हूँ। सम्मेलन की स्थापना एक वैचारिक संस्था के रूप में की गई थी। विचार समय सापेक्ष होता है। समय के साथ विचार में परिवर्तन अवश्यंभावी है। सूचना तकनीक की क्रांति के जिस दौर में हम जी रहे हैं वह इतनी क्षणभंगुर है कि पलक झपकते चीज़ें बदल जाती हैं। आज की पीढ़ी के बच्चे कम्प्यूटर, मोबाइल और इंटरनेट की बदौलत द्रुतगति के नायक हैं। जितनी देर में हम किसी समस्या का अवलोकन करते है उतनी देर में आज के युवा उसका समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। यह पीढ़ियों के द्वंद्व का मूल है और यही यथार्थ भी है। तेज़ी से बदलती विश्व व्यवस्था ने बहुत सी चुनौतियों को जन्म दिया है। सम्मेलन भी अन्य समाजों और राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में सामने आ रही चुनौतियों के सम्मुखीन है और इससे बचकर एक संगठित, सुसंस्कृत और स्वाबलंबी समाज बनाने के लिए बहुत से कठोर निर्णय लेने की घड़ी आ गई है।

स्थापना के ८८ वर्षों बाद आयोजित हो रहे सम्मेलन के इस स्थापना दिवस पर जो भी मुद्दे प्राथमिकता के आधार पर चिन्हित किये जायेंगे उसकी फलीभूत करने के लिए आवश्यक है कि सम्मेलन देश के कोने-कोने में बसे प्रवासी मारवाड़ियों को संगठित करे और उनमें नई चेतना का शंखनाद करे, जिससे पीढ़ियों के अंतर्द्वंद्व से जूझ रहा मारवाड़ी समाज एक आदर्श सामाजिक आचार-संहिता के तहत एकजुट हो और वर्तमान की चुनौतियों का जमकर सामना कर सकें। वरिष्ठ, अनुभवी और समर्पित व्यक्ति को ही सम्मेलन के शीर्ष पद पर लाया जाए जिससे उसके अनुभव, सांगठनिक दक्षता और सामयिक विचारों का लाभ सम्मेलन को मिल सके। हम सभी मारवाड़ी एक है और हमेशा समरसता के माध्यम से जो जहां है वहाँ की प्रगति में सहायक बनें।

ये अंजुमन, ये क़हक़हे, ये महवशों की भीड़
फिर भी उदास, फिर भी अकेली है ज़िंदगी

एक प्रवासी मारवाड़ी होने और दशकों से सामाजिक जीवन में सक्रिय होने के नाते दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि आर्थिक रूप से भले ही हमने मज़बूती पायी है पर नैतिक रूप से हम निरंतर खोखले होते जा रहे हैं। जीवन के लंबे सफर के बाद जो कुछ भी मैं परिवार और समाज के बीच रहकर देख रहा हैं, वह मुझे बहुत उत्साहित नहीं कर रहा, अपितु सच पूछिए तो कहीं न कहीं एक खाई, शून्य सा प्रतीत हो रहा है जो ना चाहते हुए भी लोगों के दिल-ओ-दिमाग को अपने वश में किए हुए है। हंसी खोखली होती जा रही है। मन के भाव खो गए हैं। हम भले ही परिवार, समाज और राष्ट्र की बातें करने का दंभ भरें मगर सच यह है कि इन सबके प्रति हमारी आस्था में दरार पड़ना शुरू हो गया है और हम सिर्फ खोखली बातों के सहारे अपने मन को भुलावा देने का उपक्रम कर रहे हैं। एकत्रित रूप से समस्याओं के निदान की पहल अतीत की बात हो गई है। समाज में पढ़ाई-लिखाई का चलन जितनी तेजी से बढ़ा है उतनी ही तेज़ी से समाज में बिघटनकारी तत्व भी सक्रिय हुए हैं, जो मोहक आवरण में समाज को गलत राह पर ले जाने को उद्यत हैं। ऐसे में सम्मेलन जैसी राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं का महत्व निर्विवाद रूप से बढ़ जाता है और यह समय की मांग भी है कि सम्मेलन स्वयं की भूमिका का निर्वहन पूरी शिद्दत से करें और पूरे देश में फैले मारवाड़ी समाज को वैचारिक दिशा निर्देश दें।

मोटे तौर पर सामाजिक संगठनों को लेकर जितना अध्ययन मैंने किया है उसके आधार पर कह सकता है कि हजारों की संख्या होते हुए भी अगर समाज में एकता नहीं है, विकृतियाँ बढ़ रही है और समाज दिग्भ्रमित हो रहा है तो इसके पीछे समस्याओं के प्रति हमारी अन्यमनस्कता दायी है। हम समस्या को तब तक नज़र अंदाज़ करते हैं जब तक वह स्वयं की समस्या बनकर सामने ना आये। सभी समस्याओं के विस्तृत होने में इस अन्यमनस्कता का ही हाथ होता है। यदि हम समस्याओं पर चर्चा करें, विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम से उसकी बारीकियों को समझें तो शायद बहुत सी समस्याओं का निदान संभव है। हमें समाज के सभी तबके के लोगों के साथ दोस्ताना भाव रखना होगा और अगर वैचारिक मतभेद है भी तो उसे अनदेखी कर उसके साथ सकारात्मक बातें करनी होगी, जिससे वह अपने विचारों को बदलने की दिशा में सचेत हो। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन हमेशा से प्रवासी मारवाड़ी समाज को वैचारिक तत्व प्रदान करता रहा है और यह समय की मांग है कि पुनः सम्मेलन इस दिशा में सक्रिय हो। विगत वर्षों में सम्मेलन ने बहुत से क्रांतिकारी पदक्षेप लिए हैं जिससे पूरे देश में बसे प्रवासी मारवाड़ियों की स्थिति में गुणात्मक सुधार संभव हुआ है। अब एक बार फिर सम्मेलन देश के कोने-कोने में बसे मारवाड़ियों को उनकी सांस्कृतिक विरासत, आत्मिक ताकत तथा सामाजिक संगठन का तात्पर्य समझाये तथा यह कोशिश करे कि सदियों से जिन गुणों के समावेश से इस समाज ने प्रगति की वे प्रतिष्ठित हो और नयी पीढ़ी उन गुणों को आत्मसात कर एक ऐसे समाज के निर्माण में आगे बढ़े जो दूसरे समाजों को प्रेरित करें।

abbzorb®

CONTINENTAL Milkose (India) Ltd.
we manufacture, you sell...

PROTEIN खाएं, वजन घटाएं

UP TO 45% OFF

THAKNA SIKHA NAHI

FOR MEN | WOMEN

PROTRITION PRODUCTS LLP

REGD. OFF : K-185/2, 1ST FLOOR, SURYA PLAZA BUILDING, NEW FRIENDS COLONY, NEW DELHI - 110 025 (INDIA)
Cont.: +91 9717709229 | Email: care@abbzorb.com | Web: www.abzorb.com

मृत्योपरांत देह दान की घोषणा से संबंधित खुला इच्छा पत्र

– अशोक जालान
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अ.भा.मा.स.

मेरे प्रिय पुत्र एवं स्वजन,

ऐसा लगा कि कुछ परिवर्तन के रास्ते पर बढ़ते हुए कुछ मन की बातें सामने रखूँ ताकि आगे कोई मानसिक उलझन न बने।

मृत्यु के पश्चात शरीर एक मूल्यहीन वस्तु है जिसे जल्दी से जल्दी निपटा कर समाप्त किया जाना होता है। सारे समृद्ध और उन्नतिशील देशों में शरीर दान काफी प्रचलित है। हमारे यहाँ धार्मिक एवं सामाजिक अंधविश्वास जड़ित प्रथाएँ एवं परम्पराएँ तथा सचेतनता का अभाव ही इसके आड़े आता है। मानव कल्याण हेतु विज्ञान की शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए इसे बड़ी सोच के साथ लेना आज के समय की एक नितांत आवश्यकता है; अगर चिकित्सा अध्ययनरत छात्रों को व्यवहारिक अभ्यास के लिए मृत शरीर नहीं मिलेगा तो वे लोग व्यवहारिक ज्ञान जीवित शरीर पर करेंगे और कल वो शरीर हमारे प्रियजनों का नहीं होगा ये कौन कह सकता है। प्रथाएँ परिस्थितियों से बनती है, किन्तु हम लकीर के फकीर बनकर प्रथाओं से परिस्थितियाँ बनाने की भूल अज्ञानता वश निरंतर करते रहते हैं।

अगर सामाजिक प्रथाओं एवं परम्पराओं में कुछ अनुचित सा और अपनी अन्तर आत्मा को स्वीकार न हो, जिसको हमारी बुद्धि एवं विवेक सहमति न देते हों तथा जिसे तथ्य भरे तर्कों से सिद्ध नहीं किया जा सके तो फिर ऐसी प्रथाओं तथा प्रचलनों को समाप्त करना या बदलाव लाना बहुत जरूरी है तथा ये शिक्षित एवं समृद्ध लोगों से ज्यादा अपेक्षित है। हमें अशिक्षा, अंधविश्वास एवं गलत धारणाओं और कुप्रथाओं की मानसिक गुलामी से बाहर निकलना होगा।

मेरे शरीर और मेरी पत्नी मनोरमा के शरीर की मृत्यु के बाद उसे बुर्ला मेडिकल कॉलेज में पहुँचा देना है और किसी भी प्रकार का आडम्बर नहीं करना है। ब्राह्मण अथवा नाई को बुलाकर सिर मुँडवाना और बाल अर्पण नही करना है। मेरी आखें एवं किसी के काम आने वाला शरीर का कोई अन्य अंग भी दान दिया जा सकता है। मेरी सोच हमेशा रही है कि अंधविश्वासों एवं प्रचलित कुरीतियों को प्रथा एवं परम्परा के नाम पर आंख बंद करके न चलाते हुए परिवर्तन लाने से ही हम सभी का उचित विकाश होगा।

ज्ञान संपन्न ब्राह्मणों के चरणों में प्रणाम करते हुए क्षमा वाचना के साथ कहना चाहूँगा कि उनका भी सहयोग इस परिवर्तन में आवश्यक है। समाज में ज्ञान प्रदान करने वाले और इसी से अपने जीविका चलाने वाले ब्राह्मण सही रूप से समाज की ओर से दान दक्षिणा पाने के हकदार हैं। अन्यथा दान उसी को देना है जो दरिद्र है। श्राद्ध मनाना तो श्रद्धापूर्वक अपने पूर्वजों के सत कर्मों का स्मरण और उनके आदर्शों को पालन करना ही है। जब भी ऐसा करना हो तो मैने जो भी अच्छे कार्य किए हों उनकी चर्चा करके, उनका अनुसरण करके ब्राह्मणों एवं दरिद्रों के लिए यथाशक्ति भोजन वस्त्र की व्यवस्था कर सकते हो। अन्य कोई भी पूजा-पाठ, पिंड दान, श्राद्ध, गया जो आदि करने की जरूरत नहीं है। मेरे को स्वर्ग में मिल जाएगा यह सोचकर कोई वस्तु, सुख सेज आदि का दान मत करना।

मृत्यु के पश्चात प्रथम रविवार को एक शोक बैठक तथा दूसरे रविवार को एक और शौक बैठक बाहर से आने वालों की सुविधा को देखते हुए कर सकते हो। बैठक में यथा सम्भव अच्छे किए नए कार्यों की चर्चा की जो तथा विशेष रूप से बाहर से आए लोगों एवं बहुत थोड़े स्थानीय घनिष्ठ लोगों के लिए सीमित सात्विक भोजन की व्यवस्था ही सिर्फ करनी है। ब्राह्मणों एवं गरीबों को यथा सम्भव महीना - दो महीना का अन्न एवं वस्त्र का जोड़ा उनकी अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर दिया जा सकता है।

लोक और परलोक डराने की बातें हैं, सब कुछ यहीं इस पृथ्वी पर है एवं प्राणी मात्र में ईश्वर है हमें उसे ही पहचानना है। सेवा और परोपकार सिर्फ भावना नहीं एक सामाजिक ऋण तथा उत्तरदायित्व है। इन्हीं विचारो के साथ मैने अशोक जालान फाउंडेशन बनाया एवं वर्षों से परहित सेवा करने के उद्यम किए। मुझे बहुत संतोष और शांति मिली है और मेरी आत्मा तृप्त है। जितना सम्भव हो इन सेवा कार्यों को आगे बढ़ाते रहना। सही में याद करना हो तो प्रत्येक वर्ष मृत्यु दिवस पर यथा सम्भव मानव सेवा के कोई न कोई कार्य करना। मैने हमेशा मेरी सोच "खुद पर अमल - खुद से पहल" पर काम करने का प्रयास किया है।

मुझे अपने विचारों को प्रकट करने में कहीं कोई कमी रह गयी हो तो ऐसे विचारों को लेकर तर्क संगतयुक्त विश्लेषण एवं अपने विवेक का इस्तेमाल करना और आगे बढ़ना। सभी का जीवन आदर्श, प्रगतिशील और सुखमय हो, यही मेरी शुभकामना एवं आशीर्वाद है।

With best compliments from :

AGRAWAL GRAPHITE INDUSTRIES

MINES OWNERS & PRODUCERS OF NATURAL FLAKE GRAPHITE AND POWDERS

AGRAWAL GRAPHITE & CARBON PRODUCTS PRIVATE LIMITED

MANUFACTURERS OF CALCINED PETROLEUM COKE

AG SOLAR URJA UDYOG

REGISTERED OFFICE

"SHANTIKUNJ", FARM ROAD
SAMBALPUR – 768002
ODISHA

PHONE – 0663-2400828 , 2043251 , 2403651
E-MAIL – pratyush_agi@hotmail.com
agcppl@hotmail.com
info@agsolarurja.com / agsolarurja@hotmail.com
www.agsolarurja.com

QUALITY IS OUR MOTTO

सम्मेलन आठ दशक पूर्व और आज

– डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका
अधिवक्ता, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अ.भा.मा.स.

मारवाड़ी सम्मेलन का जन्म सन दस नवम्बर, १९३५ को हुआ था जिसका दायरा असम प्रान्त के सुबे तक था एवं इसकी अध्यक्षता कलकत्ता से पधारे स्व. प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ने की थी। उनके साथ में प्रथम पंक्ति के नेता स्व. बसंतलालजी मुरारका, रामकुमारजी भुवालका, बैद्यनाथजी केडिया, मो तिलालजी हेवड़ा व मालचंदजी शर्मा आदि थे।

उक्त सम्मेलन के गठन के पिछे उद्देश्य था अंग्रेजों के द्वारा १९३५ में लाये जाने वाले विधेयक की घबराहट जिसके आने पर सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज जो अन्य रियासतों से आकर बसा था उसे सरकार के द्वारा भारतीय नागरिकता प्रदान करने से वंचित करना था। यह उनके व्यापार या मतदान आदि पर प्रतिबंध थोपना था। परिस्थिति की नाजुकता को गंभीरता से भांपते हुए समाज के राष्ट्रीय नेतृत्व ने अखिल भारतवर्षीय स्तर पर एक माह के अंतराल पर कलकत्ते में सम्मेलन की स्थापना की। उक्त कालखण्ड में सनातनी व सुधारवादी दलों के बीच विचारों की जंग चल रही थी एवं उसी वक्त मारवाड़ी सम्मेलन ने कुछ आम सहमति वाले सामाजिक मुद्दों के साथ अन्याय प्रान्तों में पैर पसारना प्रारंभ किया था। राष्ट्रीय स्तर पर सुधार व संगठनात्मक विचारों से लोग जुड़ने लगे और सम्मेलन की स्वीकार्यता बढ़ने लगी। सम्मेलन में कुछ सुधारवादी मुद्दों पर आंदोलन का रुख अपनाया था जिसके सफल परिणाम भी मिले थे। घुंघट प्रथा उन्मुलन, विधवा विवाह प्रचलन, मृतक विरादरी भोज पर प्रतिबंध आदि विषयों पर आंदोलन के माध्यम से सफलता प्राप्त की थी। समय बिता, देश स्वाधीन हुआ, प्राथमिकता बदलने लगी, संस्कार व संयुक्त परिवार की जड़े हिलने लगी, पाश्चात्य सभ्यता की आँधी में लोग बहने लगे। एकल परिवार व शिक्षा, ने व्यापार तथा जीवन प्रणाली को प्रभावित किया। गत तीन-चार दशक में शिक्षा का आशातित प्रसार हुआ, पनघट का मार्ग छोड़कर महिलाओं ने भी शिक्षा केन्द्रों पर अपनी मजबूत उपस्थिति का एहसास करवाया एवं लड़कों से बराबरी करने में पीछे नहीं रही फलस्वरूप समाज में कुरीतियाँ तो घटने लगी, पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ने लगा। धन का स्रोत मिला तो आधुनिक व्यापार व उद्योग की प्रगति होने लगी। व्यापक रूप से समारोह में मद्यपान की स्वीकार्यता, नारी की अत्याधुनिक बनने की होड़ में शरीर के अंगों का प्रदर्शन, अमर्यादित खुलापन, बुजुर्गों के प्रति असम्मान, दिखावा, आडम्बर, फिजुल खर्ची भी बढ़ने लगी। बढ़ते तलाक बिखरते परिवार, प्रिवेडिंग, फोटोग्राफी आदि समस्याओं ने भी समाज के संगठनात्मक पौराणिक ढाँचे पर कुठाराघात कर रहा है। सम्मेलन, युवा मंच, महिला मंच ने भी अपनी भूमिका को आंदोलन के मार्ग से हटा कर वैचारिक मार्ग तक सीमित कर दिया है। परिणाम स्वरूप समाज के लोग उपदेशात्मक बातें को गंभीरता से नहीं लेते हैं। यह भी लेखक ने महसूस किया है कि जो उपदेश दे रहे हैं वे स्वंयम भी पालन नहीं करते हैं, फलस्वरूप विचार, प्रभाव हिन होते गये। इन विषयों पर सुंदर आलेख सभी मंच अपनी पत्रिकाओं में प्रकाशित करके कर्तव्य पूर्ण होना मान लेते हैं। अनेक शाखाओं के द्वारा भी मासिक या त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित होती है। जिसमें समाज सुधार की बातें नहीं के बराबर रहती है। मारवाड़ी समाज की संस्थाएँ लायन्स, रोटरी, जोसीज आदि संगठनों की संरचना से अधिक प्रभावित है। इसके अनेक सदस्य उन संस्थाओं से जुड़े हुए हैं फलतः सेवा कर्मो को ही संस्था का मुख्य उद्देश्य मानकर कार्य करते हैं। समय-समय पर समाज के विरुद्ध जो कुचक्र अवांछनीय अन्य समाज के तत्वों से हो रहे हैं उसके अग्रणीय विरुद्ध भूमिका में देखती है। बड़े बुजुर्ग सम्मेलन को फायर ब्रिगेड की संज्ञा देते थे। वे कहते हैं सम्मेलन की भूमिका कठिन परिस्थितियों में बहुत प्रशंसनीय रहती है। किसी भी प्रांत में मारवाड़ी समाज जब भी संकटमय स्थिति में होता है तो केन्द्रीय नेतृत्व सक्रिय रूप से कार्यवाही करने का प्रयास करता है। लेखक गत छह दशक से मारवाड़ी सम्मेलन से सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है एवं शाखा से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक नेतृत्व भी प्रदान करने का अवसर मिला है फलतः उन परिस्थितियों को स्वयं देखा है। असम का भाषा आंदोलन, या विदेशी नागरिकों के विरुद्ध आन्दोलन, अल्फा का आतंकवाद, सभी में मारवाड़ी समाज पर चोट हुई है, लोग शहीद हुए हैं, करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति का नुकसान हुआ, फिरोती के रूप में भी अल्फा ने जबरन बंदूक की नोक पर करोड़ों रुपये लुटे हैं और प्रशासन मुकदर्शक रहा है। सम्मेलन ने केन्द्रीय सरकार पर दबाव बनाकर परिस्थिति को संभालने के लिये प्रेरित करने का प्रयास करते रहा है।

आज राष्ट्रीय स्तर पर अधिकतर राज्यों में जहाँ प्रवाशी मारवाड़ी समाज बसता है वहाँ सम्मेलन अपनी उपस्थिति दर्ज करवाकर दायरे को विस्तृत रूप देने का भी काम किया है, लेकिन अभी भी उड़ान बाकी है। समुद्र लांघ कर विदेशों में रहनेवाले मारवाड़ी भाईयों को भी अपने संस्कार व संस्कृति की रक्षा के लिये जोड़ना समय की माँग है। देश में सर्वाधिक प्रवाशी मारवाड़ी समाज बंगाल में रहता है जहाँ केन्द्रीय नेतृत्व भी विराजमान है। इस विशाल मारवाड़ी समाज को अगर जोड़ने में सक्षम

(शेषांश पृः ३४)

With Best Compliments From:

Atmaram Sonthalia

23/24, RADHA BAZAR STREET (3RD FLOOR)

KOLKATA – 700 001

PH NO. – 033 22425889/7995

MOBILE NO. - 9831026652

महामंत्री का प्रतिवेदन

– संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री

सम्मेलन का गत स्थापना दिवस समारोह गत **२५ दिसम्बर २०२१** को **कला मंदिर सभागार**, कोलकाता मे मनाया गया था। उसके बाद के सम्मेलन के कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

१. गत २० जनवरी २०२२ को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कोलकाता स्थित पवनपुत्र बैंक्वेट हॉल में **मारवाड़ी विवाह डॉट कॉम** नामक वेबसाईट का विमोचन किया गया। वेबसाईट का उद्देश्य समाज के युवक-युवतियों के विवाह को सुगम और पारदर्शी बनाना है। विमोचन समारोह में सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में स्वयं मैंने और राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर बिदावतका ने भाग लिया।

२. गत २२ जनवरी २०२२ को सम्मेलन की **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति** की बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया के सभापतित्व में कोलकाता में आयोजित की गई।

३. गत २६ जनवरी २०२२ को ७३वें **गणतंत्र दिवस** पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भानीराम जी सुरेका ने राष्ट्रीय ध्वजोत्तोलन किया।

४. गत ०३ फरवरी २०२२ को सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में स्वयं मैंने एवं संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्रीद्वय श्री गोपाल अग्रवाल तथा श्री सुदेश अग्रवाल ने कोल इंडिया लिमिटेड के चेयरमैन **श्री प्रमोद जी अग्रवाल, आई.ए.एस.**, से कोलकाता स्थित उनके मुख्यालय में जाकर मुलाकात की और स्टार्टअपलेन्स देश के टॉप ४० सी.ई.ओ. में उनके नामित होने पर उन्हें राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा **प्रेषित-पत्र** सौंपा।

५. गत ०५ फरवरी २०२२ से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका ने गुवाहाटी का तीन दिवसीय दौरा किया।

६. गत १२ फरवरी २०२१ को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने कटक, ओड़िशा का संगठनात्मक दौरा किया। दौरे के दौरान एक बैठक का आयोजन भी हुआ जिसमें कटक एवं आसपास की शाखाओं के सदस्यों ने उपस्थित होकर राष्ट्रीय अध्यक्ष से विचार-विमर्श किया।

७. गत १३ फरवरी २०२२ को उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री ललित मोहन अग्रवाल का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। विनम्र - कृतज्ञ पुष्पांजलि।

८. गत २१ फरवरी २०२२ के अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं **राजस्थानी प्रचारिणी सभा** के संयुक्त तत्वावधान में **"मायड़भाषा : दशा और दिशा"** विषयक विचारगोष्ठी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया के सभापतित्व में, आयोजित की गई। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों श्री सीताराम शर्मा, श्री नंदलाल रुँगटा एवं श्री संतोष सराफ, अमेरिका से राजस्थानी एसोसिएशन के श्री शशि शाह, राँची से न्यायमूर्ति श्री रमेश मेरठिया सहित विद्वतजनों ने गोष्ठी को सम्बोधित किया। पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा सम्मेलन की मायड़ भाषा उपसमिति के चेयरमैन श्री रतन जी शाह ने गोष्ठी का संचालन किया।

९. गत १२ मार्च २०२२ को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया एवं मैने कोलकाता में आयोजित **अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन** के **२०वें राष्ट्रीय अधिवेशन** में शिरकत की।

१०. २१ मार्च २०२२ को दिल्ली स्थित **राष्ट्रपति भवन** में भारत के महामहिम राष्ट्रपति **श्री रामनाथ कोविन्द** ने सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** को **पद्मश्री** से नवाजा। गत २४ अप्रैल २०२२ को कोलकाता में अखिल **भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन** द्वारा **सीकर नागरिक परिषद** के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें काफी संख्या में समाज के लोग उपस्थित थे।

११. ०३ मई २०२२ को राजस्थान से पधारे विद्वान लेखक **डॉ. डी. के. टकनैत** का कोलकाता स्थित **सम्मेलन सभागार** में सम्मान किया गया, इस अवसर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने मारवाड़ियों के इतिहास एवं विभिन्न क्षेत्रो में उनके योगदान के दिवस में जानकारी उपलब्ध करवाने पर श्री टकनैत के प्रयासों की सराहना की।

१२. १६ मई २०२२ को बिहार गये राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया का **बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** द्वारा भव्य सम्मान किया गया तथा सम्मेलन की प्रासंगिकता विषय पर सुन्दर एवं सारगर्भित गोष्ठी रखी गई।

१३. ३१ मई २०२२ को कोलकाता स्थित सम्मेलन सभागार में जोधपुर से पधारे **माणक पत्रिका** के सम्पादक, पत्रकार **श्री पद्म मेहता** का सम्मान किया गया।

१४. गत ०५ जून को २०२२ **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति** की **पंचम बैठक**, **दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के सुन्दर आतिथ्य से दिल्ली के तेरापंथ भवन में आयोजित की गई, इस बैठक में १० प्रान्तों के अध्यक्ष अथवा महामंत्री की उल्लेखनीय उपस्थिति हुई।

ATiNdRA

ATINDRA CONSTRUCTION PVT. LTD.

One of the Leading EPC Constractors in India in the field of Micro Tunnelling, Horizontal Directional drilling, Auger Boring, Jack Pushing for cross country Petroleum, Gas & Oil, Water Sewerage Lines, City Gas, Under Ground Power Cable & Telecom Cables etc.

ATINDRA TOWER

BHASKAR SARAF - 9903014105
147 A Dakshinee Housing Society,
on E. M. Bye Pass, Metropolitan,
Kolkata-700 105
Phone : 033 4063 8150
Email: info@atindraconstruction.com
Email: marketing@atindraconstruction.com
Web: www.atindraconstruction.com

१५. दिल्ली प्रवास के दौरान ही राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय सम्मेलन के एक प्रतिनिधिमण्डल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया के नेतृत्व में लोकसभा स्पीकर **श्री ओम बिरला** से **शिष्टाचार** मुलाकात की तथा देश तथा समाज के कई विषयों पर चर्चा की।

१६. गत ०६ जून २०२२ को राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ पूर्व अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका, श्री कैलाशपति तोदी तथा मैंने उत्तराखण्ड का **दो दिवसीय दौरा** किया।

१७. गत १२ जून, २०२२ को **उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** की बैठक में शिरकत कराने हेतु मैं तथा श्री कैलाशपति तोदी सम्बलपुर पहुंचे। इस बैठक में श्री गोविन्द प्रसाद अग्रवाल पुनः बतौर **प्रादेशिक अध्यक्ष** चुने गये तथा उन्होंने पदभार ग्रहण किया।

१८. गत ०१ जुलाई २०२२ को ओड़िशा प्रान्त की **कटक शाखा** द्वारा रथयात्रा पर पुरी में आयोजित शिविर में भाग लेने हेतु कोलकाता से मैं तथा श्री कैलाश पति तोदी तथा उत्कल प्रान्त के अध्यक्ष श्री गोविन्द अग्रवाल सड़क मार्ग से पुरी पहुंचे, वहां पर मारवाड़ी युवा मंच द्वारा लगाये गये शिविर का निरीक्षण भी हमलोगों ने किया।

१९. ०२ जुलाई २०२१ से सम्मेलन की सहयोगी संस्था श्री हनुमान परिषद की तारकेश्वर – स्थित धर्मशाला में **अन्नपूर्णा रसोई** कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया था।

२०. १७ जुलाई को रांची में **झारखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** की **डायरेक्टरी** का विमोचन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने किया।

२१. असम दौरे के दौरान गत १८ जुलाई २०२२ को असम के राज्यपाल **प्रो. जगदीश मुखी** के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में मैंने तथा प्रांतीय पदाधिकारियों ने **शिष्टाचार मुलाकात** की। राज्यपाल से हुई इस सौहार्दपूर्ण मुलाकात में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने डिब्रूगढ़ में घटी **विनीत बगड़िया** आत्महत्या मामले पर असम के **मुख्यमंत्री** द्वारा उठाये गये कदमों की सराहना करते हुए इस तरह की घटनाओं की पुनरावृति पर रोग लगाने के लिए प्रशासनिक कदम उठाने की अपील राज्यपाल महोदय से की।

२२. ६ दिवसीय इस असम दौरे के दौरान गुवाहाटी स्थित मारवाड़ी अस्पताल, आठगांव चाबीपुल प्राथमिक विद्यालय व **गुवाहाटी गौशाला** का निरीक्षण किया गया। दौरे के दौरान गुवाहाटी, बरपेटा रोड, नगांव, गोलाघाट व जोरहाट, डिब्रूगढ़ में संगठन विस्तार तथा समाज सुधार पर बैठके आयोजित की गई। दौरे के क्रम में बंदरदोवा शाखा, लखीमपुर महिला शाखा, धेमाजी शाखा, शिलापथार शाखा, मोरान शाखा और तिनसुकिया शाखा के पदाधिकारियों के साथ भी बैठके हुई। डिब्रूगढ़ दौरा के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बदमाशों की धमकी के डर से आत्महत्या करने वाले ३२ वर्षीय **विनीत बगड़िया** के पिता से मुलाकात कर **संवेदना** व्यक्ति की।

२३. २१ जुलाई २०२२ को राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रयास के **डिमापुर** में नई शाखा खुली। साथ ही इम्फाल में भी शीघ्र शाखा खोलने का आश्वासन मिला।

२४. गत ०६ अगस्त को **विधिक (लीगल) उप समिति** की बैठक चेयरमैन श्री नंदलाल सिंघानया की उपस्थिति में सम्मेलन के केन्द्रीय सभागार में हुई।

२५. गत १७ सितम्बर २०२२ को कोलकाता स्थित केंद्रीय सभागार में एक वेबीनार का आयोजन श्री शिव कुमार लोहिया एवं श्री दिनेश जैन के प्रयास से **मारवाड़ी समाज व वर्तमान परिपेक्ष** विषय पर किया गया। जिसके मुख्य वक्ता समाजसेवी, सलाहकार, कवि व लेखक **श्री वीरेन्द्र मेहता** थे।

२६. गत १८ सितंबर २०२२ को वार्षिक साधारण सभा की बैठक केंद्रीय सम्मेलन सभागार, कोलकाता में आयोजित की गयी।

२७. गत ७ से ८ अक्टूबर २०२२ को राजस्थान फाउंडेशन (राजस्थान सरकार) द्वारा जयपुर में **इंवेस्ट राजस्थान** एवं **एनआरआर कांन्क्लेव** का आयोजन किया गया। जिसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका एवं दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने भाग लिया।

२८. गत २८ अक्टूबर २०२२ को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया की अध्यक्षता में **दीपावली मिलन समारोह** का सुन्दर आयोजन कोलकाता के आयरन साइड रोड में किया गया।

३०. जम्मू कश्मीर के डीजीपी (जेल) **श्री हेमंत कुमार लोहिया** की हत्या विगत ०३ अक्टूबर २०२२ को की गयी थी। १९ नवंबर २०२२ को गुवाहाटी में स्व. लोहिया के बड़े भाई श्री प्रेम कुमार लोहया से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया तथा राष्ट्रीय महामंत्री सहित प्रादेशिक अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, महामंत्री श्री अशोक अग्रवाल के नेतृत्व में एक **प्रतिनिधिमण्डल** ने मुलाकात कर **भावभीनी श्रद्धांजली** दी। स्व. लोहिया के बड़े भाई ने इस हत्या के कारणों की जांच की माग की।

३१. १९ नवंबर २०२२ को गुवाहाटी में मारवाड़ी समाज के एकमात्र मंत्री श्री अशोक सिंघल से राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में प्रतिनिधिमण्डल ने मुलाकात की तथा देश व समाज के कई विषयों पर उनके साथ विस्तृत विचार-विमर्श हुआ।

३२. १९ नवंबर २०२२ से दो दिवसीय गुवाहाटी दौरे के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया ने गुवाहाटी समाज की महिलाओं के एक वर्ग के साथ सार्थक बैठक की तथा सम्मेलन की गतिविधियों क बारे में विचार-विमर्श किया।

३३. गत २० नवंबर २०२२ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की **अखिल भारतीय समिति** की वर्तमान सत्रकी **चतुर्थ बैठक पूर्वोतर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन** के आतिथ्य में गुवाहाटी में आयोजित की गयी।

३४. गत २० दिसंबर २०२२ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के वर्तमान सत्र की सप्तम बैठक छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अति सुन्दर आतिथ्य में रायपुर में आयोजित की गयी।

प्रादेशिक चुनाव :

झारखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के चुनाव में **श्री बसन्त मित्तल** अगले सत्र के लिए **प्रादेशिक अध्यक्ष** निर्वाचित हुए तथा उन्होंने झारखंड के राज्यपाल **श्री रमेश वैस** एवं पूर्व मुख्यमंत्री **श्री रघुवर दास** जी की गरिमायुक्त उपस्थित में **प्रादेशिक अध्यक्ष** का पदभार ग्रहण किया।

श्री श्याम सुंदर अग्रवाल, **केरल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के अध्यक्ष पुनर्निर्वाचित।

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के लिए श्री लक्ष्मीपत भुतोड़िया अध्यक्ष पद के लिए पुनर्निर्वाचित।

कानपुर के श्री गोपाल तुलस्यान, **उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के **प्रांतीय अध्यक्ष** निर्वाचित, पदभार किया ग्रहण।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद के चुनाव के बाद **श्री जुगल किशोर अग्रवाल** अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष के पदत्याग के बाद नये अध्यक्ष के लिए चुनाव करवाने हेतु संविधान के अनुसार, **श्री शिव कुमार लोहिया** के नेतृत्व में ७ सदस्यीय **तदर्थ समिति** का गठन किया गया है।

उत्तराखण्ड में नये अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है।

संगठन विस्तार :

२१ नवम्बर २०२० से शुरु हुए राष्ट्रीय सम्मेलन के वर्तमान सत्र पूरे देश में अब तक ४७ **विशिष्ट संरक्षक**, १७ **संरक्षक एवं** २५४७ **आजीवन** यानि कुल **२६११ नये सदस्य** बने हैं। इस अवधि में संगठन विस्तार में **बिहार** (१२६८) तथा **झारखंड** (७४०) एवं **पूर्वोत्तर** (२४३) प्रादेशिक शाखाओं की अग्रणी एवं प्रशंसनीय भूमिका रही है।

उच्च शिक्षा कोष :

मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन से प्राप्त सूचना के अनुसार, **उच्च शिक्षा कोष** से अब तक देश के विभिन्न भागो, के छात्र-छात्राओं को **०३ करोड़ ५१ लाख ५१ हजार** की राशि अनुदान के रूप में दी जा चुकी है। इसमें से वित्तीय वर्ष **२०२२-२३** में **१३ लाख** ९२ **हजार** रुपयों की राशि आवंटित की गई है। अब तक **११६ छात्र-छात्राओं** ने जिन कोर्सों के लिए अनुदान दिया गया, वे पूरे कर लिए है और **२५ छात्र-छात्राएँ** कोर्स कर रही है।

रोजगार-सहायता :

रोजगार सहायता उपसमिति के चेयरमैन **श्री दिनेश जैन** से प्राप्त सूचना के अनुसार, अब तक **२२६ युवक-युवतियों** को रोजगार उपलब्ध कराया जा चुका है और ०५ आवेदन प्रक्रियाधीन है।

सम्मेलन की **वेबसाईट** को अपडेट करने एवं इस पर आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध करा इसके आधुनिकीकरण का काम सूचना–तकनीक एवं वेबसाईट उपसमिति के चेयरमैन **श्री कैलाशपति जी तोदी** की देखरेख में किया गया है, अगर कोई सुझाव या संशोधन हो तो उसका स्वागत है।

राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु **एस.आर. रूँगटा ग्रुप** के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित **"सीखो राजस्थानी - सहज राजस्थानी व्याकरण"** नामक पुस्तक अब तक पूरे देश में करीब **३५ हजार** लोगों को भेजी जा चुकी है।

भावी कार्यक्रम

संगठन विस्तार : पंजाब एवं हिमाचल में प्रादेशिक शाखाओं की स्थापना, निष्क्रिय शाखाओ को सक्रिय करना, सदस्यों की संख्या अधिकाधिक बढ़ाना।

(पृ: २९ का शेषांश)

सम्मेलन आठ दशक पूर्व और आज

है। हम विशाल मारवाड़ी समाज को अगर जोड़ने में सक्षम हुए तो सम्मेलन की गतिविधियाँ बहुत अधिक बढ़ सकेगी। वहाँ कार्यकर्ताओं की फौज भी मौजुद है मगर वे अन्य संस्थाओं के साथ संगलिप्त है।

मेरा मानना है भारतवर्ष में मारवाड़ी समाज ने जितनी सेवा का कार्य किया है उसकी बराबरी कोई दूसरा समाज नहीं कर सकता, लेकिन इस बात को हम देश के बुद्धिजीवी, राजनैतिज्ञों, समाज शास्त्रियों तक पहुँचाने के लिये अन्वेषण करके ग्रंथ में पिरोकर प्रस्तुत करने पर हमारा आंकलन सही मायने में हो सकेगा। इस दिशा में लेखक ने पूर्वोत्तर राज्यों को आधार बनाकर खोजपूर्ण इतिहास लिखकर प्रकाशित किया था, जिसका विमोचन भी हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन जी गाड़ोदिया जी ने किया एवं दिल्ली में लोकसभा के अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला ने किया एवं सभी को ज्ञात हुआ असम के मारवाड़ी समाज की अभुतपूर्व सेवा कार्य के बारे में। इस ग्रंथ की भूरी-भूरी प्रशंसा भी हुई है। लेखक का मानना है कि सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार का ग्रंथ कई खण्डों का तैयार करने की मानसिकता बनाये। धन और समय देने वाले समाज में लोग हैं–विचार, मन्थन के उपरांत निर्णायात्मक कदन उठाने की जरूरत है। यह कदम सम्मेलन के इतिहास में मिल का पत्थर साबित होगा।

बधाई !

हाल ही में कलकत्ता पिंजरापोल सोसायटी के प्रधान सचिव श्री पवन टीबड़ेवाल की सुपुत्री सौभाग्यकांक्षिणी दिशा के शुभ विवाह अवसर पर फेरा मंडप के पास में ही गौ माता अपने बछड़े के साथ खड़ी थी। श्री टीबड़ेवाल ने बताया कि गौ माता हमारे परिवार की ही अंग है इसलिए विवाह अवसर पर सम्मिलित होने के लिए वहां उपस्थित है। संस्कृति संस्कार के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करने के निए समाज विकास की ओर से टीबड़ेवाल परिवार को हार्दिक बधाई।

With Best Compliments from:
ROAD CARGO MOVERS PVT. LTD.
Head Office:
1, Gibson Lane, 2nd Floor
Suite-211, Kolkata-700069
Phone: 22103480, 22103485
Fax: 22319221
Email: roadcargo@vsnl.net
Branches & Associates:
Guwahati, Siliguri, Durgapur, Haldia, Kharagpur, Balasore, Bhubneswar, Cuttuck, Iccapuram, Vishakapatnam, Vijaywada, Hyderabad, Chennai, Bangalore, Cochin, Gaziabad (U.P. Border), Indore

With Best Compliments from:-

Mironda Group of Companies

MIRONDA
MINMETALS PVT. LTD.

(A STAR ★ EXPORT HOUSE)

RS FINANCE PVT. LTD.
MALVIKA COMMERCIAL PVT. LTD.
MERCURY INTERNATIONAL

&

DWARKADAS SITARAM SHARMA TRUST

Head Office: 37, Shakespeare Sarani, SB Towers, 3rd Floor
Kolkata – 700 017 Tele: (033) 2289 5400 / 5403

Branch Office: 2A, Chowringhee Square, Tower House, 2nd Floor
Kolkata – 700 069 Tele: (033) 2242 9002 / 2262 9002

Email: info@mirondagroup.com; accounts@mirondagroup.com

Yours Tastefully
Anmol
हर पल अनमोल
हर घर अनमोल
www.anmolindustries.com | Follow us on:

With Best Compliments From :

Bhaniram Sureka and his family along with Vice President of India Hon'ble SHRI JAGDEEP DHANKHAR when he was Governor of West Bengal along with his wife Smt. Sudesh Dhankhar

Dr. Bhaniram Sureka Along with Shri Amitabh Bachchan

The Academy of United Nation Organisation Geneva awarded Honorary Doctorate Award to Dr. Bhaniram Sureka, in the presence of Famous Personalities at HHI on 6th April, 2019.

Courtesy:

ROADWINGS INTERNATIONAL PVT. LTD.

8 CAMAC STREET, KOLKATA – 700017

Email: roadwingsinternational@gmail.com

शिवा प्रिंट्स प्राइवेट लिमिटेड

सभी प्रकार के पाइप निर्माता

HDPE Pipe

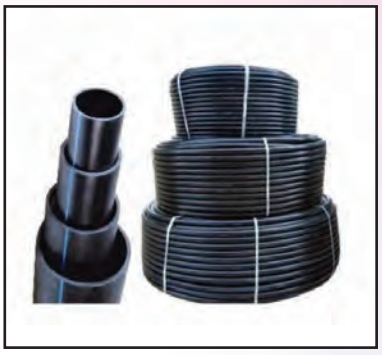

IS 4984:2016

Quick coupled sprinkler system

IS: 14151 (Pt-2)

MDPE Gas Pipe

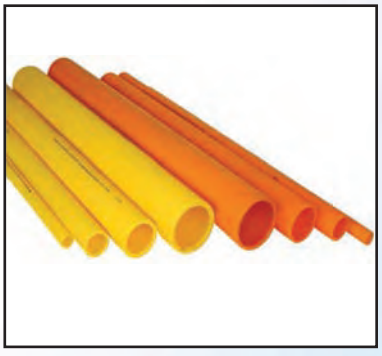

IS 14885:2001

HDPE Pipe for sewerage

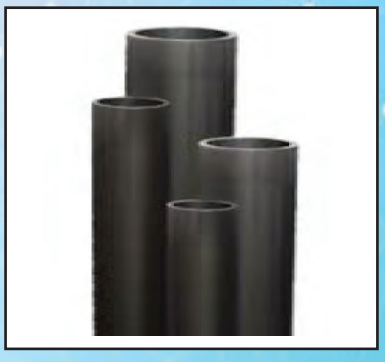

14333:1996

With Best Compliment

SHIVA PRINTS PRIVATE LIMITED

RANCHI-03

SINCE 1974
ayaan
BY
VIPUL
Anil Agarwal Group
Ayaan Trenddz Pvt Ltd
Tel. +91 261 4010401, 2321231
Follow us on :
ETHNIC WEAR
FUSION WEAR
FABRICS

AMUL
COMFY
Ab Raho Comfy!

88वें स्थापना दिवस की
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

JGH
JG HOSIERY PVT. LTD.

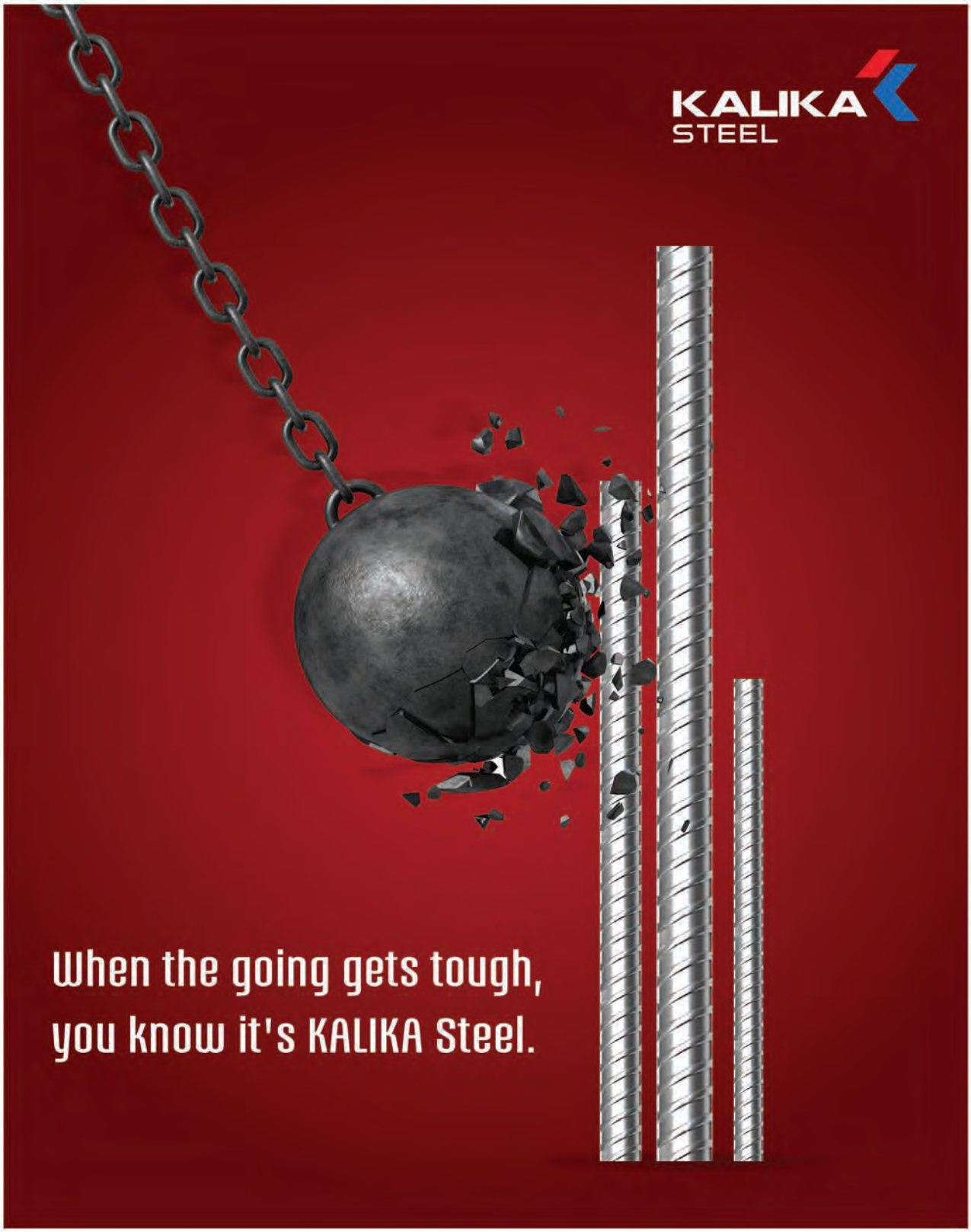

KALIKA STEEL
When the going gets tough,
you know it's KALIKA Steel.
KALIKA STEEL ALLOYS PVT.LTD.
follow us on
C 7-11 Additional MIDC, Phase I, Jalna 431 213, Maharashtra.
Tel: +91 - 2482 - 258 151/52/53.
Toll Free No: 1800 233 9898
Sales@kalikasteels.com | www.kalikasteels.com

९वें दशक स दो पग दूर आपणो सम्मेलन

– संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

बयां तो अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन री खूबियां बखान करणै री आ टेम कोणी। क्यूंकै जितो काम होणो चाहे हो, बो आज तक म्हें कोणी कर सक्या। लेकिन जद बात स्थापना दिवस री आवै है तो क्यूँ तो आयांलकी बात भी होणी ही चाहिजै जिकै से यो माळूम पड़ै क ८७ बरसां रो इत्तो लम्बो गेळो तै करणै हाळी संस्था री जड़ कत्ती मजबूत ह।

१९३५ मांय जन्म ळैणे हाळी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, जिकै न अंग्रेजी मांय ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन कह्यो जावै ह, री शाखावां आज उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम तांय फैल राखी है। १८ प्रांत अर करीब २७५ शाखावाँ, ३० हजार रै करीब सदस्य। गर्व कर भी सकां हाँ, कोणी भी कर सकां। गर्व ई वास्तै क ए जो प्रांत अर शाखावां ह, ए ही सम्मेलन रा प्राण है। इनाकै बिना सम्मेलन क राष्ट्रीय स्वरूप रो कोई मोळ कोणी। अर दूसरी काणी देखां तो करीब ९-१० करोड़ री संख्या हाळै मारवाड़ी समाज (अेक आंकलन क अनुसार) री अेकमात्र प्रतिनिधि संस्था रा मात्र करीब ३० हजार सदस्य। हाँ, या गर्व करणै ळायक बात तो कोणी।

लेकिन जै ळारळै १३-१४ साल पीछे जावां तो या संख्या मात्र ५-६ हजार ही थी। बठै से करीब ५०० प्रतिशत री बढ़ोतरी होणी, कठे-न-कठे मन मांय संतोष भी देवै ह, क्यूंकै मन मांय अेक आस जगा राखी ह क जल्द ही या संख्या १ लाख तो पूंगेगी ही। अेक कहावत ह क १ से १०० तक पूंगणै मांय भोत टेम लागै, १०० से १००० तक बीसे कम अर १००० स १०००० तक मिनख जल्दी पूग जावै।

ळारळे क्यूं बरसां मांय राष्ट्रीय अध्यक्षां री सक्रियता सैं सम्मेलन क संगठन विस्तार रो भोत बडो काम हो रहयो ह। समाज सुधार अर समाज सेवा तो सगळा ही प्रांत कर रह्या ह, लेकिन संगठन नै बढ़ाणै अर समाज रा नया-नया लोगां नै सम्मेलन स जोड़णै री दिशा मांय प्रांत अर शाखावां महती भूमिका रो पाळन कर री है। इकै वास्तै बे साधुवाद री पात्र तो है ही, प्रणम्य भी है।

ळारळै ई कैंई बरसां मांय राष्ट्र रा पदाधिकारी हो या प्रांत रा, दौरा भोत करणै लागा। समाज र लोगां र कणै गांव-गांव जाणो, बांसे मिळणो, सम्मेलन रे बारे मांय बताणो, बांकी तकळीफ मांय सागै खड्यो होणो, आछा काम करणै हाळा रो सम्मान करणो, अयांलका केई कारण है क लोग सम्मेलन स जुड़णे म खासी रूचि दिखावा लागा। पैळी कैता क प्यासो कुंवे क कणै जावे ह, पर अब या बात जरूर बोल सकां हां क कुंवो प्यासे क कणै जा रह्यो ह जिकै स सम्मेलन की जड़ां भोत ज्यादा मजबूत होती जा री है।

दक्षिण भारत जयांलके अहिन्दी भासी राज्यां कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, तेलंगाना मांय भी सम्मेलन आगे बढ़ रह्यो ह। लेकिन अबार भी भोत जरूरत है। अर कैई प्रांत तो अयांलका ह जठै नाम मात्र रा ही सम्मेलन रा सदस्य ह। शाखावां बी कोणी। बठै प्रयास मांय कमी दिख री है। हालांकि मारवाड़ी समाज के अलग-अलग जातां म बंटणै स भी आपणो समाज कमजोर ही होयो है, यो कह्यो जा सकै ह।

आज आपणो समाज कैंई मायणे म भोत आगे बढ़गो, बच्चां भोत पढ़ै लागा, बडोड़ी कम्पनियां मांय बडै पदां पर नौकरी मिळै लागी, सरकारी अफसर भी बणणे लागगा, आपरी बुद्धि अर मेहनत स व्यापार मांय भी उन्नत्ति कर रह्या है, पीसा भी आछा कमावे लागा। यो तो सब ठीक ही है, पर भोत बडी चिन्ता री बात या है क संस्कार खतम होवै लागा। घर रा बडेरा न तो निरा मूरख ही समझै लागा अर खुद तिरसण जी बणगा। यो आणै हाळी टेम क खातर भोत खराब होणै हाळो ह।

टेम स टाबरां रो ब्याह नीं करणौ या होणो समाज क लिए आछी बात कोणी। अबार स इको असर तो दिखै लाग्यो ह, पर कम ह। आणै हाळै कैंई बरसां मांय समाज कठै जासी, बोळणो भोत मुश्किल लाग रह्यो ह।

मेरो तो योही कैणो ह क टाबरपणै स बच्चा न प्यार क सागै-सागै संस्कार री सीख भी देतो रैणो चाहिजै, माँ-बाप अर घर रा बडेरा रो सम्मान करणै री सीख देणी चाहिजै। आज तो आश्चर्य इ बात पर हौवे है क जै कोई जवान टाबर आपरे माँ-बाप स डरै है तो लोगां न आश्चर्य होवे लागे क इ जमाणे मांय भी टाबर डरै है? अब इ सै ही आपां ओ देख अर सोच सकां हाँ ह क आपणे समाज री सोच कठे जा री है।

अंत मांय यो ही कै सकूँ हूँ क आपणो जमारो तो जैयां-तैयां कट जासी, पण जो सीख आपां टाबरां नै आंधे प्यार मांय दे रह्या हाँ, बो बारै ही पतन रो कारण भी बनतो जा रह्यो ह।

With Best Compliments From:

GW

Gauhati Tea Warehousing (P) Ltd.

G.S. ROAD, CHRISTIANBASTI, GUWAHATI
A leading, Reliable & Trustworthy Tea Warehouse
Approved & Licensed by Tea Board, India & Guwahati Tea Auction Committee
for safe & Scientific Storage of Auction Teas.

Registered Office:
Shreeji Tower, House No.183, G.S. Road, Christian Basu, Guwahati-781006
Email: gteaw1@gmail.com, Phone: 0361 2346808

Administrative & Warehouse Office:
Tripura Road, Maidamgaon, Beltola, Guwahati-781 028
Phone : 99544 99031, 0361 2226013

Kolkata Branch Office:
135A, Biplabi Rash Behari Basu Road, Kolkata-700 001
Phone: 8617257267

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन – सफरनामा

– ओम प्रकाश खण्डेलवाल
अध्यक्ष, पूर्वोत्तर प्रा.मा.स.

सर्वप्रथम हम अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ८८वें स्थापना दिवस पर शुभकामनाएं प्रकट करते हैं।

दिनांक ३ जनवरी २०२१, रविवार का दिन था, वर्तमान प्रान्तीय कार्यकारिणी २०२१-२३ ने श्रीमान् ओम प्रकाश जी खण्डेलवाल के नेतृत्व में शपथ ग्रहण की। चूँकि कोरोना का प्रथम चरण समाप्त हुआ था, फिर भी कोरोना प्रोटोकोल के चलते शपथ ग्रहण समारोह Physical के साथ-साथ zoom पर भी आयोजित किया गया।

कार्यकाल की पूरी तरह शुरुआत हो चुकी थी। मंडल 'क' का दौरा कर माकुम, पानीतोला, दुमदुमा, मार्घेरिटा, डिगबोई आदि शाखाओं को सक्रिय करने की कोशिश की जा रही थी कि कोरोना की द्वितीय लहर आ गई। ऐस में मारवाड़ी सम्मेलन ने मोर्चा संभाला। हमारी अधिकतर शाखाओं ने सरकारी सहयोग से वैक्सीनेशन कैम्प लगाये तथा लाखों लोगों को वैक्सीन दी। इसके साथ ही घरों में सुबह - शाम खाना पहुंचाना, गरीब परिवारों को राशन वितरण करना, जगह-जगह फंसे लोगों को खिचड़ी आदि खिलाना शुरू किया। इसके अलावा अस्पतालों में तथा जरूरतमंद व्यक्ति को ऑक्सीजन सिलेन्डरों को आपूर्ति, मरीजों को ब्लड उपलब्ध कराना, जैसे काम भी सम्मेलन के साथियों ने पूरे प्रान्त की शाखाओं के माध्यम से किये। इन कार्यों को न केवल मारवाड़ी समाज ने, बल्कि असमिया एवं अन्य समाज ने खुले मन से प्रशंसा की। इसी संबंध में दिनांक १४ जून २०२१ को असम के माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमन्त विश्व शर्मा से भी सम्मेलन पदाधिकारियों ने मुलाकात की तथा उन्होंने भी कोविड महामारी में सम्मेलन द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा की।

संगठन विस्तार -

जब इस कार्यकारिणी ने भार ग्रहण किया था, प्रान्त में केवल ३२ शाखाएं ही थी। आज हमारे पूर्वोत्तर प्रान्त में ५८ शाखाएं कार्यरत है तथा आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमारे कार्यकाल की समाप्ति तक हम इसे ६० से अधिक ले जाने में सफल होंगे। इसी प्रकार सत्र के आरंभ में प्रान्त में कुल आजीवन सदस्य ३७९० थे, जो आज बढ़कर ४५०० हो गये हैं। यह कार्य संगठन विस्तार समिति के संयोजक श्री बीरेन अग्रवाल एवं श्री विमल अग्रवाल के प्रयासों से चल रहा है तथा कार्यकाल के अन्त तक आजीवन सदस्यों को संख्या में और बढ़ोतरी की उम्मीद है।

साहित्य सृजन

साहित्य सृजन के क्षेत्र में हमारे प्रान्त में बहुत कार्य हुआ है। साहित्य सृजन उप समिति संयोजक श्रीमान् उमेश जी खण्डेलिया के योजन में ग्रन्थ लेखन, प्रकाशन एवं विमोचन के कार्य कर रही है।

दिनांक २७ जून २०२१ को '**असम की मारवाड़ी जाति का इतिहास**' नामक पुस्तक का जूम के माध्यम से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्द्धन प्रसाद गाड़ोदिया के द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त मारवाड़ी समाज के कई विशिष्ट समाज सेवकों के जीवन चरित्र पर आधारित '**कीर्तिमन्त**' नामक पुस्तक का प्रकाशन कराकर इसका विमोचन असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष द्वारा किया गया। असमिया साहित्यकारों द्वारा लिखित पुस्तक '**असम का मारवाड़ी समाज**' का प्रकाशन एवं विमोचन भी इस समिति द्वारा किया गया।

सम्मेलन समाचार का प्रकाशन

हमारे प्रान्त का मुखपत्र है '**सम्मेलन समाचार**'। हम '**सम्मेलन समाचार**' का नियमित प्रकाशन कर रहे हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

सांस्कृतिक क्षेत्र में हमारे प्रान्त की कामरूप शाखा के आतिथ्य में तथा इस समिति के संयोजक श्री पवन पसारी की देख रेख में एक खोज प्रतिभा की...(Season) कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसके अंतर्गत पूरे प्रान्त से नृत्य एवं गायन के क्षेत्र में प्रतिभाओं की खोज कर उन्हें पुरस्कृत किया गया है।

दौरों का आयोजन

शाखाओं को सक्रियता बरकरार रखने के लिए प्रान्तीय पदाधिकारियों के दौरे अति आवश्यक है। हमने इस कार्यकाल में प्रायः प्रायः सम्पूर्ण प्रांत की शाखाओं का दौरा किया है।

महत्वपूर्ण दिवसों का पालन

प्रांत की अनेक शाखाओं ने प्रान्त द्वारा निर्धारित कार्यक्रम जैसे होली/दीवाली प्रीति सम्मेलन, पर्यावरण दिवस, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, मायड़ भाषा दिवस, शिल्पी दिवस आदि के पालन के साथ-साथ सम्मेलन के स्थापना दिवस का भी पालन किया। स्थापना दिवस के अवसर पर प्रायः सभी शाखाओं ने समाज के बुजुर्गों का सम्मान किया। इसके अलावा असमिया समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को भेंट प्रदान कर सम्मान संवर्धन किया। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में प्रान्तीय अध्यक्ष सहित अनेक पदाधिकारियों ने उपस्थित होकर शाखाओं में एक नई ऊर्जा का संचार किया।

असमिया समाज के उत्सवों का पालन

इतर समाज के साथ समन्वय स्थापित करने की दृष्टि से हमारे प्रान्त की अनेक शाखाओं में विहु कार्यक्रमों का पूरी तरह से असमिया पद्धति से आयोजन किया। अहोम सेना के सेनापति वीर लाचित फुकन की ४००वी जन्म जयन्ती का पालन पूरे असम के साथ-साथ हमारी शाखाओं ने भी किए। डिब्रूगढ़ शाखा ने तो हमारे समाज के एक सदस्य श्री विवेक जालान द्वारा लिखित एवं

निर्देशित नाटक 'महावीर लाचित फुकन' का भी मंचन किया। इसके अलावा शिल्पी दिवस, राभा दिवस के पालन के साथ-साथ सुप्रसिद्ध गायक एवं 'भारत रत्न' भूपेन हजारिका की पुण्य तिथि पर भी शाखाओं द्वारा कार्यक्रमों का आयोजन किया।

सभाओं का आयोजन

वर्तमान कार्यकाल के दौरान अभी तक कुल ६ प्रान्तीय कार्यकारिणी की सभा आयोजित की जा चुकी है, जो क्रमशः डिब्रूगढ़, कामरूप, जोरहाट, तिनसुकिया, बंगाईगाव एवं गुवाहाटी महिला शाखा के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। इसके अलावा एक प्रान्तीय सभा का आयोजन भी किया गया, जो नगांव शाखा के आतिथ्य में संपन्न हुई।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय समिति की चतुर्थ बैठक का आयोजन हमारे प्रान्त के आतिथ्य में दिनांक २० नवम्बर २०२२ को हुआ। जिसमें देश के अनेक हिस्सों से सम्मेलन के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित हुए।

इसके अलावा जुलाई २०२२ में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा भी पूर्वोत्तर प्रान्त का सात दिवसीय दौरे का कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसके अन्तर्गत प्रान्त की अनेक शाखाओं ने संवाद के मध्यम से सक्रिय रूप से भाग लिया। इस दौरे से प्रांत में एक नयी जागृति उत्पन्न हुई।

समाज की एकजुटता का प्रयास

हमारा समाज विभिन्न घटकों में बंटा हुआ है। हमने अपने इस कार्यकाल में सभी घटकों को एक छतरी के नीचे लाने का प्रयास किया है। इस हेतु सभी जातिगत संस्थाओं से यह अपील की गई है कि वे अपने बैनर में अपनी संस्था के नाम के नीचे (A unit Marwari Society) या मारवाड़ी समाज की एक संस्था जरूर लिखे।

अवान्छित संगठनों द्वारा दुर्व्यवहार के विरुद्ध कार्रवाई

असामाजिक तत्वों द्वारा समाज के दूर-दराज स्थानों में निवास करने वाले व्यापारियों तथा व्यक्तियों को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने तथा उनसे दुर्व्यवहार किये जाने पर सरकार को ज्ञापन-पत्र प्रदान कर प्रशासनिक अधिकारियों के माध्यम से उचित कार्रवाई करने तथा कड़ा कदम उठाने में सम्मेलन ने सफलता हासिल की।

आनन्द शर्मा रैगिंग केस

विगत २७ नवम्बर २०२२ को डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के एक छात्रावास में आमगुड़ी निवासी आनन्द शर्मा की रैंगिंग का मामला सामने आया। आरोपी छात्रों द्वारा इतना अधिक शारीरिक एवं मानसिक अत्याचार किया गया कि पीड़ित छात्र आनन्द शर्मा को जान बचाने के लिए छात्रावास की द्वितीय तल्ले से कूद जाना पड़ा। इस कारण उसके शरीर में अनेक जगह चोटें आयी। रीढ़ की हड्डी में भी चोंट आयी। फलस्वरूप उसे डिब्रूगढ़ के आदित्य अस्पताल में भर्ती कराया गया। सम्मेलन ने तत्काल शिक्षा मंत्री तथा मुख्यमंत्री को इस घटना से अवगत कराकर तुरंत सख्त कार्रवाई करने का अनुरोध किया।

इसी विषय की संपूर्ण जानकारी लेने हेतु प्रांतीय महामंत्री श्री अशोक अग्रवाल गुवाहाटी से दिनांक १ दिसम्बर २०२२ के डिब्रूगढ़ के आदित्य अस्पताल पहुंचे। उनके साथ मंडलीय उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र अग्रवाल, डिब्रूगढ़ शाखा मंत्री श्री लखी जाजोदिया, श्री महेश जैन, श्री शैलेश जैन एवं श्री अनिल पोद्दार भी थे।

प्रांतीय महामंत्री ने पीड़ित के माता-पिता एवं अन्य परिवारजनों से मुलाकात कर उन्हें हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया। उन्होंने डिब्रूगढ़ के ADC श्री जीतू दास से भी मुलाकात की तथा प्रशासन द्वारा उठाये गये कदमों की सराहना भी की।

प्रान्तीय महामंत्री ने आदित्य अस्पताल के एम.डी. श्री निर्मल जी साहेवाला से भी मुलाकात की तथा पीड़ित आनंद शर्मा के स्वास्थ्य की जानकारी ली, जिनका सफलतापूवर्क ऑपरेशन संपन्न हुआ। उसके पश्चात प्रांतीय महामंत्री ने विभिन्न टीवी चैनलों को इंटरव्यू भी दिया तथा आनन्द शर्मा के इलाज एवं दोषियों के खिलाफ प्रशासन द्वारा की गई कार्रवाई पर संतोष जताया। इस घटना के पश्चात सरकार ने सभी स्थानों पर रैगिंग के मामले में जांच शुरु कर कड़ी कार्रवाई करने का आदेश दिया।

धन्यवाद।

नारी शिक्षा : हमारी अधूरी कहानी

– डॉ. सुभाष अग्रवाल
अध्यक्ष, कर्णाटक, प्रा.मा.स.

नारी के विषय में हमारे विद्वानों और विचारकों ने अलग-अलग विचार प्रस्तुत किए है। गोस्वामी तुलसीदास ने नारी के अन्तर्गत बहुत प्रकार के दोषों की गणना की थी। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा कहा गया कि नारी का सद्चरित्र और उज्ज्वल चरित्र का उद्घाटन नहीं करता है, अपितु इससे नारी के दुष्चरित्र पर ही प्रकाश पड़ता है। गोस्वामी तुलसीदास ने साफ-साफ कहा था कि नारी में आठ अवगुड़ सदैव रहते है। उसमें साहस, चपलता, झूठापन, माया, भय, अविवेक, अपवित्रता और कठोरता खूब भरी होती है। चाहे कोई भी नारी क्यों न हों।

नारी शिक्षा का महत्व साहस, अमृत, चपलता, मायज्ञं
भय, अविवेक, असौच, अदायज्ञं

इसलिए तुलसीदास ने नारी को पीटने के लिए कहा –

ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।।

अगर तुलसीदास ने मनुस्मृति की उस शिक्षा पर ध्यान दिया होता, तो वे ऐसी कठोर वाणी का प्रयोग नहीं करते। मनु महाराज संसार के सच्चे चिंतक थे। इसीलिए उन्होंने मानवता को सबसे पहले महत्व और स्थान दिया था। नारी को श्रद्धापूर्वक देखते हुए उसे देवी के रूप में मान्यता प्रदान की थी–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।

अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवगण निवास करते है। इसी से प्रभावित होकर कविवर जयशंकर प्रसाद ने कहा था–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पगतल में।
पियूष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

इतना होने पर भी नारी के प्रति अन्याय और शोषण कार्य चलता रहा, जिसे देखकर महान राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने कहा–

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
ऑचल में हैं दूध और आंखों में पानी।।

नारी के प्रति उपेक्षा का क्या कारण रहा? इसके उत्तर में हम यह कह सकते है, कि हमने अपने शास्त्र, संस्कृति, सभ्यता आदि को एकदम भुला दिया है और अंधाकरण से हमने काम लिया है। हमने नारी के गुणों को पहचानने की कोशिश नहीं की। हमने यह समझा कि नारी एक परम मित्र और मंत्रणा के लिए प्रतिमूर्ति है। वह पति के लिए दासी के समान सच्ची सेवा करने वाली है। माता के समान जीवन देने वाली अर्थात रक्षा करने वाली है। रमण करने के लिए पत्नी है। धर्म के अनुकूल कार्य करने वाली है। पृथ्वी के समान क्षमाशील है। आज के युग में नारी कितनी सुशील और शिष्ट क्यों न हो, अगर वह शिक्षित नहीं है, तो उसका व्यक्तित्व बड़ा नहीं हो सकता, क्योंकि आज का युग प्राचीन काल को बहुत पीछे छोड़ चुका है। आज नारी पर्दा और लज्जा की दीवारों से बाहर आ चुकी है, वह पर्दा प्रथा से बहुत दूर निकल चुकी है। इसलिए आज इस शिक्षा युग में अगर नारी शिक्षित नहीं है, तो कोई तालमेल नही हो सकता। ऐसा न होने से वह महत्वहीन समझी जाएगी, इसीलिए आज नारी को शिक्षित करने की तीव्र आवश्यकता को समझकर इस पर ध्यान दिया जा रहा है।

नारी शिक्षा का महत्व निर्विवाद रूप से मान्य है। वह बिना किसी तर्क या विचार विमर्श के ही स्वीकार करने योग्य है, क्योंकि नारी शिक्षा के परिणामस्वरूप ही पुरुष के समान आदर और सम्मान का पात्र समझी जाती है। यह तर्क किया जा सकता हैं, कि नारी प्राचीन काल में शिक्षित नहीं होती थी। वह गृहस्थी के कार्यों में दक्ष होतीं हुई पति परायण और महान पतिव्रता होती थी। इसी योग्यता के फलस्वरूप वह समाज मे प्रतिष्ठित देवी के समान श्रद्धा और विश्वास के रूप में देखी जाती थी, लेकिन हमें यह सोचना विचारना चाहिए कि तब के समय नारी शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं थी। तब नारी नर की अनुगामिनी होती थी, यही उसकी योग्यता थी, जबकि आज उसकी योग्यता शिक्षित होना है।

आज का युग शिक्षा के प्रचार–प्रसार से पूर्ण विज्ञान का युग है। आज अशिक्षित होना एक महान अपराध है। शिक्षा के द्वारा ही जैसे पुरुष किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करते है, वैसे ही नारी शिक्षा से सम्पन्न होकर किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करके अपनी योग्यता और प्रतिभा का परिचय दे रही है।

शिक्षित नारी में आज पुरुष की शक्ति और पुरुष का वही अद्भूत तेज दिखाई पड़ता है। शिक्षित नारी अब घर की चाहरदीवारी से निकलकर समाज में समानाधिकार को प्राप्त कर रही है। वह अपनी प्रतिभा और शक्ति से कहीं कहीं महत्वपूर्ण और प्रभावशाली दिखाई पड़ रही है। नारी शिक्षित होने के फलस्वरूप आज समाज के एक से एक बड़े उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर रही है, जो पुरुष भी नहीं कर सकता। शिक्षित नारी आजकल के सभी क्षेत्रों में पदार्पण कर चुकी है। वह एक महान नेता, समाजसेविका, चिकित्सक, निर्देशिका, वकील, अध्यापिका, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि महान पदों पर कुशलतापूर्वक कार्य करके अपनी अद्भूत क्षमता का प्रदर्शन कर रही है। महत्वपूर्ण बात यह है, कि वह इन पदों की कठिनाईयों का सामना करते हुए भी अपनी क्षमता का परिचय दे रही है और अपनी दिलेरी दिखा रही है।

शिक्षित नारी में आत्मनिर्भरता का गुण उत्पन्न होता है। वह स्वावलम्बन के गुणों से युक्त होकर पुरुष को चुनौती देती है। अपने स्वावलम्बन के गुणों के कारण ही नारी पुरुष की दासी या अधीन नहीं रहती, अपितु यह पुरुष के समाज ही स्वतंत्र व स्वछंद होती है। शिक्षित होने के कारण ही आज नारी समाज में पूर्ण रूप से सुरक्षित है। शिक्षित नारी आज के समाज का अत्याचार नहीं सहती है या आज समाज नारी पर कोई अत्याचार नहीं करता है। शिक्षित नारी के प्रति दहेज का कोई शोषण चक्र नही चलता है। शिक्षित नारी को आज सती प्रथा का कोई कोप नही सहना पड़ता है। शिक्षा के कारण ही वह केवल आज पुरुष से ही नहीं, बल्कि समाज से भी मंडित और समादूत है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

की ८८वीं स्थापना दिवस के अवसर पर

गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से

हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री जयप्रकाश अग्रवाल (रचना ग्रुप)

(संस्थापक अध्यक्ष)

दूरभाष : 9824104444

श्री गोकुलचंद बजाज (प्रांतीय अध्यक्ष)

(भीड)

दूरभाष : 9377778333

सीए श्री राहुल अग्रवाल (प्रांतीय महामंत्री)

(भीड)

दूरभाष : 9016285978

सीए श्री विजय मित्तल (मंत्री)

(भीड)

दूरभाष : 9227404492

उद्‌गार

सम्मेलन के प्राण-पुरुष स्व. ईश्वरदास जालान

धन और सम्पत्ति को गरीबों के उत्थान में लगा सकें, और देश की आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में सहायक बन सकें, तो यह समाज न केवल जनता का आदर और सम्मान ही प्राप्त कर सकता है, बल्कि देश का नेतृत्व ग्रहण कर सकता है। भामाशाह ने यदि राणाप्रताप को उनकी विपत्तियों में सहायता नहीं पहुँचाई होती, तो भामाशाह का नाम आज कौन याद करता। हजारों ही अमीर आये और चले गये, किन्तु भामाशाह को हम आज भी याद करते हैं।... मारवाड़ी समाज आज भारत के जिस अंचल में है, उसका अपना बनकर उसे अपना बनाये, यही उसका परम पुरुषार्थ है।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

स्व. रायबहादुर
रामदेव चोखानी
१९३५-१९३८

जिस महान एवं पवित्र उद्देश्य को लेकर हमलोग यहाँ उपस्थित हुए हैं, वह उद्देश्य है सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज का सामूहिक संगठन, ऐसा संगठन जो जाति में नवजीवन का संचार करनेवाला हो, उसके कार्यकर्ताओं में उल्लास, सजीवता एवं कर्मोद्यम का भाव भरने वाला हो और जिसमें समाज की विभिन्न शाखाएँ सम्बद्ध हों, अपने जातीय हित और उससे भी वृहत्तर सम्पूर्ण देश के स्वार्थ से सम्बन्ध रखनेवाले समस्त प्रश्नों पर विचार करे और अपना कर्त्तव्य स्थिर करे।

स्व. पद्मपत सिंघानिया
१९३८-१९४०

समाज के सुधार की समस्या वर्षों से हमारे सामने है और हम उस पर विचार कर रहे हैं। किन्तु यह विषय इतना विवादास्पद है कि हमने आपस में कहीं तर्क-वितर्क किया भी है, पर खास ध्यान आकर्षित करना उचित नहीं प्रतीत होता। मैं उसे भविष्य के लिए छोड़ देता हूँ किन्तु यह चेतावनी दे देना भी जरूरी समझता हूँ कि हम चाहें अथवा नहीं, सामाजिक समस्या का निकट भविष्य में सामना करना ही पड़ेगा। आज नहीं तो कल हमको एकत्र होकर अपने समाज के सम्पूर्ण संगठन की योजना और सामाजिक पहेलियों का निदान करना ही पड़ेगा।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

स्व. बद्रीदास गोयनका
१९४०-१९४१

आज आए दिन सामाजिक त्योहारों और उत्सवों में फिजूलखर्ची देखने में आती है। मैं समाज के सभी लोगों से यह अनुरोध करता हूँ कि ऐसे सामाजिक अवसरों पर वे अपने खर्च को उचित सीमा के बाहर न जाने दें। मेरा यह अनुरोध केवल उन्हीं से नहीं जिनके पास धन का अभाव है वरन् मैं उन लोगों से भी अनुरोध करता हूँ जिनके पास प्रचुर धन है, क्योंकि यह मानव स्वभाव है कि दूसरी श्रेणी की देखा-देखी पहली श्रेणी के लोग अपनी परिमित आर्थिक अवस्था के बावजूद दिखावे और आडम्बर में उनकी नकल करने को आतुर दिखाई देते हैं।

स्व. रामदेव पोद्दार
१९४१-१९४३

हमारा राजनैतिक स्वार्थ और भारत का राजनैतिक स्वार्थ एक है। मैं जातीयता का पक्षपाती नहीं हूँ इसलिये अपनी जाति के लिए विशेष अधिकार प्राप्त करने की अभिलाषा नहीं रखता। जिस कार्य में भारत का हित है उसी कार्य में भारत की प्रत्येक जाति का हित है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का आदर्श राष्ट्रीय है। जिन देशी रियासतों के हम निवासी या प्रवासी हैं उनकी शासन प्रणाली में परिवर्तन करना तथा प्रतिनिधित्व प्राप्त करना और उस प्रणाली को विधानयुक्त बनाना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

स्व. रामगोपाल जी मोहता
१९४३-१९४७

आपस की हमारी फूट पर हमने धर्म की छाप लगा ली है और इस तरह के धार्मिक अन्ध-विश्वासों ने हमको स्वतंत्रता से विचार करने योग्य भी नहीं रखा है। धर्मभीरु होना हम अपने लिए गौरव की बात समझते हैं। धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों और रुढ़ियों एवं नाना प्रकार के बन्धनों ने हमें मनुष्यता से गिरा दिया है।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

स्व. बृजलाल बियाणी
१९४७-१९५४

किसी भी समूह को अपना भावी कर्त्तव्य निश्चित करने के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह अपनी प्राचीन अवस्था को समझे, वर्तमान का अवलोकन करे और भविष्य की ओर देख अपने कर्त्तव्य का निश्चय करे। मारवाड़ी सम्मेलन को और उसके सारे कार्य को उसी निगाह से देखना चाहता हूँ। गुणों को देखने के साथ ही अवगुणों का अवलोकन भी जीवन में अपयोगी होता है, इस तत्व का भी मुझे स्मरण है।

स्व. सेठ गोविन्ददास मालपानी
१९५४-१९६२

हमें बदलते हुए समय के साथ चलना होगा। आज के युग में पर्दा और दहेज जैसी कुप्रथाएँ सहन नहीं की जा सकतीं। युवकों पर तो इस मानसिक और व्यवस्थात्मक क्रान्ति को लाने का मुख्य भार होगा ही। उन्हीं को तो आज की विरासत संभालनी है और उस विरासत में उनको मिलेगी आज की सम्पत्ति और आज की समस्याएँ। यदि वे केवल आज की सम्पत्ति की ही ओर टकटकी लगाए रहें, तो वे न तो उसे बचा पाएंगे और न अपने को। उन्हें समस्याओं को भी अच्छी तरह से देखना तथा समझना है और उनको सुलझाने के लिए कटिबद्ध हो जाना है।

स्व. गजाधर सोमानी
१९६२-१९६६

सम्मेलन ने समाज को सदैव यह परामर्श दिया है कि जो भाई बहन भिन्न-भिन्न प्रान्तों या राज्यों में बसे हैं, उन्हें वहाँ का नागरिक माना जाय, उन्हें वहाँ के सामाजिक जीवन में पूरी तरह समरस हो जाना चाहिए। दहेज ही बढ़ती हुई बीमारी की समस्या के बारे में कहा कि 'क्षय रोग की तरह यह हमारे गृहस्थ जीवन का विनाश कर रही है और महिलाओं की प्रतिष्ठा के तो यह सर्वथा प्रतिकूल है।' विवाहों में आज भी हम अपने वैभव का इतना प्रदर्शन करते हैं कि दूसरों की दृष्टि में हम खटकने लगते हैं। हमें उतना ही प्रदर्शन करना उचित है जो दूसरों के लिए सिरदर्द न बने।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

स्व. रामेश्वरलाल टांटिया
१९६६-१९७४

सामाजिक सुधारों के अलावा देश-व्यापी राष्ट्रीय प्रवृतियों में हिस्सा लेना भी सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य रहा है। हमारे समाज का विस्तार देश के कोने-कोने में हुआ है और हमें सन्तोष है कि इस समाज के लोग जिस भी राज्य या प्रांत में जा बसे हैं, वहाँ के नागरिक और सामाजिक जीवन में पूरी तरह हिस्सा ले रहे हैं तथा स्थानीय प्रवृत्तियों में पूरा सहयोग दे रहे हैं जो कि सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति का प्रतीक है। मारवाड़ी समाज की किसी भी संस्था ने अपने लिए विशेष संरक्षण या अधिकार की मांग नहीं की बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ तन्मय होकर चलने का प्रयत्न किया।

स्व. भंवरमल सिंघी
१९७४-१९७६ एवं
१९७६-१९७९

समाज के भावी कर्णधारों को अपने अपने प्रान्तवासियों के साथ समरस होकर एक लक्ष्य बनाकर, स्वस्थ सार्वजनिक जीवन में अधिकाधिक भाग लेना चाहिए। इसके पीछे हमारी जातिगत स्वार्थ की नहीं, राष्ट्रीय संभावनाओं के प्रतिफलन की ओर उत्तरदायित्वपूर्ण सहयोग की भावना होनी चाहिए।... दहेज की वर्तमान स्थिति के विरुद्ध दृढ़प्रतिज्ञ आदर्शवान युवकों को प्रतिज्ञापूर्वक अपने आचरण का उदाहरण रखते हुए सक्रिय आन्दोलन करना चाहिए। जब ऐसा होने लगेगा, तभी संभवतः इस राक्षसी प्रथा का समूल नाश होगा।

स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार
१९७९-१९८२

वधुओं को दहेज के अभाव में जलाना, तलाक, भोंडा दिखावा तथा आचरणहीनता बराबर बढ़ रही है। वधुओं और बेटियों में फर्क समझनेवाला मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं।.... समाज में व्यक्तिवाद घर किए हुए है। समष्टिवाद बहुत कम दिखलाई पड़ता है। समाज के संगठन की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। मैं चाहता हूँ कि इस दिशा में सम्मेलन की ओर से ठोस कदम उठाए जाएँ जिससे संगठन की भावना जोर पकड़े और सारे भारत के मारवाड़ी बन्धु सम्मेलन के द्वारा अपनी आवाज बुलंद कर सकें।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

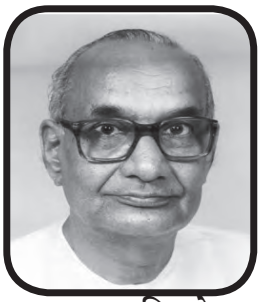

स्व. नन्दकिशोर जालान
१९८२-१९८६, १९९३-१९९७ एवं १९९७-२००१

यदि हमें अपने युवकों की उर्जा का लाभ लेना है तो हमें अपनी सार्वजनिक संस्थाओं और उनके क्रिया-कलापों को आधुनिकता का जामा पहनाना होगा, जिनसे हमारा युवक उनसे जुड़ सके, अपना वर्चस्व दिखा सके और पिछले बीते युग से कहीं शक्तिशाली व प्रभावोत्पादक रूप से नवनिर्माण व सामाजिक सुधारों की गंगा बहा सके।... दहेज-रूपी विष का जितना इलाज किया गया, यह विष उतनी ही तेजी से बढ़ता गया। अब हमें यह नारा देना होगा कि हर शादी मन्दिरों में, धर्म-स्थानों में हो और केवल नजदीकी रिश्तेदारों की उपस्थिति में हो।

स्व. हरिशंकर सिंघानिया
१९८६-१९८९

सम्मेलन के मंच से बराबर सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़ियों के विरुद्ध प्रस्ताव पास किये जाते रहे हैं, लेकिन समस्याएँ कहीं कम हुई हैं तो कहीं और बढ़ गई है। फिजूलखर्ची और दहेज की समस्या विवाह-संस्कार आदि के कार्यक्रमों में दानवी रूप लेती जा रही है। हमें स्वयं आत्म-चिन्तन करके इन सामाजिक कुरीतियों को दूर करना चाहिए एवं अन्य समाजों के समक्ष उदाहरण रखना चाहिए, तभी निम्न और मध्यवर्ग का मारवाड़ी भाई अपनी प्रतिष्ठा बचा सकेगा।

स्व. रामकृष्ण सरावगी
१९८९-१९८९

जिस दिन समाज का कार्यकर्ता, समाज के सभी वर्गों के भाई-बहन स्थान-स्थान पर सैकड़ों-हजारों की संख्या में सामाजिक बुराइयों और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध, प्रान्तीयता और संकीर्णता के विरुद्ध, शोषण और दुर्नीति के विरुद्ध अनवरत आन्दोलन प्रारम्भ करेंगे, उस दिन वे अकेले नहीं रहेंगे। समस्त भारतीय समाज के लोग उनके साथ आ मिलेंगे और उस दिन समाज अपनी सही छवि स्थापित कर सकेगा, समाज की सर्वांगीण उन्नति का सम्मेलन का सपना साकार होगा। एक बड़ा दायित्व समाज के कार्यकर्त्ता पर है और इस सम्मेलन को इसी भावना को शहर-शहर और गाँव-गाँव पहुँचाना है।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

स्व. हनुमान प्रसाद सरावगी (का.)
१९८९-१९९३

मातृभूमि भारतवर्ष के प्रति मारवाड़ी समाज के अवदान की ४०० वर्षों से चली आ रही एक गौरवमयी अटूट परंपरा है। इससे विश्व मानव ने सतत प्रेरणा ग्रहण की है। इस परंपरा के आलोक में आज की परिस्थिति में मारवाड़ी समाज का क्या कर्त्तव्य है और इसकी क्या प्राथमिकताएँ हों, यह एक विचारणीय प्रश्न है। इसका उत्तर हमें अपने समाज के सन्दर्भ में ही ढूँढना होगा। प्रत्येक समाज का यह कर्त्तव्य ही नहीं, धर्म भी है कि वह अपने मूल स्वरूप का संरक्षण करे।

स्व. मोहनलाल तुलस्यान
२००१-२००४ एवं २००४-२००६

विगत वर्षों में सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में नैतिकता का पतन बड़ी तेजी से हुआ है। नेतृत्व का उद्देश्य समाज और राष्ट्र के उत्थान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना न होकर सिर्फ अपनी जेब भरना एवं अपने को स्थापित करना हो गया है। स्वार्थ की अंधी गली में दौड़ लगाते हुए नेतृत्व को इस बात का ख्याल रहा ही नहीं कि उनके इस आचरण का प्रभाव आनेवाली पीढ़ियों पर भी पड़ेगा। .... अतएव यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि समाज के नेतृत्व में आमूल परिवर्तन हो और कमियों-खामियों की व्याख्या के साथ-साथ सामाजिक आधार को दृढ़ से दृढ़तर बनाने की कोशिशें तेज से तेजतर हों। नई पीढ़ी को, नई सोच के लोगों को भी इस मुहिम में अग्रिम पंक्ति में रखा जाना चाहिए ताकि समाज की सभी कड़ियों में सामंजस्य बनाने में सहूलियत हो।

श्री सीताराम शर्मा
२००६-२००८

मेरी मान्यता है कि मारवाड़ी सम्मेलन को विचार मंच से आगे बढ़कर एक सक्रिय वैचारिक आंदोलन का रूप लेना चाहिए। समाज-सुधार एवं समरसता हमारा नारा हो। हमें दहेज-दिखावा, नारी-प्रताड़ना, आडम्बर, फिजूलखर्ची का सक्रिय विरोध करना है। मारवाड़ी सम्मेलन की केन्द्रीय, प्रांतीय एवं जिला स्तर पर सांगठनिक क्षमता का विकास कर इसे सही मायने में मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करना है। सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास के लिए मारवाड़ी सम्मेलन में नयी चेतना जागृत करनी है। मारवाड़ी समाज की नई, आधुनिक प्रतिभा को देश के सम्मुख प्रस्तुत करना है। साहित्य, संस्कृति, कला, राजनीति, ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में उभरती प्रतिभाओं की परिचिति के साथ-साथ उन्हें मान्यता एवं सम्मान प्रदान कर समाज को नया स्वरूप एवं नया व्यक्तित्व देना है।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

श्री नंदलाल रुँगटा
२००८-२०१०

आज समाज शिक्षित हुआ है। शिक्षित समाज का सपना हम भी देख रहे हैं, परन्तु साथ ही हमें यह देखना होगा कि इस शिक्षा से समाज में व्याप्त कुरीतियों को न सिर्फ समाप्त किया जा सके, इसके साथ-साथ हम हमारी सामाजिक धरोहर जैसे शाकाहारी, धार्मिक-सामाजिक प्रवृति में किस तरह विकास ला सकें।... धन के फिजूलखर्ची ने समाज के एक वर्ग को अंधा बना दिया है। हम एक दूसरे से कम नहीं होकर एक दूसरे से आगे निकलने के प्रयास में समाज की संस्कारों की संपदा कहीं समाप्त न कर दें। इस पर हमें सोचने की जरूरत है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति को किस तरह बढ़ने से रोका जा सके। सम्मेलन इस दिशा में पहल करने के लिए सदा तत्पर रहेगा।

डॉ. हरिप्रसाद
कानोड़िया
२०१०-२०१३

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से युवा वर्ग की सोच कि 'मुझे क्या लेना-देना?' या 'मुझे इससे क्या लाभ?' में बदलाव आवश्यक है। मारवाड़ी समाज के नवसृजन एवं विकासोन्मुखी कार्यक्रमों में युवाशक्ति को और अधिक दायित्व लेना जरूरी है। अवांछित एवं अस्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा के कारण न केवल फिजूलखर्ची को बढ़ावा मिल रहा है अपितु आडम्बर एवं मिथ्या-प्रदर्शन से हमारा समाज इतर समाजों की आलोचना का हास्यास्पद पात्र बन गया है। देश की प्रगति के लिये हमें राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। अपने अधिकारों का उचित प्रयोग करते हुए सही नेता का चयन करना चाहिए।

श्री रामअवतार
पोद्दार
२०१३-२०१६

सम्मेलन प्रांतों में बसता है। सम्मेलन के संगठन को अपेक्षित विस्तार देने के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पदाधिकारी प्रांतीय मुख्यालयों के साथ-साथ, नगर-ग्राम शाखाओं तक का यथासम्भव दौरा करें, हर स्तर पर विचारों का परस्पर आदान-प्रदान हो, स्थानीय स्तर पर समाज की समस्याओं के विषय में जानकारी हो, और समाज के जन-जन को सम्मेलन के साथ जोड़ने का हर प्रयत्न हो। यह सम्मेलन के संगठन-विस्तार, सिद्धांतों एवं विचारों के प्रसार तथा हमारी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए रामबाण सिद्ध होगा। हमारे कार्यक्रमों की सफलता के लिए महिला एवं युवा अनिवार्य कड़ियाँ हैं। इनकी सहभागिता से ही हम अपने कार्यक्रमों को गति दे पायेंगे और इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकेंगे। सम्मेलन के कार्यक्रमों में इनकी सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है और इसके लिए प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

श्री प्रह्लाद राय अगरवाला
२०१६-२०१८

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारी युवा पीढ़ी अत्यंत मेधावी एवं परिश्रमी हैं और अपने पारम्परिक उद्योग-व्यापार से आगे बढ़कर शिक्षा, प्रतियोगिता परीक्षाओं, खेल, मनोरंजन सहित हरेक क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों से समाज का मान बढ़ा रही है। तथापि, संस्कारों का ह्रास, बुजुर्गों का घटता सम्मान, फिजूलखर्ची-आडम्बर, दाम्पत्य संबंधों में असहिष्णुता, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, राजनैतिक सक्रियता एवं चेतना की कमी जैसे विषयों पर हमारे युवक-युवतियों, तरुण-तरुणियों को सचेत रहने की आवश्यकता है। सामाजिक संगठन की अनिवार्यता को भी समझना है क्योंकि संगठित समाज की आवाज ही सशक्त हो सकती है।

श्री संतोष सराफ
(निवर्तमान)
२०१८-२०२०

बदलते हुए सामाजिक पृष्ठभूमि में सम्मेलन के कार्यकलापों में भी बदलाव आ रहा है। सम्मेलन की भूमिका नित निरंतर महत्वपूर्ण होती जा रही है। ज्यों–ज्यों समाज में आर्थिक सफलता आदि है, साथ–साथ विसंगतिया भी पनपती है। सभी बंधुओं को सम्मेलन से आशा है। समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर आपसी सामंजस्य के साथ समाज में अच्छाइयों को बरकरार रखते हुए, नये विसंगतियों को दूर करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। सम्मेलन के पास समाज के लिये कार्य करने के लिये अनेकों अवसर हैं। समस्याओं को संभावनाओं में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। और इसके लिये प्रयत्न करना हमारा और हमारे समाज के लोगों का कर्तव्य हैं।

चुनड़ी का महत्व

उत्तरी भारत में विशेषकर राजस्थान में चुनड़ी (ओढ़ना) का विशेष गरिमा एवं सम्मान रहा है। सप्तपदी के समय वधू प्रथम बार इसका वरण कर जीवनसाथी सदृश्य इसको अभिन्न वस्त्र के रूप में रखती है।

वर्तमान आधुनिकता में साड़ी की परंपरा क्षीण हो रही है अतः समकालीन युवा पीढ़ी में इसकी गरिमा के प्रति सजगता कम होती जा रही है।

२७ नवंबर २०२२ को कोलकाता की संस्था "परिवार मिलन" ने जयपुर के डॉ. ओमेन्द्र रत्नू को "मेवाड़ गाथा" पर वक्तृता हेतु आमंत्रित किया था।

डॉ. रत्नू ने "महाराणा" नामक पुस्तक में महाराणा प्रताप के पूर्वजों से लेकर बंशधरों तक के १००० वर्ष के मेवाड़ की अजेयता एवं शौर्य का वर्णन किया है।

परिवार मिलन अतिथियों का सम्मान पुष्पमाला अथवा पुष्प स्तवक के स्थान पर उत्तरीय (आवर्णा) प्रदान कर करता है।

इसी परंपरा में संस्था अध्यक्ष ने डॉ. रत्नू को चुनड़ी के कपड़े से निर्मित उत्तरीय प्रदान किया।

सम्मान के तुरंत पश्चात् डॉ. रत्नू ने वक्तृता प्रारंभ की।

पर प्रथम एक मिनट तक वह अत्यंत भावुक हो गए एवं ऊँचे हुए गले के कारण कुछ बोल नहीं सके।

अपने को संभाल कर डॉ. रत्नू ने कहा कि आपको इस चुनड़ी ने मुझे मेवाड़ के प्रथम साका (जौहर) का स्मरण करवा दिया।

महारानी पद्मिनी के साका के समय हजारों दादियां, मायें, बहनें, बेटियां इसी चुनड़ी से अलंकृत हो अग्नि स्नान (जौहर) में समर्पित हो गई। प्रत्येक साका में मरुधारा की वीरांगनाये चुनड़ी से सुसज्जित होकर ही अग्नि स्नान करती थी। यह डॉ. रत्नू की संवेदनशीलता है कि चुनड़ी के लघु अंश को प्राप्त कर वे साका का स्मरण कर द्रवीभूत हो गए।

वर्तमान पीढ़ी के लिए यह "पढ़ो, समझो एवं करो" सदृश्य दृष्टांत है - चुनड़ी की परंपरा का निर्वहन करें एवं अग्नि स्नान की स्मृतियों को नमन करें।

– अरुण चूड़ीवाल

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष बसंत मित्तल ने पूर्व अध्यक्षों को सम्मानित किया

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन प्रांतीय अध्यक्ष श्री बसंत कुमार जी मित्तल ने प्रांतीय अध्यक्ष का कार्यभार लेने के बाद अपनी टीम के साथ महामंत्री श्री रवि शंकर जी शर्मा कोषाध्यक्ष श्री राहुल जी मारू संगठन महामंत्री श्री प्रदीप जी राजगढ़िया प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री अरुण जी बुधिया संयुक्त महामंत्री श्री सुभाष पट वारी संयुक्त मंत्री जन सहयोग प्रभारी श्री

मनीष जी लोधा प्रांतीय कार्यालय प्रभारी श्री आकाश जी अग्रवाल, श्री श्याम सुंदर जी शर्मा एवं प्रांतीय प्रवक्ता श्री संजय जी सर्राफ के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद जी गाड़ोदिया पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष परम आदरणीय पिता तुल्य श्री भागचंद जी पोद्दार श्री राजकुमार जी केडिया के आवास में जाकर सम्मानित करते हुए टीम ने आशीर्वाद लिया।

जताया कि आपके २ वर्षों के कार्यकाल में आपके कुशल नेतृत्व में प्रांतीय सम्मेलन को नई दिशा देने में समर्थ होंगे। उन्होंने कहा कि संगठन, समाज सुधार, समाज विकास, राष्ट्रीय एकता, समरसता एवं जन सेवा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य करेंगे। प्रांतीय अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल ने आग्रह किया है कि आरोग्य भवन में एक बड़ा भूखंड उपलब्ध होने से मारवाड़ी सम्मेलन का भवन, मारवाड़ी युवा मंच एवं मारवाड़ी महिला सम्मेलन

साथ ही उन्होंने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष विनय कुमार सरावगी एवं निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष ओम प्रकाश अग्रवाल के आवास में पहुँचकर उन्हें पुष्पगुच्छ, संकल्प स्मारिका एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया तथा आशीर्वाद लेते हुए समाज के व्यापक हित में द्रुत गति से काम करने का संकल्प दोहराया। श्री सरावगी एवं श्री अग्रवाल ने विश्वास

का कार्यालय तथा बालिकाओं के लिए छात्रावास, पुस्तकालय, चिकित्सालय तथा अन्य जन सेवा के कार्य हो सके। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी कोलकाता एवं पूर्व अध्यक्षों ने इस पर हर संभव सहयोग प्रदान करने को आश्वस्त किया था। प्रांतीय अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल ने कहा कि आपके मार्गदर्शन और सहयोग से हम सभी भावी प्रकल्पों एवं संकल्प मे १५० शाखाओं के साथ संगठन विस्तार करते हुए सदस्यता संख्या दस हजार तक करने, सुदृढ़ सशक्त एवं प्रभावशाली सामाजिक पंचायत का गठन करना, सभी जिलों में सम्मेलन का कार्यालय, एवं स्थाई सेवा परियोजनाएं शुरु करना, राज्य के समाज के जरूरतमंद लोगों को समुचित चिकित्सा सुविधा, शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराना, झारखंड के सभी जिलों में सम्मेलन द्वारा मां अन्नपूर्णा सेवा का विस्तार कराना, झारखंड के जनजातीय क्षेत्रों में खेलकूद को प्रोत्साहन देने हेतु जिले मे ऐसे प्रतिभाओं की तलाश करके उन्हें सहयोग प्रदान करना, सभी जिलों एवं अनुमंडलो में स्थित मुक्तिधाम का आधुनिकरण एवं निर्माण कराना, तथा गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाते हुए सेवा एवं सुरक्षा प्रदान करना, समाज की वेशभूषा, भाषा संस्कृति एवं भाईचारे की परंपरा को कायम रखना, सामाजिक नियमों का अनुपालन करने एवं आदर्श प्रस्तुत करने वालों को सम्मानित किया जाना, राजनीतिक में आने के लिए समाज के युवाओं को प्रोत्साहन देना, आदि शामिल है। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री रवि शंकर शर्मा, उपाध्यक्ष अरुण बुधिया, मनोज बजाज, संगठन मंत्री प्रदीप कुमार राजगढ़िया, कोषाध्यक्ष राहुल मारू, संयुक्त महामंत्री सुभाष पटवारी, सौरभ सरावगी, प्रवक्ता संजय सर्राफ, मनीष लोधा, श्याम सुंदर शर्मा, आकाश अग्रवाल आदि शामिल थे। उक्त जानकारी मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने दी।

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल ने अपने पदाधिकारियों के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया के आवास में पहुँचकर श्री गाड़ोदिया को पुष्पगुच्छ, संकल्प स्मारिका एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया तथा आशीर्वाद लेते हुए समाज के व्यापक हित में द्रुत गति से काम करने का संकल्प दोहराया। श्री गाड़ोदिया ने प्रांतीय अध्यक्ष सहित सभी पदाधिकारियों को पुष्पगुच्छ देकर अभिनंदन करते हुए विश्वास जताया कि आपके कार्यकाल में आपके कुशल नेतृत्व में प्रांतीय सम्मेलन को नई दिशा देने में समर्थ होंगे तथा नई ऊंचाइयां प्रदान करेंगे। उन्होंन कहा कि संगठन विस्तार, समाज सुधार, समाज विकास, राष्ट्रीय एकता, समरसता एवं जन सेवा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य करेंगे। प्रांतीय अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया से आग्रह किया है कि आरोग्य भवन में एक भूखंड उपलब्ध कराया जाए। जहां मारवाड़ी सम्मेलन का कार्यालय भवन एवं बालिकाओं के लिए छात्रावास बनाया जा सके। श्री गाड़ोदिया ने इस पर हर संभव सहयोग करवाने का आश्वासन दिया है। मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष अरुण बुधिया, महामंत्री रवि शंकर शर्मा, संगठन मंत्री प्रदीप कुमार राजगढ़िया, कोषाध्यक्ष राहुल मारू, संयुक्त मंत्री सुभाष पटवारी, प्रवक्ता संजय सर्राफ, मनीष लोधा, श्याम सुंदर शर्मा, आकाश अग्रवाल आदि शामिल थे।

MOBILITY
FOR THE INDUSTRY
FREIGHT

MOBILITY
FOR THE MASSES
TRANSIT

MOBILITY
ON WATER
SHIPBUILDING

MOBILITY
EVERYWHERE
ENGINEERING

INDIA
TITAGARH WAGONS LIMITED

Titagarh Towers, 756, Anandapur, E.M. Bypass
Kolkata – 700107, West Bengal, India
T: +91 33 4019 0800
F: +91 33 4019 0823
E: corp@Titagarh.in

ITALY
TITAGARH FIREMA SPA

Via Prov.le Appia, 8/10
Loc. Ponteselice - 81100
Caserta (CE) - Italy
T: +39 0823 379111
F: + 39 0823 466812

TITAGARH

TOPLINK HYUNDAI

Hyundai Authorise Signature Dealer

Hope, Happiness and Hyundai.

Own your favourite Hyundai packed with intelligent technology and innovative features, as you enjoy exciting benefits.

BOOK NOW!

Exchange Facility Available!

100%* Finance from all Leading Banks

*Terms & Conditions Applied

Signature Dealer
Best Dealer CTB Sales at DDC
Best Dealer KPI Award (East Zone)

Special Price Offer*
CSD and GeM - 8102926927

HYUNDAI

SALAP
NH-6 BOMBAY ROAD, DOMJUR, JI52
(NEAR RELIANCE TOWER), HOWRAH
Sales : 9693131123
Service : 6204800401

BAGNAN
VILL : KHADINAN PO+PS - BAGNAN
(NEAR LIBRARY MORE), HOWRAH
Sales : 8100727076
Service : 8100727077

FORESHORE RD.
SHOWROOM : 109, FORESHORE ROAD, HOWRAH
SERVICE : 99, FORESHORE, NEAR SHIBPUR LAUNCH GHAT, HOWRAH
Sales : 9230999742
Service : 9230999735

HYUNDAI PROMISE
(Pre-Owned Car)
Salap & Foreshore Rd.
8102926943

THE SINGHANIA GROUP
we connect you with happiness

Visit Us : www.thesinghaniagroup.com

ARC
ON SCHEDULE
- a unique Parcel Service

ALL ROUND CARE

On time...Every time...Safe & Secure!

A R C Edge

- One of the Largest ISO 9001:2015 accredited Surface Transport Organisations.
- Large Fleet of Own Trucks with GPS facility in all major routes.
- On Road 3500+ Vehicles, covering nearly a million km daily, carrying over 3 million tonnes of Cargo annually.
- Approx. 2400 Trained, Skilled and Highly Motivated Professionals.
- Over 1.5 million Sq.ft of covered godowns with Modern Handling & Safety Equipment.
- Latest Communication & Information Technology System with 24 x 7 Online Track & Trace facility.
- 50,000+ Satisfied Customers.
- Actively involved in various CSR Activities.

ARC

Associated Road Carriers Limited

THE PEOPLE WITH A WILL TO SERVE

(An ISO 9001 : 2015 Company)

REGISTERED OFFICE
"Om Towers", 9th Floor,
32, Jawaharlal Nehru Road,
Kolkata - 700071, Ph: 033-40253535
E-mail: cal@arclimited.com

CORPORATE OFFICE
"Surya Towers", 3rd Floor,
105, Sardar Patel Road,
Secunderabad - 500003, Ph: 040-27845400
E-mail: sbd@arclimited.com

REGIONAL OFFICES
Ahmedabad - Bengaluru -
Chennai - Delhi - Hyderabad -
Kolkata - Mumbai.

Visit us at: www.arclimited.com

✦ 580+ Booking & Delivery Centres ✦ 400+ Cities ✦ 5000+ Destinations ✦ 22 States ✦ 5 Union Territories

With the Best Compliments from :

Devotion is a dimension
that will allow you to sail
across even if you do not
know the way.

SADHGURU

isha
FOUNDATION

DINODIA WELFARE TRUST

4A, NEW ROAD, 1ST FLOOR, ALIPORE
KOLKATA - 700 027

प्रादेशिक समाचार : दिल्ली

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन जी गाड़ोदिया से की शिष्टाचार भेंट

३० नवम्बर २०२२ को दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधि मण्डल ने हमारे आदरणीय सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन जी गाड़ोदिया से उनके दिल्ली प्रवास के दौरान, श्री सुशीलजी भगेरिया जी के निवास पर एक शिष्टाचार भेंट कर उनका स्वागत एवं सम्मान किया। मुलाकात के दौरान कई सामाजिक विषयों पर चर्चा की गई।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका, प्रांतीय अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया, प्रांतीय महामंत्री ओम प्रकाश अग्रवाल एवं सेंट्रल शाखा दिल्ली अध्यक्ष श्री सज्जन जी शर्मा, गणगौर शाखा सचिव संजीवजी केडिया या पूर्व प्रांतीय महामंत्री श्री बसंत जी पोद्दार उपस्थित रहे।

प्रादेशिक समाचार : उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन की प्रथम प्रांतीय बैठक कानपुर में प्रदेश अध्यक्ष श्रीगोपाल तुलस्यान के अध्यक्षता में संपन्न हुई। इसमें प्रदेश की नए पदाधिकारियों की ट ीम की घोषणा श्री गोपाल तुलसीयान ने की, जिसमें उपाध्यक्ष ओम प्रकाश अग्रवाल एवं रामकृष्ण जिंदल, महामंत्री टीकम चंद सेठिया, संयुक्त मंत्री प्रदीप केडिया एवं अशोक जोहरी, कोषाध्यक्ष आदित्य पोद्दार, प्रचार मंत्री विनीता अग्रवाल मनोनीत किए गए। उत्तर प्रदेश में मारवाड़ी समाज ने प्रदेश के विकास में जो अपनी भूमिका निभाई है, उसको हम प्रदेश के लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना १९३५ में हुई, कानपुर के भूतपूर्व उद्योगपति स्व. पदमपत सिंघानिया, हरिशंकर जी सिंघानिया और रामेश्वर टांटिया इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का दायित्व कुशलता पूर्वक निर्वहन किया था। १९५०, १९८६ एवं २००१ में कानपुर में राष्ट्रीय अधिवेशन भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुये है। आज हम सब इनको नमन करते हैं। उत्तरप्रदेश में सभी मनोनीत पदाधिकारियों ने मारवाड़ी समाज के गौरव को बढ़ाने का संकल्प लिया है।

उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष परम श्रद्धेय पंडित मुकुंद मिश्रा जी की संस्तुति एवं कानपुर व्यापार मंडल के यशस्वी अध्यक्ष श्री राजेश कुमार गुप्ता द्वारा मनोनयन पर उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान जी को कानपुर उद्योग व्यापार मंडल में उपाध्यक्ष चुने जाने पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से ढ़ेरो शुभकामनाएँ।

गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ

गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के द्वारा प्रतिभाशाली वैश्य महानुभावों और उनके अभिभावकों को सम्मानित और प्रोत्साहित करने के लिये **ज्ञान ज्योति सम्मान** समारोह का आयोजन किया गया। इसी उद्देश्य से वर्ष २०१९ से २०२२ तक जो भी आयोजित प्रतियोगी परीक्षायें हुयी और उसमें छात्र-छात्राओं द्वारा उच्चतम प्रदर्शन करने वालों का सम्मान किया गया है। इस समारोह में मारवाड़ी समाज के अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति रहीं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन प्रांत के प्रभारी श्री पवन कुमार गोयनका एवं दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री राज कुमार मिश्रा के आगमन पर एक बैठक आयोजित की गई थी। जिसमें मारवाड़ी पुस्तक '**नेग-चार (मारवाड़ी रीति-रिवाज निर्देशिका)** का उनके द्वारा विमोचन किया गया। इस समारोह में गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री जय प्रकाश जी अग्रवाल, वर्तमान में गुजरात प्रांत के अध्यक्ष श्री गोकुल चंदजी बजाज, प्रांतीय महामंत्री श्री राहुल अग्रवाल एवं अन्य पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित श्री प्रह्लाद राय जी अगरवाला के सम्मान में गुजरात प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं सीकर नागरिक परिषद् के द्वारा इस समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में समाजबंधुओं की उपस्थिति रही।

प्रादेशिक समाचार : बिहार

आपणो प्रदेश

अन्नपूर्णा की रसोई : अनेक शाखाओं के द्वारा प्रत्येक शनिवार या रविवार को खिचड़ी एवं अन्य बने हुए खाद्य पदार्थ और राशन का वितरण किया जाता है।

प्राण वायु सेवा : बिहार के अनेक शहरों में आम नागरिकों को ऑक्सीजन सिलेंडर उपलब्ध कराए जाते हैं। फिलहाल ७८ शाखाओं के द्वारा लगभग ७०० सिलेंडरों के माध्यम से यह सेवा दी जा रही है।

पेयजल योजना : मरुधरा के तहत आम लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चापाकल, प्याऊ, स्थाई पानी वाला कूलर और प्यूरीफायर लगाया जाता है। इस पर शाखाओं को अनुदान देने की भी व्यवस्था है।

विकलांग मुक्त बिहार : किसी भी धर्म, वर्ग, जाति समाज के विकलांग व्यक्ति को आवश्यकतानुसार ऑपरेशन और कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण की सुविधा प्रदान की जाती है।

स्वच्छ बेटियॉं : महिलाओं के माध्यमिक विद्यालयों और कॉलेजों में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन लगाई जाती है। अभी तक २३ मशीनें लगाई जा चुकी हैं।

अमृत महोत्सव : अक्षय तृतीया के अवसर पर प्रदेश की १०४ शाखाओं के द्वारा १२४ स्थानों पर पेयजल, शिकंजी, शरबत, जलजीरा, फल, सतू आदि का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम के लिए सम्मेलन को प्रदेश के मुख्यमंत्री का धन्यवाद पत्र भी मिला।

विशिष्ट दिवस : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, पर्यावरण दिवस, महिला दिवस, शिक्षक दिवस, सीए दिवस आदि के अवसर पर प्रदेश की अनेक शाखाओं के द्वारा यथोचित कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

राष्ट्रीय स्थापना दिवस : सम्मेलन के ८६वें और ८७वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रदेश की शाखाओं के द्वारा भारी संख्या में अन्नपूर्णा की रसोई का आयोजन किया गया जिनमें हजारों हजार लोगों को भोजन उपलब्ध कराया गया। इस वर्ष भी ५,००० लोगों को भोजन और १,००० यूनिट रक्तदान का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

आपनो समाज

आरोग्य सेवा - संजीवनी : तीन बड़े अस्पतालों, मेदांता, पारस और मेडिवर्सल, में चिकित्सा कराने वाले आजीवन सदस्यों एवं उनके परिजनों को बिल में रियायत और अन्य सुविधाओं प्राथमिकता दिलायी जाती है। अब तक १८८ लोगों ने इसका लाभ उठाया है।

चिकित्सा सेवा - आयुष्मान भव : पटना आने वाले मरीजों के लिए आवश्यकतानुसार चिकित्सक, एंबुलेंस एवं रक्त इत्यादि की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। अब तक ३२ लोगों को इस सुविधा का लाभ मिला है।

मंगल मिलन - वैवाहिक समिति : विवाह योग्य युवक-युवतियों के लिए उपयुक्त जीवन साथी के चयन में सहायता हेतु "परिणय सूत्र" ग्रुप का संचालन किया जा रहा है जिसमें लगभग १२,००० से अधिक बायोडाटा आ चुके हैं और अनुमानतः ३,००० से अधिक संबंध तय हुए हैं।

आत्मनिर्भर समाज - रोजगार समिति : मारवाड़ी समाज के जरूरतमंद लोगों को मारवाड़ी समाज के प्रतिष्ठानों में जॉब दिलायी जाती है। इसके द्वारा अब तब १८ लोगों की नियुक्ति कराई जा चुकी है।

मिशन बागबान - समाज गौरव सम्मान : मारवाड़ी समाज के ८०

वर्ष से ऊपर की आयु के अभिभावकों को उनके सार्वजनिक योगदान के लिए पूरे प्रदेश में उनके आवास-कार्यालय पर जाकर सम्मानित किया जाता है। इस क्रम में अब तक २७४ लोगों को सम्मानित किया जा चुका है।

प्रतिभा पर्व - शिक्षा गौरव सम्मान : मारवाड़ी समाज के छात्र-छात्राओं को माध्यमिक से लेकर उच्च स्तरीय एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में विशिष्ट सफलता अर्जित करने पर सम्मानित किया जाता है। शाखा एवं पटना में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में लगभग ६०० छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया जा चुका है।

सामाजिक समरसता : मारवाड़ी समाज के विभिन्न घटकों यथा अग्रवाल, जैन, माहेश्वरी के संगठनो के साथ सम्मेलन भवन में अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें उनके धर्म-पंथ, इतिहास और रीति-रिवाजों की जानकारी मिली। उनके विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित किया गया।

इनसे मिलिए - विशिष्ट व्यक्तित्व : मारवाड़ी समाज के व्यक्ति की शैक्षणिक, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि विशेष उपलब्धियों से समाज को अवगत कराया जाता है और उन्हें बधाई-सम्मान दिया जाता है।

हम हैं - समाज के साथ : समाज के लोगों के साथ जब भी किसी प्रकार की घटना-दुर्घटना, आपराधिक वारदात या डराने-धमकाने का प्रयास होता है तो सम्मेलन के द्वारा सरकार एवं प्रशासन पर दबाव बनाकर समस्या का समाधान निकालने हेतु यथासंभव प्रयास किया जाता है।

अपणी संस्कृति

कला-संस्कृति : राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए समय-समय पर स्व. सीताराम रुंगटा स्मृति राजस्थानी लोक गीत एवं भजन, लोक नृत्य और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

जिसमें सैकड़ों महिलाओं-पुरुषों और छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

पर्व-त्यौहार : गणगौर, सिंधारा, आखा तीज, दशहरा, छठ, अग्रसेन जयंती, महेश नवमी, होली, दीपावली मिलन समारोह, गणेश लक्ष्मी पूजन, भारतीय नव वर्ष आदि का पारंपरिक रूप से समय-समय पर आयोजन किया गया। इसके अलावा नेगचार पुस्तिका मारवाड़ी घरों में वितरित की जाती है।

भाषा-साहित्य : राष्ट्रीय कार्यालय से प्राप्त राजस्थानी व्याकरण पुस्तिका और मारवाड़ी शब्दों के हिंदी अर्थ सभी समाज बंधुओं के बीच प्रसारित किए गए। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए सक्षम पदाधिकारियों को पत्र और ईमेल भेजा गया। इसके साथ ही बैठकों का संचालन संबोधन यथासंभव मारवाड़ी भाषा में किया जाता है।

आपणो संगठन

समाज परिक्रमा : प्रदेश की कुल १६२ शाखाओं में से १५९ शाखाओं की संगठन यात्रा पूरी कर ली गई है। इस यात्रा के ३५ चरणों में कुल लगभग १०० दिनों के दौरान तकरीबन ६,००० किलोमीटर की यात्रा तय कर ८,००० से अधिक समाज बंधुओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया गया। उन्हें सम्मेलन के द्वारा संचालित कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी दी गई तथा संगठन से उनकी अपेक्षाओं और सुझावों को समझा गया। परिणाम स्वरूप १३ नई शाखाएँ और १३०० से अधिक नए आजीवन सदस्य बनाए गए।

प्रशासनिक कार्य : बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का सोसायटीज अधिनियम में रजिस्ट्रेशन कराया गया और इनकम टैक्स का पैन कार्ड लिया गया। संभवतः बिहार एकमात्र पंजीकृत प्रान्तीय ईकाई है।

प्रादेशिक समाचार : पूर्वोत्तर

गुवाहाटी में नखराली बाईसा ने घूमर नृत्य आयोजन के लिए गणेश पूजा की

असम के गुवाहाटी से रहन वाले प्रवासी मारवाड़ी महिलाओं के एक समूह नखराली बाईसा ने आगामी मकर संक्राति को वृहद रूप में राजस्थानी लोकगीत घूमर का आयोजन करने के उद्देश्य से गुवाहाटी गौशाला में गणेश पूजन के साथ पीला चावल चढ़ाकर गणेश जी को निमंत्रण देकर कार्यक्रम की तैयारियों का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सैकड़ों राजस्थानी महिलाएं पीली साड़ी पहनकर नृत्य के साथ गणेश पूजा की। इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्यत व्यवस्थापक खुशबू वर्मा ने बताया कि आज भारत के विभिन्न प्रांतों में करोड़ों मारवाड़ी रहते हैं। वे जिस प्रांत में रहते हैं उस प्रांत की मिट्टी, संस्कृति भाषा साहित्य में रच बस जाते है, फिर भी वे अपने जन्मभूमि मारवाड़ को माटी की सोंधी सुगंध को नहीं भूलते। असम प्रांत में रहने वाली प्रवासी मारवाड़ी महिलाओं के एक समूह नखराली बाईसा ने मारवाड़ी संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजस्थानी लोक नृत्य घूमर का आयोजन आगामी १३ जनवरी को करने की तैयारी प्रारंभ की है। इस कार्य की तैयारी का शुभारंभ करने के लिए आज गणेश पूजन कर गणेश जी को पीला चावल और दूध चढ़ाकर निमंत्रण किया गया। कार्यक्रम में खुशबू वर्मा, वर्षा शर्मा, मंजू लता शर्मा और जनसंपर्क संयोजिका संतोष कावरा ने सारी व्यवस्था संभाल रखी थी।

दो लघुकथाएँ

चाँद का टुकड़ा

अब्दुल समद राही

संजना शादी के पांच साल बाद गर्भवती हुई थी। इन पांच सालों में संजना को बहुत कुछ सहना व सुनना पड़ा था। मगर अब घर में सब को खुशी थी और उत्सुकता भी।

हंसी-खुशी और जग्र के साथ गोद भराई की रम्म सम्पन्न हुई। समाज की रीत-रिवाज के तहत संजना के बच्चे पीहर में ही होने थे।

संजना के मम्मी-पापा, रिश्तेदारों के साथ जाकर संजना को धूमधाम से ले आये थे। संजना का समय समय पर डॉक्टर द्वारा चेकअप करवाया गया। अच्छी दवाईया भी दिलवाई गई। मगर कमजोरी ज्यादा थी। डिलेवरी के समय आपरेशन हुआ। जच्चा-बच्चा में से डॉक्टर द्वारा कोशिशों के बाद मां को ही बचाया जा सका।

होने वाली लड़की थी। समुराल में सब खुश थे चलो अच्छा हुआ कलमुंही होते ही मर गई। कोई किसी से शिकवा नहीं।

संजना कुछ समय बाद फिर गर्भवती हुई। धूमधाम से उसे फिर पीहर भेज दिया गया। इस बार भी संजना ने एक मरे हुए बच्चे को जन्म दिया। मरा हुआ बच्चा लड़का था। बात सुसराल तक पहुंची। धमकियों भरे फोन आने लगे। तुमने हमारे चाँद से टूकड़े को मार दिया। हम मुकदमा दर्ज करवायेंगे छोड़ेंगे नही तुम्हें।

संजना का रो-रो कर बुरा हाल था। बेटी मरी तो कलमुंही और बेटा मरा तो चाँद का टुकड़ा.....।

संजना हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाती जा रही थी। हे भगवान तेरी यह दुनिया का कैसा इन्साफ.....।

संजना के पापा उसे तस्सली देते हुए धीरज बंधाने लगे।

चन्दा

चमचमाती कार से उतरते ही नटखट बन्टू ने अपने पापा सेठ धनराज से कहा– "पापा आप इस निर्माणाधीन बिल्डिंग को अक्सर देखने आते हैं और अच्छा चन्दा भी दे जाते हैं। यह सब क्या है पापा?"

"आप तो कभी किसी को कुछ भी नहीं देते, फिर यहाँ खुलकर.....।"

बन्टू ने फिर कहा।

पापा ने कहा – "अरे बेटा यह वृद्धाश्रम बन रहा है, यहाँ सभी वृद्ध लोग रहेंगे। खूब भक्ति कर अपनी दिनचर्या व्यक्त करेंगे"

"बिल्डिंग पूरी होते ही तेरी दादी को भी तो यहीं आना है।" पापा ने फिर कहा।

"ठीक है पापा, आपके चन्दे से यह बिल्डिंग तो बन जाएगी। मुझें इसको बनाने में चन्दा नहीं देना पड़ेगा।" बन्टू ने आँखे मट काते हुए कहा।

पापा उस मासूम का मुँह देखते रह गये।

– **अब्दुल समद राही**, राजस्थान

सम्मेलन – एक विहंगम परिचय

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना सन् १९३५ मे कोलकाता में हुई थी। प्रथम अधिवेशन में सम्मेलन का लक्ष्य समाज का सर्वांगीण विकास निर्धारित किया गया। प्रथम अधिवेशन में संस्थापक अध्यक्ष रायबहादुर रामदेव चोखानी ने कहा था, "जिस महान एवं पवित्र उद्देश्य को लेकर हम लोग आज यहां उपस्थित हुए हैं वह उद्देश्य है संपूर्ण मारवाड़ी समाज का सामूहिक संगठन, ऐसा संगठन जो जाति में नवजीवन का संचार करने वाला हो, उसके कार्यकर्त्ताओं मे उल्लास, सजीवता एवं कर्मोद्यम का भाव भरने वाला हो और जिसमें समाज की विभिन्न शाखाएं संबद्ध हो, जो अपने राष्ट्रीय हित और उससे भी बृहत्तर संपूर्ण देश के स्वार्थ संबंध रखने वाले समस्त प्रश्नों पर विचार करें और अपना कर्तव्य स्थिर करें"। उन्होंने यह भी कहा कि "अभी तक समाज की विभिन्न शाखाओं का जो संगठन हुआ है, श्रृंखलित न होने के कारण उसके द्वारा हम देश के सार्वजनिक जीवन पर अपना प्रभाव रखने में तथा उसके सभी क्षेत्रों में अन्यान्य समाजों के साथ अपनी एकता स्थापित करने में समर्थ नहीं हुए हैं। आज देश के वृद्ध एवं युवक दल, सनातनी एवं सुधारक में जो इतना पार्थक्य दिख पड़ रहा है और दोनों एक दूसरे को जो दूर समझते हैं उसका कारण भ्रम ही है। यह हम दोनों का ही एक समान शत्रू है"। इस वक्तव्य से हम समझ सकते है कि नये व्यापक सोच के साथ पूरे समाज को एक दिशा देने का सशक्त प्रयास आरंभ होने वाला था। प्रथम अधिवेशन में पास किए गए महत्वपूर्ण प्रस्ताव इस प्रकार है "यह सम्मेलन मारवाड़ी भाइयों से अनुरोध करता है कि वह नागरिक एवं राजनैतिक सभी देशोन्नति के कार्यों में दिलचस्पी लें और उनके चुनाव में सम्मिलित होकर उन में प्रवेश करके देशवासियों को सेवा करने का अवसर प्राप्त करें। दूसरा प्रस्ताव कहता है "यह सम्मेलन भिन्न-भिन्न प्रांतों में बसने वाले मारवाड़ी बंधुओं से अनुरोध करता है कि वह जिस प्रांत के निवासी हो, वहां के अन्यान्य समुदायों के साथ मिलकर वहां के सार्वजनिक कार्यों में अधिकाधिक भाग लें, जिससे पारस्परिक प्रेम और सद्भावना को दृढ़ता प्राप्त हो।" प्रस्तावों से यह स्पष्ट होता है कि मारवाड़ी समाज को देश की उन्नति में एक ठोस भूमिका देने के लिए सम्मेलन अग्रसर हो रहा था। स्थापना वर्ष में ही ब्रिटिश सरकार ने 'भारत विधायक' की एक रूपरेखा तैयार की जिसमें ऐसे प्रावधान लाने की आशंका मिल रही थी, जिससे मारवाड़ी समाज के व्यक्ति को जो विभिन्न प्रदेशों में बसे हुए हैं, उन्हें देसी राज्यों की प्रजा मानकर यदि नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं हुए तो उन्हें देश में ही विदेशियों की तरह समझा जाएगा। न तो उन को मतदान का अधिकार प्राप्त होगा और ना ही कोई नागरिक अधिकार। ईश्वरदास जालान ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष रायबहादुर रामदेव चोखानी, घनश्याम दास बिरला, बद्रीदास गोयनका, देवी प्रसाद जालान, मदन मोहन मालवीय से विचार विमर्श किया और सुप्रसिद्ध बैरिस्टर सर एन एम सरकार को विलायत भेज कर आवश्यक संशोधन का प्रयास किया। भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने संशोधन प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा मारवाड़ी समाज की कठिनाइयों को दूर करने के लिए यह संशोधन किया जा रहा है। स्थापना वर्ष १९३५ में ही यह सम्मेलन की पहली और बड़ी उपलब्धि थी जिसके अंतर्गत मारवाड़ी समाज को मतदान करने और नागरिक अधिकारों से वंचित होने से बचाया जा सका। सन् १९३८ में पद्मपत सिंघानिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का भार ग्रहण किया। सन १९४० में कानपुर में आयोजित तीसरे अधिवेशन में बद्रीदास गोयनका ने समाज सुधार के मुद्दे का पहली बार उल्लेख करते हुए कहा "मैं समाज के लोगों से अनुरोध करता हूँ कि समाजिक अवसर पर वे अपने खर्चे को वंचित सीमा के बाहर न जाने दें। मेरा अनुरोध केवल उन्हीं से नहीं है जिनके पास धन का अभाव है वरन मैं उन लोगों से भी अनुरोध करता हूँ कि जिनके पास प्रचुर धन है क्योंकि यह मानव स्वभाव है कि दूसरी श्रेणी की देखा देखी पहली श्रेणी के लोग अपने परिमित आर्थिक अव्यवस्था के बाबजूद दिखावे और आडंबर में उनकी नकल करने को आतुर दिखाई देते हैं।"

१९४१ मे रामदेव पोद्दार ने अध्यक्षता ग्रहण की और उन्होंने अपने संदेश मे कहा "हमारे समाज में गमी, विवाह और छोटे-छोटे प्रसंगों में धन का अपव्यय करने की प्रक्रिया है। इससे सभी भाइयों को कष्ट तथा धनराशि और समय नष्ट होता है। अब युग परिवर्तन का आ गया है। इसलिए इन अवसरों पर फिजुलखर्ची नहीं करने चाहिए। आशा है यह प्रक्रिया शीघ्र ही बंद हो जायगी।" १९४३ मे राम गोपाल मोहता ने अध्यक्ष का भार ग्रहण किया। अपने अध्यक्षीय संदेश में उन्होंने कहा कि "पृथक पृथक फिरकों के जातीय समाजों के सम्मेलनों का जमाना अब खत्म हो चुका है। आपस की हमारी फूट पर हमने धर्म की छाप लगा रखी है और इस तरह के धार्मिक अंधविश्वास ने हमको स्वतंत्र विचार करने योग्य भी नहीं रखा है। धर्म भीरु होना हम अपने लिए गौरव की बात समझते हैं। धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों और रूढ़ियों एवं नाना प्रकार के वंचना ने हमें मनुष्यता से गिरा दिया है।

१९४७ में आयोजित छठे अधिवेशन में सम्मेलन ने अपने उद्देश्यों में संशोधन कर समाज सुधार के प्रस्ताव भी पास किए। इनमें पर्दा प्रथा निवारक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। अखिल भारतीय समिति की बैठक में पर्दा प्रथा के विरोध में किए जा रहे आंदोलन को जोर करने, दहेज प्रथा, सजावट एवं रोशनी को प्रतिबंधित करने जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। साथ ही साथ नई चेतना के फल स्वरूप समाज में नारी शिक्षा, विधवा विवाह जैसे महत्वपूर्ण विषयों के प्रति भी सोच में बदलाव आया। इन सब सफलताओं के पीछे सम्मेलन एवं समाज के कार्यकर्ताओं की लगन, निष्ठा एवं मेहनत थी। बृजलाल

बियानी के सभापतित्व में सर्वप्रथम सामाजिक सुधार की दिशा में कटिबद्ध होकर कार्य करने का सम्मेलन में निर्णय के तहत सम्मेलन मे समाज सुधार समिति बनी एवं पर्दा प्रथा के विरुद्ध एक तीव्र आंदोलन चलाया गया। काफी युवक-युवतियों ने इस आंदोलन में भाग लिया। सम्मेलन के पदाधिकारियों ने सारे देश में पर्दा प्रथा एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार करने की दृष्टि से दौरे किए। पहले लोग कहते थे कि हजारों वर्षों से चली आ रही प्रथा बंद नहीं हो सकती। बाद में यह कहते सुने गए कि आंधी को कौन रोक सकता है? समाज सुधार कार्यक्रमों में विलायत यात्रा पर समाज से बहिष्कृत करने की परंपरा, सीठनों पर प्रतिबंध, बाल विवाह, मृतक बिहादरी भोज, पर्दा प्रथा के विरुद्ध किए गए आंदोलन उल्लेखनीय है। साथ ही विधवा विवाह और कन्या शिक्षा को बढ़ावा देने के कार्यक्रम में उल्लेखनीय सफलता मिली। पर्दा प्रथा में सुशीला सिंघी, सुशीला देवी भंडारी, विजय कुमारी मेहता, मांग कुमारी भुतोड़िया, इंदुमती गोयनका, चंपा देवी गंगवाल, रतन देवी जैन, रमा देवी मुरारका, पुष्पा लाठ, भगवती देवी पोद्दार, अनुसुइया कानोरिया, शकुंतला चिंतामणि, गंगा देवी चांडक की भूमिका उल्लेखनीय रही। स्वतंत्रता से पहले विषम परिस्थितियों के कारण असम, उड़ीसा एवं अन्य प्रांतों से लोग भयभीत होकर पलायन करने लगे। राजस्थान जाने से रोकने के लिए सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति में विचार-विमर्श किया गया। इस बैठक में तत्कालीन सम्मेलन सभापति बृजलाल बियानी ने कहा जो परिस्थितियां हैं उनमें हमें यह देखना चाहिए कि सम्मेलन हमारे समाज को क्या सहायता एवं सलाह दे सकता है, यह तो ठीक नहीं कि संकट की आशंका से ही भाग कर हम राजस्थान पहुँच जाएं क्योंकि जिन राज्यों में हम निवास करते हैं वहां न रहने से हमारे आर्थिक हितों को हानि पहुंचेगी। जिन प्रांतों में हमने परिश्रम एवं अध्यवसाय से व्यापार स्थापित किया है उनको इस समय छोड़ना ना तो लौकिक दृष्टि से ठीक है और ना ही नैतिक दृष्टि से। यदि ऐसा हुआ तो हमारे समाज को सदा के लिए क्षति पहुँचेगी। बियानी जी ने कहा कि इस समय राजस्थान में भी कर्म क्षेत्र का अभाव है। सम्मेलन को इस दिशा से तत्पर होना चाहिए। आम सहमति के फलस्वरूप प्रभु दयाल हिम्मतसिंहका, रावत मल मालपानी, भंवर मल सिंघी ने तत्काल उन प्रदेशो का दौरा किया एवं अलग-अलग स्थानों में जाकर लोगों को धैर्य दिलाया एवं उत्साह बढ़ाया, स्थानीय समाजबंधुओं से अपने स्थान एवं व्यापार ना छोड़ने के लिए आग्रह किया। उसका असर भी हुआ। भंवरमल सिंघी ने उड़ीसा का दौरा भी किया। जगह-जगह उन्होने सम्मेलन का संदेश पहुँचाया। इसके बाद भी जहां-जहां समाजबंधुओं पर संकट के बादल मंडराए, सम्मेलन ने जाकर अपनी महती भूमिका निभाई। इसी कारण आज हम देखते हैं कि सम्मेलन अपनी शाखाओं के माध्यम से उन राज्यों में गांव तक सक्रिय है। समाज सुधार के कार्यो मे भी सम्मेलन की उल्लेखनीय भूमिका रही।

१९५४ में सेठ गोविंद दास मालपानी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। समाज में धन का बोलबाला के विषय में उन्होने कहा – "ऐसा लगता है कि आज प्रत्येक व्यक्ति धन के पीछे दीवाना हो गया है और इस प्रयास में है कि कैसे जल्दी धनी बना जाए। हमें टका धर्म को अलविदा करना होगा।" समाज के सामने आज यह विकट समस्या है। इसी दौरान सम्मेलन के लक्ष्य को और भी व्यापक बनाते हुए नया लक्ष्य स्वीकृत हुआ – "म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति"।

तत्पश्चात गजाधर सोमानी १९६२ में अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने भी दहेज एवं पर्दा प्रथा के विरुद्ध में कार्यक्रम चलाए। रामेश्वर लाल टाटिया, भंवरमल सिंघी, मेजर राम प्रसाद पोद्दार, नंदकिशोर जालान एवं हरि शंकर सिंघानिया के सभापतित्व काल में भी समाज सुधार कार्यक्रम चलता रहा। सम्मेलन ने अपने जीवन काल में कई उतार-चढ़ाव देखे। इसके बाद हनुमान प्रसाद सरावगी एवं मोहनलाल जी तुलस्यान के सभापतित्व में भी सम्मेलन अपनी कार्यवाही को गति देता रहा। सीताराम शर्मा ने सन २००६ में सम्मेलन के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने के बाद धन का बोलबाला के विरोध और समरसता पर काफी जोर दिया। सीताराम शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि समाज में धन के प्रति बढ़ते प्रभुत्व ने अनेकों बुराइयों को जन्म दिया है। हमें सामाजिक व्यवस्था को सुधारना पड़ेगा। वैचारिक परिवर्तन लाना पड़ेगा। बिखरते रिश्ते, तलाक और फिजूलखर्ची, सामाजिक समारोह में मद्यपान, गिरते नैतिक एवं सामाजिक मूल्य, आडंबर-दिखावा, अभी समाज के मुख्य कुरीतियां हो गई है जिन पर हमें ध्यान देना होगा। इसके बाद से सम्मेलन में संगठन विस्तार का दौर आया। नंदलाल रूंगटा की अध्यक्षता मे विशिष्ट संरक्षक सदस्यता प्रारंभ हुई। सम्मेलन के विभिन्न पहलुओ पर उनके विचार थे – "आज हमारे समाज में चिंता है टूटते परिवारों की, बिखरते रिश्तो की, तलाक और फिजूलखर्ची की, सामाजिक समारोह में मद्यपान की, गिरते नैतिक और सामाजिक मूल्यो की, बढ़ते आडम्बर, दिखावो की। सम्मेलन इस पर समाज में जागृति लाने का निरंतर प्रयास कर रहा है। संगठन को सांगठनिक रूप से और मज़बूती प्रदान करने हेतु प्रत्येक मारवाड़ी परिवार से एक व्यक्ति को सम्मेलन से जुड़ना चाहिए।" डॉ. हरी प्रसाद कानोड़िया, रामअवतार पोद्दार, प्रह्लाद राय अगरवाला, संतोष सराफ के सभापतित्व काल में सदस्यों की संख्या एवं संगठन पर जोर दिया गया। नए राज्यों में शाखाएं खोलने को प्रमुखता दी गई। कोविड काल में सम्मेलन की शाखाओं ने व्यापक रूप से 'अन्नपूर्णा की रसोई' कार्यक्रम के तहत एक वर्ष से भी अधिक निशुल्क भोजन वितरित किया। साथ ही साथ मास्क आदि निशुल्क वितरण के व्यापक कार्यक्रम लिए गये। वर्तमान मे राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया है।

सम्मेलन की स्थापना में ईश्वर दास जी जालान ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी एवं १९३८ से ४० तक उन्होंने राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में भी सम्मेलन को अपनी सेवाएं दी थी। सम्मेलन के संस्थापक राष्ट्रीय महामंत्री भुरामल अग्रवाल

थे। इसके बाद रामेश्वर लाल नोपानी (१९४०-४१), बजरंग लाल लाठ (१९४३-४७), रामेश्वर लाल केजरीवाल (१९४७-१९४९) ने महामंत्री के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की थी। १९५० से १९६२ एवं तत्पश्चात १९७४ से १९७९ तक नंदकिशोर जालान ने दीर्घकालिक राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। रघुनाथ प्रसाद खेतान (१९६२-६६), रामकृष्ण सरावगी (१९६६-७०), दीपचंद नाहटा (१९७०-७४, १९९३-९७), बजरंगलाल जाजू (१९७९-८६), रतन शाह (१९८२-८९), दुलीचंद आग्रवाल ने (सन् १९८९-९३ तक) राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। सीताराम शर्मा १९९७ से २००४ तक, भानीराम सुरेका २००४ से २००८ तक, रामअवतार पोद्दार २००६ से २०१० तक, संतोष सराफ २०१० से २०१२, शिवकुमार लोहिया २०१३ से २०१७ तक, श्री गोपाल झुनझुनवाला २०१८ से २०२० तक राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर सम्मेलन को गति प्रदान किया। २०२० से संजय हरलालका राष्ट्रीय महामंत्री हैं।

सम्मेलन पूरे देश में समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था हैं। स्थापन के प्रारंभ से ही अपने उद्देश्य में लगी हुई है। राजस्थान, हरियाणा, मालवा एवं उनके निकटवर्ती भागों के रहन-सहन, भाषा संस्कृति वाले सभी व्यक्ति जो स्वयं अथवा उनके पूर्वज देश या विदेश के किसी भाग में भी बसे हो सम्मेलन के सदस्य हो सकते है। वर्तमान में सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है समाज के विरुद्ध दुराग्रह फैलाने वालों के खिलाफ सशक्त एवं सामूहिक आवाज उठाना, दहेज दिखावा, प्रदर्शन, आडंबर, वधु उत्पीड़न, पर्दा प्रथा, वैवाहिक कार्यक्रम में मद्यपान अन्य सामाजिक कुरीतियों का विरोध, साहित्यिक सांस्कृतिक विकास, सामाजिक समरसता, उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति, सेवा प्रकल्पों का संचालन, राजनीतिक चेतना एवं भागीदारी व सामाजिक योगदान। सन १९८३ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की स्थापना हुई एवं सन १९८५ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी युवा मंच की स्थापना की गई जो आज भी अपने अपने क्षेत्रों में गतिशील है एवं समाजहित मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सम्मेलन राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए भी प्रयत्नशील है। सम्मेलन अपने मासिक पत्रिका समाज विकास के माध्यम से अपने कार्यक्रमों एवं समाज के सूचनाओं को सभी सदस्यों तक पहुंचाने का काम करती है।

रामनिवास आशारानी लाखोटिया ट्रस्ट, दिल्ली के सहयोग से प्रत्येक वर्ष राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान राजस्थानी मूल के व्यक्ति को दिया जाता है जिन्होंने देश में किसी महत्वपूर्ण क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया हो। यह सम्मान २०१४ से प्रारंभ हुआ था। अब तक यह सम्मान शिक्षाविद डॉ. अनुराधा लोहिया, सुप्रीम कोर्ट चीफ जस्टिस रमेशचंद्र लाहोटी, पद्म भूषण सुश्री राजश्री बिरला, उद्योगपति श्री अनिल अग्रवाल, राजनीतिज्ञ श्री ओम बिरला, राजनीतिज्ञ श्री अरबिंद केजरीवाल एवं जस्टिस आदर्श कुमार गोयल को दिया जा चुका है। वर्तमान में समाज सेवी श्रीमती अमला अशोक रुईया जी को इस सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य सम्मान एवं केदारनाथ भागीरथी देवी कनोड़िया राजस्थानी भाषा बाल साहित्य सम्मान प्रत्येक वर्ष राजस्थानी भाषा के साहित्यकार को प्रदान किया जाता है। समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रत्येक २ वर्ष में भंवर मल सिंघी सेवा सम्मान प्रदान किया जाता है। सम्मेलन की रजत जयंती वर्ष के समारोह में पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. बिधान चंद्र राय, सम्मेलन के ५० में वर्ष के समारोह में देश के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह एवं ६०वें वर्ष के समारोह मे देश के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा एवं ७५वें वर्ष के समारोह में तत्कालीन राष्ट्रपति सुश्री प्रतिभा देवी पाटिल ने शिरकत की थी।

वर्ष २०१०-११ से सम्मेलन ने युवाओं को उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक आर्थिक सहायता देने का कार्यक्रम प्रारंभ किया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभी तक १३७ छात्रों में लगभग ३ करोड़, ५१ लाख से भी अधिक की धनराशि का आवंटन किया गया है। इन कार्यक्रमों के अलावा भी सम्मेलन के सभी प्रांतों मे अलग-अलग और भी अनेक कार्यक्रम संचालित होते है। वर्तमान में सम्मेलन की १७ प्रांतों मे शाखाएं हैं और उन प्रांतों में जगह जगह जिलों में, कस्बों में, गाँवो में शाखाएं फैली हुई है।

सम्मेलन का गौरवशाली इतिहास रहा है। समाज को संगठित करने में सम्मेलन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कश्मीर से कन्याकुमारी, गुजरात से पूर्वोत्तर चारों तरफ फैले हुए मारवाड़ी समाजबंधुओं की सम्मेलन एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था है। सम्मेलन पूरे समाज के विषय में सोचता है और प्रत्येक समाजबंधु सम्मेलन का अंग है। हमारे पूर्वजों ने लक्ष्य निर्धारित की थी **'म्हारों लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति'**। मारवाड़ी समाज का राष्ट्र की प्रगति में योगदान सर्वविदित है। सम्मेलन 'संगठित समाज-सशक्त आवाज' एवं संस्कारो को नाव पर - समय की धार पर' का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ रहा है।

चिट्ठी आई है

अंक देखकर प्रसन्नता हुई।

संपादकीय में शिक्षा पर अपने जो बल दिया है वह आज सबों के लिए अति आवश्यक है। अन्य आलेख भी उत्कृष्टसारगर्भित और पठनीय है। विशेषकर, नारी तुम वंदनीय हो, जमना लाल बजाज...., तथा गर्म पानी सेहत के लिए....आदि। समाज के गतिविधियाँ का उल्लेख पत्रिका को मजबूती प्रदान करता है।

– नरेन्द्र सिंह
संपादक समय सुरभि अनंत

कहानी

पारस-पत्थर

– चेतन स्वामी

झांझरकै पूणी पांच बजी बस भीलवाड़ा बस-अड्डै सूं टुरगी। बस कोटा जावै ही, पण म्हनैं तो बिचाळै माडलगढ़ ई उतरणो हो। अणमीत रा खाड़ां रै कारण जुळजुळियै री चाल चालती बस मांडलगढ़ रै माणिक्यलाल चौक पूगी जणां सांणपांण दिल ऊगग्यो हो। म्है म्हारी बैडिंग, बैग अर झोळो उतार'र अठिनै ख्यांत्यो। सूनवाड़ जैड़ी ई ही। दिसम्बर रै महीणै मांय कुण बारै निकळै इत्ता बैगा? फगत एक चायवाळो टोपिया खड़बड़ावै हो। उण लकड़ी री भट्टी सिलगा राखी ही। सोच्यो- हाथ ई तपा लेवा अर इणनै जिको कीं बूझणो है बो बूझ ई लेवां। आळस मोड़'र म्है नस नै थोड़ी ऊपर कांनी लोळी तो देख्यो– सांम्है री दूकानां रै लारै लाम्बी भांय मांय परबत श्रृंखला ही। ऐन सीधो ऊभो परबत- तीन सौ च्यार सौ फीट डीघो। उण रा धारीदार बढ़ा नै देख'र म्हें अचम्भै मांय पड़ग्यो। – अरे ओ तो बो ई है। लारलै पन्द्रह-बीस दिना सूं म्हनैं सपनै मांय ठीक ऐड़ो रो ऐड़ो डूंगर अर उण माथै एक नैनी-सी बस्ती, कोई दोय-च्यार हजार बरस पैली री सी होवै–वैड़ी दीखती ही। म्हारै मुंडै सूं निकळ्यो–" कमाल है?" जायवाळो बोल्यो–"कई भईसा-कई कैव रिया हो? ओजूं डूंगर कांनी भाळतां ई, म्है संभळतो सो कैयो–"की नीं, आप एक चाय बणावो।" उण कैयो–"हां भट्टी हिलग्योड़ी सी है हमार बणाऊं।" हाथ तपावतां म्है चायवाळै नै बूझ्यो–"अठै सूं सर्किट हाऊस कित्तोक अळघो है?" उण-बस गई बीं रोड कांनी आंगळी सीध करतां कैयो–" आ हीदी हड़क जावै, पाळा जावो तो पांच मिंट..नीतर आप हरकिट हाऊ रै हाम्है ई क्यूं नी उतरिया? उवै रै आगै व्हैय'र ई तो जावै मोटर।" म्है कैयो– "म्है पैली वळा आयो हं। म्हनैं इण बात रो ठाह नी हो।"

"छौ" उण कैयो अर चाय रो गिलासियो म्हारै हाथ में अपड़ायो। उण सल्ला दिन्ही–"ओ बिस्तरबंद अठी म्हैल देवो अर आप पाळा हरकिट हाऊ पूग जावो, पाछा बावइनै इणनै लेय जाया। टंपू तो हाल आधी घंटा बाद आ ही।" उण री राय म्हारै जची। चाय रा पइसा चुकाय'र म्है बैग नै गळै मांय घाल्यो अर झोळै नै हाथ में लिन्हो-रवाना होवतां एकर अपूठो होय'र ऊण धारीदार डूंगर नै ओजूं देख्यो–इण दफै फैरु मांय रो मांय दुसरायो– कमाल है–सागण दरसाव, बो रो बो पहाड़? अचम्भै री घाणमथाण बिचाळै ई म्है सर्किट हाऊस पूगग्यो। कमला घणकरा खाली ई हा। चौकीदार भलेरो सो आदमी हो। उण नै जद ठाह लाग्यो कै म्हारी बदळी इण गांव रै कॉलेज मांय होई है तो राजी होयो, कैयो– "छोको (चोखो) रैयो साब, अठी कॉलेज में दस-बारै गरुजी व्हैणा छाइजै (चाइजै), तीन सूं कस्यान काम चालै?" म्है समझग्यों, लॉकल आदमी होवण रै कारण कॉलेज री थित सूं वाकफ है। कमरै मांय समान राख'र म्हें बैडिंग लावण नै वूहोग्यो। म्हें बैडिंग लेय'र पाछो बावड्यो तो चौकीदार कैयो...." अरे साब, म्हनैं बोल देता, आप इयान ई कस्ट करियो।"

–"कोई बात नीं।" कैय'र म्हें न्हावणघर मांय बड़ग्यो। फ्रैश होयां, रातभर रै सफर री थकावट की अळची होई।

कॉलेज कस्बै सूं तीन किलोमीटर अळघी- भीलवाडै रोड माथै। खोड़ मांय बण्योडै इण कॉलेज लग का तो आपरै साधन सूं जावों, नीतर रूटवाळी बस में चढ़'र कॉलेज आगै ऊतरो। सर्किट हाऊस रै चौकीदार री बात ज्वाइन रै वगत ई साची लागी। प्रिन्सिपल समेत तीन प्राध्यापक पढ़ावणवाळा अर एक बाबू, दोय चपरासी। प्रिन्सिपल मैडम फाइल आर्ट रा अर बां रो अठै विसय नीं, जणां पढ़ाणों चावै तो ई काई पढ़ावै? प्रिन्सिपल काम सूं काम राखणवाळी सूधी सी लुगाई। सरकारी समायोजन रै पछै, घणकरी जिंदगी एडेड कॉलेज में बिताय'र म्है पैली वळा गवर्नमेंट कॉलेज में ज्वायन कर रैयो हो। प्रांत रा मुख्यमंत्री रैयोड़ा शिवचरण माथुर रै नांव सूं बण्योड़ो ओ कॉलेज नैनो पण फूटरो। कॉलेज री लम्बी भांय मांय स्यानदार बिरछ उग्योड़ा। बिरछां री सघनता बीड़ जैड़ी। कॉलेज रै ऐन सांम्है अरावली परबत-माळा जिकी मांडलगढ़ लग पसरियोड़ी। धुर रेगिस्तान–धोरियां रै देस सूं आयोड़ो म्है, पण अठै आंख पसारै तांई हरियाळी ई हरियाळी।

थोड़ी ताळ पछै, गांव सूं दोय लेक्चरर आपरी मोटरसाइकिलां माथै पूग्या। दोवां नै ई म्हारै आण री आस ही। दोवां मांय एक अग्रेजी रा लेक्चरर हा डॉ राजावत- म्हारै सूं नैनी उमर रा होवण रै कारण हाथ जोड़'र मिल्या। बै गंगानगर रा है अर लारलै तीन साल सूं अठै है। पैली ई मुलाकात मांय बै आ नैनी-सी जाणकारी म्हनैं बता दी। दूजोड़ा राजनीति विग्यान रा लेक्चरर डॉ दरोगा म्हारै सूं सालेक छोटा, घणी गरमजोशी सूं मिल्या। म्हनैं गळै लगाया अर भोत ताळ तांई हाथ झाल्यां उभा रैया–कैवता रैया– "आपरो स्वागत है निरमल साहब। साहब आ जग्यां भी आपरै नांव ज्यूं निर्मल है- आप देख रैया हो, च्यारां कांनी जंगळ, सुद्ध बायरो, चौमासै देखज्यो, आ जमीं बत्ती हरीभरी होय जातै, इयान ई हरी रैवै अर आं पहाड़ां रा झरणा आपनै घणा व्हाला लागसी। प्रकृति प्रेमी वास्तै आ जग्यां भोत छौकी (चोखी) है।"

म्हें मुळक'र हां भरी–"हां, रेतीला टीबा दैख्योड़ा मिनख नै आ हरियाळी अर परबत घणा सुहावणा लागै।"

बै इण परभौम माथै म्हारो मन लगावणो चावता। बै ललक'र कैयो– "अरे, साहब कांई बात करो, अठी सूं तीन किलोमीटर आगै तरबीणी है। तीन नन्द्यां (नदियां) रो संगम, उठै री आप छटा देखज्यो, म्हें लेय चाल सूं। आप तो निस्फिकर रैवो, खूब पढ़ाओ बापड़ा टाबरां नै, बाकी आपनै कीं नीं सोचणो है?"

इण अणजाण ठौड़ फैंकणै नै लेय'र म्हें जावा मांय कायो होवतो रैयो। म्हारै गांव सूं आठ सों किलोमीटर अळघी होयी पोस्टिंग म्हनैं खिन्न करै ही। अठै पूगण में ही पन्द्रह घंटा लागै। कठै रैयसां, कियां जाचो जचसी? इयांकला सोच सूं डॉ दरोगा पैलै ई दिन मुगत कर दिया। सिंइया च्यार बजी बै आपरै सागै मोटरसाइकिल माथै बैठाय'र आपरै घरै लेयग्या अर नाश्तो-पाणी करवायां पछै कैयो–" सारब, सर्किट हाऊस सूं आपरो समान आपां चाल'र लेय आवां, पछी अठी रैवो।" म्हें संकता कैयो –" दरोगा साब आप म्हनै आपरे नैड़ै अठै कमरो दिखाय देवो- आपरै परिवार सागै रैवणो ठीक नीं, आपरो मोटो परिवार है।"

म्हनैं बारै अणूतै लुळतारूपणै माथै अचम्मो होय रैयो हो। पांच-छह घंटा री मुलाकात अर ऐ इणगत बिछया जा रैया है। म्है

भळै हौळै सी कैयो–"कमरो तो न्यारो ई ठीक रैसी म्हारो।"

बै जोर सूं कैयो–"खसी (कैड़ी) बात करो, ओ पूरो घर आपरो ई है, बत्ती मत सोचो।"

म्है कसमसावतां कैयो– "म्हैं पढण-लिखणवाळो मिनख हूं, थोड़ो एकांत–निरवाळोपणो–"

पढण-लिखण री बात सूं बै घणा राजी होया। –"अरे, ओ तो म्हांको सौभाग।" कोरनिश रै अंदाज बां आपरो जीवणो हाथ लिलाड़ रै लगायो, पछै भचकै उभा होया अर कैयो.." आवो म्हारै सागै।" परबत-माळा रै ऐन नैड़ै ई ही बां री गळी। म्हैं बां रै लारै-लारै वहीर होयग्यो। अबै थोड़ी ऊंचाण सरू होयगी। च्यार घर छोड़ बै म्हनैं एक नोहरै मांय लेयग्या। छोटो-सो नोहरो-एक कुणै मांय एक लांठो कमरो, कनै नैनी-सी रसोई घर आथूंणै कुणै मांय लेटरीन-बाथरूम बण्योड़ा। बिजळी अर पांणी रो कनेक्शन। बै कमरो खोलतां कैयो– "ओ देखो, ओ कस्यान है?"

मांय एक बेड, दोय भींतवाली आलमारियां, पंखो लाग्योड़ो, और के चाइजै। म्हैं हरखीजता कैयो– "ओ फस्सक्लास है।"

बै हंस्या–"फस्सक्लास है तो छौ आप अठी विराजो।" असल में ओ दरोगाजी रो आपरो नोहरो हो। एक ई दिन मांय म्है सर्किट हाऊस छोड़ दिन्हो अर उण नोहरै मांय जाचो जचा लियो। सिंइया रा दरोगाजी उणी गळी मांय ऊंचाण कांनी चुमावण नै लेयग्या। सपाट मैदान में एक लूंठो-सो तळाव हो, पहाड़ री ऐन जड्या मांय। दरोगाजी उण नै नाड़ी कैय रैया हा, स्यात मोटा तळावं मुड़ागै ओ नाड़ी हो। वै बतायो मांडलगढ़ तैसील मांय ऐड़ा बांध तळावं घणी गिणत मांय है जठै ई पहाड़ी रै नैड़ै डोभ (निवांण) होवै, उठै एकै कांनी मजबूत चौड़ी भींत खेंचर इण में बिरखा से पांणी भेळो कर लियो जावै, पछै नाळां सूं खेतां मांय सिंचाई रै काम लिरीजै। पांणी अळियो नीं जावै अर करसां नै फायदो मिलै। तैसील मांय अठारह मोटा बांध है, कणै ई आपनै देखाळ सूं, आप न्हाळता ई रैय जासो।" म्है देख रैयो हो दरोगाजी धणा कोडीला मिनख है। पैलै ई दिन बै म्हारो कित्तटो कोड कर रैया है, जाणे म्हें भा रो कोई बिछड़ीयोड़ों तनु हूं। म्हैं म्हारे भाग नै सराह रैयो हो। अणजाण ठोड़ जावण री जितरी दुस्चिंतावां ही बै एकै सागै मिटगी।

म्है तळाव रै आगै बण्योहै एकचौकियै माथै बैठग्या। ऐन ऊपर डूंगर छियां करियां उभो हो। डूंगर रै माथै पांच च्यार जणा की करता-सा निजर आवै हा। म्है दरोगाजी सूं बूझ्यो–"साहब ऐ टाबर ऊपर खेलण जावै?" बै एक नजर ऊपर जोय'र बतावण लागा– "नी सी, ऐ तो आपां रा ई बच्चा है। एक म्हरो टाबरियो, दोय भतीजा अर एक दोयेक बां रा भाइला होवैला। ए सिंइया रा पहाड़ी माथै पेड़ लगावण नै जावै। पैली इण पहाड़ी रै ऊपरलै पासै भोत कम पेड़ हा, अबै आं टाबरां खासा लगा दिया। असल में म्हैं ई आ नै ईण काम लगाया। आप देख्या होस्यो, आपां रै कॉलेज में भोत पेड़ है। म्हें कॉलेज में दस साल पैली तीन हजार पेड़ लगाया, वै सब अबै मोटा मोटा पेड़ होयग्या।"

म्हनैं चेतै आयो–कॉलेज रै हरेक क्लास रूम रै आगै ई फळदार रूंख लाग्योड़ा हा-अमरुद, आंवळा अर निंबू रा रूंख। म्हारै खातर आ अचम्भै री बात ही कै सैंग फळदार पेड़ फळां सूं लड़ालूम हा–टाबर कित्ता स्याणा है आं ने नुकसाण कोनी पुगावै? दरोगाजी बतायो कै अठै इण बात री की गिनरथ नीं है, हरेक रै घरै लगैटगै ऐ पेड़ होवै, इण वास्तै टाबरां खातर आ कोई कौतक री बात नी है। संतरा, अनार, अमरुद, निबू अर आंवळा अठै भोत होवै।

म्हनै मन मांय संको आयो। भलाई म्हैं प्राइवेट कॉलेज मांय रैयो। म्हारै कनै एन एस एस ही, जिण मांय हर बरस कॉलेज रै लाम्बै चौड़ै प्रांगण मांय सौ पचास रूंख लगाईजता, पण एक ई नी पांगरतो, खाली फोटुओ खेचीजती। अठै ऐ एकला तीन हजार पेड़ लगाय'र कॉलेज नै हरीभरी कर नांखी। इण नै कैवै निसुआरथ सेवा। म्हैं कृतज्ञता सूं भरग्यो। म्हैं कैयो–"साहब आप तो अनोखा आदमी हो, एकला तीन हजार पेड़ लगा दिया?" बै इण गीरबै नै हवा मांय उड़ाणो चायो। लापरवाही सूं कैयो–"कीं नीं-इण मांय कांई जोर आवतो, खाडा टाबरां खोद दिया अर ताखा म्हैं रोप दिया, कॉलेज रो ट्यूबवेल है पांणी नैखता (घालता) रैया। बापड़ी माटी सखरी है, ज्यूं नैखां बो ई ऊग जावै। अठै री जैटी उपजाऊ माटी कम जग्यां है।"

बै बता रैया हा–"निर्मलजी, म्हैं बरसां सूं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ रो सेवक रैयो हूं, म्हारै मन मांय हरेक वगत आ भावना रैवै कै म्है म्हारै राष्ट्र री कांई सेवा कर सकूं? म्हैं किणी रै कांई काम आय सकूं?"

बां री आ बात सुण'र म्हैं मन मांय भेळो-भेळो सो होयो। जे आं मै ठाह लाग जावै कै म्हैं वामपंथी विचारां रो मिनख हूं तो ऐ म्हारो बीटो हणै है आपरै कमरै सूं बारै बगा देवै। म्है बात बदळण रै मिस कैयो–"साहब एक अजब बात बताऊं?"

बै हूंस सूं कैयो–"हां, बताओ?" अबै म्हे पाछा जावण नै रवाना होय रैया हा। म्हैं आंगळी सूं सीध बजार रै कनली पहाड़ी कांनी करतां कैयो– "साहब आज दिनुगै जद म्हैं बजार में माणिक्यलाल चौक माथै उतरियो अर सांम्हे धारीदार पहाड़ी नै देख्यो तो चिमकम्यो–ऐड़ी पहाड़ी अर उण माथली बस्ती रा दरसाव लारलै कई दिनां रै सपनां मांय आवता रैया है।"

बै जोर सूं हंस्या।–"आपनै अठी आवणो हो, इण वास्तै सपना पैली सूं आवण लाग गिया।" म्हनैं नोहरै मांय बाड़ता-बाड़ता बै कैयो–"कालै दीतवार है, म्हैं आपरै सपनै वाळी पहाड़ी रै मथारै लेय हाल सूं–पछै देखज्यो।"

म्हैं हरखित होवतां कैयो–"हां, दरोगा साब जरूर देखणो है।" बै आगै जावतां-जावतां कैय रैया हा–"टीपण भेजूं टाबर सागै-समान ई जचा लेवो।"

म्हैं सोच रैयो हो–कित्ता आछा है ए, कीं घंटां री मुलाकात मांय कितरा निछावर।

दिनुगै आठ बजी बै नोहरै रै गेट रो कुंटो खड़का रैया हा–"माट साब–भाट साब उठिया कांई?" म्हैं भबड़क'र उठ्यो। आंख्यां मसळतो जाय'र खिड़क खोली–"साब कालै रो ओझको हो, इण वास्तै मोड़ै तांईं नींद आई, नींतर छह बजियां सूं पैली उठ जाऊं।"

बै कैयो–"कोई बात नीं–ओ नास्तो लेवो, कीं पूड़ियां है, घंटाभर में त्यार होय जावो, आपनै मांडलगढ़ रो किलो देखा लावूं--आपरै सपनैवाळी बस्ती।" बै ई मुळक्या अर म्हैं ई हाथ जोड़तां कैयो–"म्है फटाफट आपरै घरै आऊं।" ठीक कैय'र बै आपरै घरै चल्या गया।

म्हैं न्हावतो उण कटावदार–बढांवाळी पहाड़ी रै पेटै सोच रैयो हो–कांई उठै बा ई बस्ती है, जिकी म्हारै सपनां मांय आवती रैवै। इण रो कीं तो अरथ है। दैखण रै चाव सूं म्हैं भोत वैगो न्हा लियो अर पांच मिंट मांय पूड़ियां रो नास्तो कर दरोगा साथ रै बारणै पूगग्यो। दरोगाजी बारै ई गळी मांय चक्कर काट रैया हा। बै गोडां लग रो कोट पैर राख्यो हो अर सिर ऊपरां मंकी टोपी। म्हनै ई बै

गौर सूं जोया अर कैयो–"गळै रो कनपेच सिर माथै लपेट लेवो, मोटरसाइकिल माथै ठंडो बायरो लागसी।"

कोई तीन किलोमीटर चाल्यां पछै, किलै जावण री सड़क आई। म्हें मन मांय सोच्यो–खासा लाम्बी पहाड़ी है। पहाड़ी रै हेटै तलहटी मांय ईत्ती लाम्बी भांय मांय बस्ती बस्योड़ी है। कई घुमाव-कटाव डिघाई रै पछै म्हे किलै रै मोटै प्रोळ में बड्या। बिचाळे-बिचाळै कई जूना मिंदर-देवरा-नैनी मोटी प्रोळां अर झरोखा आया। दरोगाजी बां पेटै घणै उमाव सागै कीं न कीं बतायां जावै हा। म्हें आधो पड़दो समझतां हां हूं कर रैयो हो। छैकड़ म्हे किलै रै मांय बड़ग्या। मोटरसाइकिल सूं उतरग्या। –"आ देखो सा– आपरै सपनैवाळी बस्ती– अबै सैंग ऊजड़ी पड़ी है–जठै तांई नजर जासी भाग्योड़ा मकान।" म्हें एक ढिस्सै माथै चढ'र आगै तांई अर चौफेर धूम-धूम'र देख्यो–हरियाळी रै बिचै-बिचै भांग्योड़ा मकान दीखै हा–सैकड़ूं साल पुराणा मकान। म्हनैं सपनै मांय दीखता कीं की वैड़ा सा। म्हें कैयो–"अठै सूं लोग कठै गया?" दरोगाजी नैड़ै आवतां कैयो–"इत्तै ऊंचै किलै माळै कुण चढै, इण वास्तै लोग नीचै तळैटी मांय जाय'र बसग्या। पैली म्हारा बडेरा अठी ई बस्या करता। डोढ़ हजार सूं बत्ती घर हा-सैंग नीचै वूहाग्या। अबै ऊपर खाली पुराणी चीजां रैयगी। इण ऊजड़ियोड़ै गांव रो किलो, मिंदर, देवरा, उपासरा, दरगाह, राजावां रै वगत रा सरकारी कामकाज रा ठांव, भांत-भांत री प्रोळां, तीन लांठी बावड्यां अर और ई नीं जाणै कांई कांई चीजां अठी ठौड़ री ठौड़ है।" अबै बै मोटरसाइकिल नै भोत हौळै-होळै आगै लेय रैया हा। म्हें चकित सो–म्हारै सपनै मांय आवती बस्ती नै देख रैयो हो, पण हतभाग बा तो अबै उजड़गी। ऊंडेश्वर शिव मंदिर रै आगै दरोगाजी ठिठक्या अर म्हारो हाथ पकड़'र मिंदर मांय लेयग्या। हजारू साल पैली रो ऊडो मिंदर– साव सूनो अर डरावणो–रहस्यमय सो। कई पेड्यां उतर'र म्हे निज मिंदर मांय बड़ग्या। लाल भाटै रो भोत जूनो शिवलिंग। दरोगाजी सरधा सूं हाथ जोड्या– बां रै देखा देखी म्हें ई। म्हें बूइयो–"ओ मिंदर ऊंडो है– इण वास्तै ऊंडेस्वर बाजै?" बै कैवै– "नी इण मिंदर री अद्भुत बात है–ए भगवान मन री ऊंडी बात जाणै–इण वास्तै ऊंडेश्वर कैवै–लोभी आदमी नै ए पसंद नीं करै, जिण राजा मांडलगढ़ मांय लोभ करियो, उणनै प बसण नीं दयो। पांच सौ बरसां सूं अठी रो किलो सूनो रैयो। बाबर-अकबर जद जद ई चितौड़ अर मेवाड़ मायै चढाई करी–बां नै अठी ठैरण री सूनवाइ मिलगी। असल में मांडलगढ मेवाड़ रो प्रवेश द्वार है।"

म्हनैं दरोगाजी री बातां मांय रस आय रैयो हो। बै अबै खिड़ू-खिंडू किलै रै आगै ढब्या, किलो ऊंडेश्वर सूं पांच सौ पांवडा आगै ई हो। बै म्हनै कैयो–"किलै में अबै चमचेड़ां अर गादड़ां रै अलावा कीं नीं है।" किलै सूं पचास पांवड़ा आगै च्यारभुजा रै मिंदर कांनी बै बेगा-बेगा उपाळा ई चाल रैया हा। म्हें ठरड़ीजतो-सो लारै लारै दौड़तो चाल रैयो हो। चाळीस नैड़ी पेड्या चढ'र म्हे च्यारभुजा नाथ मिंदर मांय पूग्या। ऊडेश्वर मांय पेड्यां सूं हेठै उतरणो हो जदकै च्यारभुजा में ऊपर। च्यारभुजा री जूनी मूरति अर भींतां माथै कई ठौड़ शिलालेख हा, नीं जाणै कुणसी लिपि मांय, म्हारै सूं बांचीज्या नीं अर घणी आफळ म्हे ई नीं करी। च्यारभुजा री ऊंचाई सूं म्हनैं कोसां लग री भांय नजर आवै ही। डूगरां माय सूं झाकता कोई कोई सा गांव। दरोगाजी दिखा रैया हा–"बा सांम्है री पहाड़ी विन्ध्य परबत माळा है, अठी अरावली अर विन्ध्य दोवूं परबत माळा रा मेळ होवै। बोऽऽऽ आगै पहाड़ा मांय लुक्योड़ो गुप्तेश्वर मिंदर है, दीखै तो साव नैड़े है, पण तीस किलोमीटर धूम'र जावणो पड़ै।" च्यारभुजा री पेड्या उतरतां बै एक गुफ कांनी इसारो करतां कैयो--"इण बारै मै कैयो जावै कै आ चितौड़गढ़ तांई जावै, पण मांयै बड़ण री हिम्मत कोई री नी होवै। अठी कहीजतो रैयो है के बारह घांणां रो तेल बळै, बी रै च्यानणै सूं चितौड़ पूगीजै।"

अबै बै जिण टूटच्यै-फूट्यै खंडहर आगै उभा हा, उण पेटै बता रैया हा–"आ रसिया री मैड़ी है, रसियो आखै गांव मांय रुळतो रैवतो, हरेक रै काम आवतो। एकर किणी लुगाई सूं हेत जुड़ग्यो। बा नीं मिली तो उणरी चितार मांय भूखो तिस्यो सूख'र मरग्यो, पण दूजा रै हाथ सूं की नीं खायो–खुवावै तो म्हारी हेतुली ई खुवावै। आवो आगै चालां–"आगै चौफेर चिण्योड़ी पेड्यां रो घणो रुपाळो तळाव आयग्यो। भीलाड़ै रै भाठै सूं धड़योड़ी पेड्यां। म्हें देखतो ई रैयग्यो। इतरो नैण मोवणो तळाव। म्हे दोवूं तळाव री ऊपरली पेड्यां माथै बैठग्या।

आपरी मोय मांय बखाण कर रैया हा-दरोगाजी–"इण तळाव रो नांव सागर है, इण सूं आगै एक दूजो तळाव सागरी अर उण सूं ई आगै तीजो तळाव नागरी है। सागर रो पांणी अखूट है अर इमरत रो दूजो नांव है, भारत भौम मांय इतरो मीठो अर गुणाकारी पांणी दूजी ठौड़ कठै ई नी है। सागर असल मांय लाम्बो-चौड़ो होवण रै कारण लागै तो तळाव है, पण है आ बावड़ी। इण रै तळै मांय अखूट जळ भंडार रो कुओ है। हजारू बरसां मांय कदैई इण रो पांणी खूट्यो नीं।"

म्हें बूझ्यो–"इण रो निर्माण कुण करियो?"

"मांडियो–मांडियो भील। खोड़ मांय गायां चरावतां मांडिया भील नै पारस-पत्थर मिल्यों। बो उण सूं सोनो बणाय'र मांडलगढ़ बसायों। अठी म्हैल माळिया, मिंदर देवरा अर ओ तळाव बणायो। पण, एक दिन सपनै मांय ऊंडेश्वर कैयो–थूं इण पारस नै इण तळाव मांय थरकाय दे, नींतर लोभी मिनख कट बढ'र मरैला। मांडियो उण पारस पत्थर नै इण तळाव मांय न्हाख दिन्हों। उदयपुर रा एक राजा उण पारस नै पावण खातर घणा ई जतन करिया, पण-पारस कद हाथ आवै। कैवै पांणी मांय पारस पत्थर नाख्यां पछै इणरो पांणी चीणी जैड़ो मीठो होयग्यो। कई लोगां रो मानणो है कै अठी री भांय मांय की पारस पत्थर और गम्योड़ा है, सोध्यां किणी रै हाथ आय सकै। पण मान्यतावां रो कांई है माट साब-मान्यतावां तो घणी भांत री चालै। एण एक बात म्है सदा सूं देखी है कै छानै अठी लोग भाठा चुगता रैवै, स्यात पारस ई ढूढता होसी?" म्हें गताघम मांय गम्योड़ो-सो चुप हो। सागर सूं दीठ हटै ई नीं ही। म्हारो बाहुड़ो झाल तरोगाजी कैयो–"हाल आपां थांरै सपनां री बस्ती नै चौथाई ई नीं देखी है, बाकी आगलै दीतवार रा देखसां–अबै खाणै री वगत होयगी। हालो–चालां।"

पाछो बावड़तां-म्हें आंख्यां फाड़-फाड़ उण ऊजड़योड़ी बस्ती नै निरख रैयो हो, सपनां मांय आवता दरसावां सूं की मेळ कर रैयो हो। सीधा दरोगा साहब रै घरै ई ठैरिया। खाणो खाय'र बठै सूं म्हें कमरै मांय आयग्यो। म्हें सोच रैयो हो–मांडियै भील नै मिल्यो जियां, उण भौम मांय और ई तो किणी नै पारस पत्थर लाध सकै। सपनै मांय आ ठौड़ दीखणी, अठै बदळी होवणी अर दूजै ई दिन उठै पूगणो, कठैई पारस पत्थर लाधण रो जोग तो नीं है? घर री सगळी समस्यावां हल होय जावै। हमेसां ई ताना देवणवाळी लुगाई रै मोकळा गहणा करवाया जा सकै अर बेट्यां रै ई लायणां रै की गहणा नीं घाल्या, बा कसर पूरी करीज सकै। हरेक दीतवार नै बठै जाय'र पारस सोधण मांय कां ई आट है? पण-अणक्षक उण रै ध्यान मांय ऊंडेश्वर आयग्या, ऊंडेश्वर नै लोभी मिनख नीं जचै।

सदा सुहागण राजियै रा सोरठा

– केसरीकांत शर्मा 'केसरी'

बारहठ कृपाराम जी चिड़िया (स. १८००-१८९०) से जनम मारवाड़ (जोधपुर) रे खराड़ी गांव में हुयो हो, इम रा पिताश्री रो नाम जागराम जी हो वै खिड़िया शाखा रा वारण कवि हा, जिणां नै कुचामण ठार जालमसिंह जी जूसरी गांव राजी होंर बगस्यो हो, किरपाराम जी गुणी वाप रा गुणी बेटा हा, डिंगल अर पिंगल पर उणां रो समान अधकार सागै ई संस्कृत रा भी आप महापंडत। सीकर (शेखावाटी) के राव राजा देवीसिंह जी (सं. १८२०-१८४२) अर उणां रा गादीघर रावराजा लक्ष्मण सिंह जी (सं. १८५२-१८९०) कुपाराम जी री विद्वता अर काव्य शक्ति स्यू मुगध हो 'रं महाराजपुरा अर लक्ष्मणपुरा गांव जागीर में इनायत कर्‌या हा। राजिया कृपाराम जी रो खास चाकर, बिलवासी, जको दरोगा जाति हो हो। उम रे संतान कोनी ही। किरपाराम जीउण री सेवा सूं राजी हो'र उण नैसंवोधित कर १६५ सोरठिया दूह पांइया। भाषा सरल सहज परभावसाळी।

डॉ. मनोहर शर्मा जणां ई तो बोल्या है:

जणै जणै रै मुखराजियो, नाम है आज सरनाम।
दियो अमरफळ रीझ में, धिन कवि किरपाराम।।

सोरठा में लोक-विवहार, नीति, समाजू स्थिति, भणाई, आदर्श, भगति आद सै है। राजिया रा सोरठा पिछलै, बीस दसका सूं लोगां री जबान पर आज भी मौजूद है। जूनी हेलियां पर राजिया रा सोरठा आज भी बांच्या जा सकें है। इन सूं कवि री लोकप्रियता रो अंदाजो सैजही में लगायो जा सके है। कृपाराम जी रै सोरठां री बानगी देखी:

समझणहार सुंजाण, नर मौसर चूकै नहीं।
ओसर रो अवसाण है, रहै घणा दिन राजिया।।

स्याणो अर समझदार आदमी वो हुवै जिकी मौको हाथ लागणै पर कदेई नीं चुकै, क्यूं कै हे राजिया मौके पर काम आणियै आदमी रो ओहसान हमेस याद रेवै।

चुगली ही सूं चून, और न गुण इन वासतै।
खोस लिया बैखून, रिगल उठावे राजिया।।

यानि जिण लोगां रै कनै चुकली रै अलावा और कोई गुण नीं हुवै, इस्या लोग मसखरी करता-करता लोगों री रोजी-रोटी खोस लेवै।

पल-पल में कर प्यार, पल-पल नें पलटा परा।
अै मतलव रा यार, रहै न छांना राजिया।।

जका मिनख पल-पल में प्रेम रो नाटिय करै अर पल-पल में बदल भी ज्यावै, अैयां लखा मिंतर बेपींदी रा लोटा हुव, जिका छानां नी रै सकै।

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरसित करे।
कड़बी लागै काग, रसना रा गुण राजिया।।

कोयल आपरी मीठी बोली सूं लोगां नै हरसित करै, जद कै कागलो (जिकौ दिखत मैं कोयल सो ही लागै) से ने कड़वो लागै, ई से अेक मात्र कारण या बोली है।

हुवै न बुझणहार, जांणै कुंण कीमत अठै।
बिन गाहक ब्यापार, रूळ्यो गिणीजै राजिया।।

जठै कोई पूछणियों ईं नीं, बठै मरजादा अर चीज री मोल कुंण देवेगो। जणां ई तो बिना गाहक के व्यापार नै चौपट ई समझो। मतलव यो कै, गुण-गाहक कै बिना गुणी मिनख री कदर नहीं होय सकै।

इन्नर करो हजार, स्याणय चतुराई सहत।
हेत, कपट, व्यवहार, रूळ्यो गिणीजै राजिया।।

चाहे कोई कित्ती बी चालबाजी अर स्याणपत करो, प्रेम अर कपट व्यवहार छांनो नहीं रैय सकै। छिपाणै रै बावजूद असलियत स्यामने आ ही ज्यावै। अर्थात सच्चाई छिप नहीं सके बणावट रै उसूलां सूं खुशबू आ नहीं सकै, कागज रै कुलां सूं।

ऊंचे गिरवर आग, जळती सो देखै जगत।
पर जळती निज पाग, रती नै दीखै राजिया।।

सीरठे रो बीजो भेद:

लागे डूंगर लाय, जोवै जद सारो जगत।
प्राजळती निज पाय, रती न सूझै राजिया।।

ऊंचै भाखर पर लाग्येड़ी आग नै तो हर कोई देख लेवै, पर बांनै खुद री बळती पगड़ी कोनी दिसे, यानि ओरां रा दोस देखना आसान है, आपरी खुद रो गळती कोनी सूझै।

मतलब री मनवार, नैंत जिमायै चूरमा।
विन मतलब मनवार, राव न पावे राजिया।।

आपणो ऊल्लू सीधो करणै तांणी, लोगडा न्यूता दे 'र मनुहार रै साथै चूरमो खुवावै, चमचागिरी करे अर जद मतलव नहीं हुवे ना, जणां रावड़ी री ई नी पूछै।

देखल्यो, राजियै रा सोरठा आज बी किता तरोताजा है, बासी नहीं है। इण नै कथां प्रासंगिकता...।

– आनंदपुरा वार्ड नं. २० भंडावा (झुंझुनु)

मायड़ ने मानीता क्यूं नी?

– डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत

मायड़ भाषा राजस्थानी को ७५ साल के लंबे संघर्ष के वाद भी संवैधानिक मान्यता क्यों नहीं दी जा रही है? जबकि वह सब तरह से समर्थ एवं सशक्त भाषा है। दो लाख दस हजार शब्दों का, दस हजार पृष्टों वाला, आठ खंडो में विशाल शब्दकोश है, जो दुनिया का सबसे बड़ा शब्दकोष है। चार व्याकरण है। साढ़े तीन लाख अप्रकाशित एवं पच्चीस हजार प्रकाशित ग्रंथ है। आठ भागों में कहावत कोस है। भारत के भाषा समूह में सातवां स्थान है। अमेरिका की लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस' ने राजस्थानी को दुनिया की तेंरहवी समृद्ध भाषा माना है। चौदह करोड़ भाषा-भाषी हैं। जो भाषा विज्ञान को नहीं जानते वे कहते है – कौनसी राजस्थानी? मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, हाडोती मेवाड़ी? ये सब वोलियाँ हैं। जिस भाषा की जितनी अधिक बोलिया होगी उतनी ही अधिक समर्थ भाषा मानी जाती है। राजस्थान मे तो बारह कोसां बोली पलजै। भाषा की परिभाषा क्या है – जिसका शब्दकोश है, व्याकरण है, साहित्य है, लिपि है वह भाषा कहलाती है और जो बोलचाल में काम आती है; वह बोली है। कई लोग बोली को ही भाषा समझते है। सभी भाषाओं में बोलियाँ है - तमिल में २२, कन्नड़ में ३२, कोकणी में १६, बंगाली में १५, पंजाबी में २९, हिन्दी में ४३, मराठी में ६५, तेलगू में ३६, गुजराती में २७, राजस्थानी में ३३ बोलियाँ है। फिर राजस्थानी पर यह आक्षेप क्यों कि इसमें एकरूपता नहीं है।

राष्ट्रभाषा हमारी एक आंख है तो मायड़ भाषा दूसरी आँख, संस्कृत तीसरा ज्ञाननेत्र समझो। पर अंग्रेजी को तो चशमें का स्थान ही मिल सकता है, जिससे सूक्ष्म दृष्टि तथा रंगीन दृष्टि मिले। गांधी, टैगोर, सुनिती कुमार चाटर्जी, राहुल सांस्कृत्यायन, काका कालेलकर, मामा वरेरकर जैसे विश्वविख्यात विद्वानों ने राजस्थानी को समर्थ एवं सशक्त भाषा माना है। अब्राहम प्रियसन ने अपनी पुस्तक 'लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में राजस्थानी को स्वतंत्र एवं सशक्त भाषा माना है।

हर प्रांत में अपनी भाषा में पढ़ने लिखने का अधिकार मिला हुआ है। पर राजस्थान में तो प्राथमिक शिक्षा भी मातृभाषा में नहीं की जा रही है, जबकि एनसीईआरटी भी स्वीकार कर चुकी है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दी जाय।

गांधीजी ने भी कहा था कि जिन बालकों को मातृभाषा में शिक्षा नहीं दी जाती उसे मैं 'राष्ट्रीय संकट' मानता हूँ। नेल्सन मंडेला ने भी कहा 'मातृभाषा मे दी गई शिक्षा ठैठ दिल-दिमाग में गहरी उतरती है।

१९६१ की जनगणना में सिंधी बोलने वालों की जनसंख्या १३,७१,९३२ थें, नेपाली बोलने वाले १०,२१,१०२, कोकणी के १३,३२,३६३, राजस्थानी के १,१४,३३,०१६ थे। सर्वाधिक भाषा-भाषी राजस्थानी थे। १९७१ से राजस्थान को हिंदी प्रांत मानकर राजस्थानी भाषा के आँकड़े देना ही बंद कर दिया।

इसके लिए किसी वजट की भी जरूरत नहीं। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने लेखक को २४.६.१३ के पत्र में लिखा कि सीताकांत महापात्र की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है, उसकी रिपोर्ट आने पर राजस्थानी की मान्यता पर विचार होगा।

जब जे. एम. खान राजस्थान लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष थे तब तक ङ.ॠच. आदि में १०० अंको का राजस्थानी का पेपर होता था। परंतु जब पतीन्द्रसिंह चैयरमैन बने, जो उत्तरप्रदेश के थे, उन्होंने हटा दिया। मातृभाषा का प्रश्न नई पीढ़ी की रोजी-रोटी का भी है। दूसरी सभी प्रांतो में उनकी भाषा का पेपर अनिवार्य है अतः राजस्थान के प्रत्याक्षी कहीं जाते ही नहीं पर सभी प्रांतों के प्रत्याशी वहाँ आते है चूंकि राजस्थानी भाषा का कोई पेपर नहीं। गत वर्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री कुमावत पाली आये तब लेखक ने उनसे विस्तृत चर्चा की थी, उन्होंने आस्वाशन भी दिया था पर शीघ्र ही उनका कार्यकाल पूरा हो गया। **लोक सेवा आयोग का कर्त्तव्य है कि वह लोकसेवक तैयार करे मगर लोकसेवक लोक की भाषा ही नहीं समझे वह कैसे लोग की सेवा करेगा।** पंजाब में पंजाबी मिडियम भाषा है। १०० अंक पंजाबी भाषा ज्ञान के है। पंजाबी में एक लेख लिखना पड़ता है। वहाँ अन्य प्रांत का प्रत्याशी सफल नहीं होता, फार्म ही बाहर वाले नहीं भरते। यही पेटर्न राजस्थान में लागू किया जाना चाहिये।

राजस्थानी की मान्यता की कहानी स्वतंत्रता के शीघ्र बाद से ही प्रारंभ हो गई थी। संविधान जब बना तब राजस्थानी आठवीं सुची में थी पर चूँकि गांधीजी व नेहरूजी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे और संख्या की दृष्टि से दक्षिण की भाषा राष्ट्रभाषा बन सकती थी तब नेहरूजी ने जय नारायण व्यास को बुला कर कहा अभी हम राजस्थान को हिंदी प्रांत मान लो करोड़ों की जनसंख्या जुड़ जायेगी और हिंदी राष्ट्रभाषा बन जायेगी, राजस्थानी को बाद में जोड़ लेंगे। व्यास जी ने मान लिया। राजस्थानी (डिंगल) हिंदी की भी है। हिंदी भारत माँ के माथे की बिंदी बनी हुई है और माँ मान्यता की भीख माँग रही है। माँ ने बेटी के लिए त्याग किया जिसका नतीजा सामने है। संविधान बना तब १४ भाषाएँ, आज २२ है और ३८ प्रतीक्षा कर रही है।

आश्चर्य की बात है कि सरकार विदेशी सौलानियाँ के लिए राजस्थानी लोकनृत्य, लोकगीत प्रस्तुत कर करोड़ों कमाती है पर जब भाषा की मान्यता का प्रश्न आता है तो मौन धारण कर लेती है।

विद्यालय-महाविद्यालयों में राजस्थानी पढ़ाई जा रही

है। आकाशवाणी व दूरदर्शन पर राजस्थानी कार्यक्रम होते है। राजस्थानी भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी बनी हुई है। राजस्थानी साहित्यकार पुरस्कृत एवं सम्मानित होते है। **किये गये प्रयास** – तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी से प्रतिनिधि मंडल के साथ लेखक मिले, दिल्ली बोट क्लब पर धरना दिया, बिज्जी तथा लेखक ने राष्ट्रपति को विस्तृत पत्र लिखे, मान्यता के लिये रथयात्रा (बीकानेर से जयपुर) तथा पदयात्रा (पाली से जयपुर) की, मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री को ज्ञापन दिये, सर्वप्रथम करणी सिंह सांसद बीकानेर ने मान्यता के लिए संसद में प्रस्ताव रखा, डॉ. लक्ष्मीमल सिघवी ने राज्य सभा में प्रस्ताव रखा, वित्तमंत्री जसवंतसिंह ने राजस्थान के सभी सांसदो के हस्ताक्षर करवा कर गृहमंत्री को सौंपा, एसोसियन ऑफ नार्थ अमेरिका (राना) ने भी न्यूयार्क सम्मेलन मे प्रस्ताव पारित करके भेजा है। २००३ में राजस्थान विधानसभा से सर्व सम्मति से संकल्प प्रस्ताव पारित करके केन्द्र को भेजा, जो १९ साल से केन्द्रिय सरकार के ठंडे बस्ते में लंबित है। अभी राजस्थान के २५ सांसद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिले है। संघर्ष समिति भी सक्रियता से काम कर रही है।

१९६१ की जनगणना के अनुसार १,१०० भाषाएँ थीं। २२० भाषाएँ समाप्त हो चुकी है। सिक्किम में एक भाषा बोलने वाले केवल चार लोग बचे है। जी.एन. देवी ने बडोदा में तीन हजार लोगों से चार साल तक सर्वे करवाकर यह निष्कर्ष निकाला है। किसी देश की भाषा को जाने बिना देश को नहीं पहचाना जा सकता।

१७ दिसंबर २००६ को केन्द्रीय गृहमंत्री श्री प्रकाश जायसवाल ने बिल संसद में पेश करने का विश्वास दिलाया था और कहा था कि राजस्थानी को मान्यता देने की बात सरकार ने सैद्धान्तिक रूप से स्वीकार कर ली है।

राजस्थानी भाषा में बोल कर वोट बटोर कर जीतने के बाद वह सांसद और विधायक राजस्थानी में शपथ नहीं ले सकता - भेरूसिंह गुर्जर (विधायक मारवाड जं.), अर्जुनराम मेघवाल (बीकानेर), हरीसिंह भायल (सीवाना) तथा बाडमेर जैसलमेर के विधायकों ने भी मायड़ भाषा में शपथ लेने का प्रयास किया पर स्पीकर ने संविधान में मान्यता प्राप्त भाषा नहीं होने से अनुमति नहीं दी, विचित्र विडंबना है।

संविधान के दूसरे अध्याय के अनुच्छेद २४५ के अनुसार राज्य की विधानसभा कानून बना कर राज्य में उपयोग होनेवाली जनभाषा का प्रयोग कर सकती है। अध्याय चार के अनुच्छेद ३५० के अनुसार प्रत्येक जाति को प्रांत में बोली जाने वाली लोकभाषा में शिकवा-शिकावत लिख कर देने का अधिकार है। अनुच्छेद ३५० अ में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान है। अनुच्छेद ३५० के अनुसार अध्यक्ष को प्रतिवेदन भी अपनी मातृभाषा में दे सकता है। अनुच्छेद ३४७ के अनुसार राष्ट्रपति प्रांतवासियों की जनभाषा को राजभाषा घोषित करने का राज्य सरकार को निर्देश दे सकता है। इसमें आठवीं सुचि कहीं बाधक नहीं है।

सम्मेलन की संरचना और स्थिति

– **रतन लाल बंका**
झारखण्ड, राँची

फिरंगियों ने बनाया जब नया विधान
रियासती प्रवासी हुए विदेशी समान
अपने ही देश में बन गए अनजान
भारत माँ के सपूत हो गए मेहमान

विरोध हेतु सम्मेलन का हुआ गठन
तीव्र था विरोध और प्रयास भी सघन
झुकना पड़ा फिरंगियों को देख संगठन
संस्थापक मनीषियों को हमारा नमन

फिर समाज सुधार की ओर चल पड़े हम
नारी को केंद्र में रख बढ़ चले कदम
ध्यान रहा अधिकार नर नारी के हों सम
समाज प्रभाषित हो मिटे सदियों का तम

पर्दा प्रथा विरोध का विरोध हुआ अनेक
बालिका शिक्षा कईयों को नहीं लगी नेक
विरोध सहकर भी जारी रहा अभियान
अब इन कुरीतियों का नहीं नाम निशान

विधवा विवाह का भी विरोध था अपार
बाल विवाह के समर्थक थे बेशुमार
पर सम्मेलन ने जारी रखा यह सुधार
देर सवेर ये सुधार हो गए साकार

दहेज दानव भी हाल तक था अड़ा
यह हुआ शेष तो आडंबर हुआ खड़ा
सम्मेलन प्रयासरत, दिखावा भी बड़ा
असमर्थों के विशेष पीछे यह पड़ा

शराब का विवाह में बढ़ रहा प्रचलन
शादी पहले फोटो शूट चला है चलन
अपसंस्कृति है यह सम्मेलन का कथन
विरोध का आह्वान कर रहा सम्मेलन

कुछ कुरीतियां छोड़ हम हैं शिखर पर
हर क्षेत्र में हों अग्र मिटे कुरीतियां अगर
बुजुर्गों का मान रहे यहां सर्व शिखर
संस्कार मिले पूर्वजों से रहें सदा अमर

उद्योग व्यापार था पहले मुख्य आधार
अब अन्य क्षेत्रों में भी हो गये साकार
सीए एमबीए जज वकील कलाकार
सिविल सर्विस डाक्टरी साहित्यकार

अभियंता रक्षा सेवा विशेष सलाहकार
राजनीति अर्थनीति विशेषज्ञ अपार
अब तो कर रहे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार
राजस्थानी जीवटवाला कर्म को तैयार

सम्मेलन समाज का रक्षा कवच है
सम्मेलन समाज दर्पण यह सच है
जब विपदा आये सम्मेलन आस है
सम्मेलन पर हमें पूरा विश्वास है

मारवाड़ी के जरिए स्टार बनी कौशल्या चौधरी का सफ़र किसी फ़िल्मी कहानी से कम नहीं है

मारवाड़ी के जरिए स्टार बनी इस महिला का सफ़र किसी फ़िल्मी कहानी से कम नहीं है, जानिए गाँव से लेकर गूगल तक का सफ़र। यूट्यूब के जरिए लाखों लोगों तक पहुँची कौशल्या चौधरी, गाँव से निकली और उसे ही कैरियर बना लिया।

कौशल्या का तकनीक से लगाव और खाना बनाने की रुचि की वजह से शुरुवात में मोबाइल से यू-ट्यूब पर हिन्दी भाषा में कुछ विडियो डालने शुरु किये, जिस क्षेत्रीय बोली मारवाड़ी को बोलने पर लोग कम पढ़ा लिखा होने का आंकलन अब तक करते रहे हैं, आज उसी को सुनने के लिए बेताब हो रहे हैं। गाँव के देशी खान पान को कौशल्या चौधरी ने विडियो के जरिए क्षेत्र ही नहीं दुनिया के कई हिस्सों तक पहुचाने का काम किया।

मारवाड़ी को सोशल मिडिया के जरिए लाखों लोगों तक पहुँचाने वाली कौशल्या चौधरी जोधपुर जिले के एक छोटे से गाँव के साधारण परिवार में जन्मी थी, गाँव के सरकारी स्कूल में प्रारम्भिक पढ़ाई की, इसके बाद गाँव में रहते हुए स्वयंपाठी छात्रा के तौर पर स्नातक और राजस्थानी व लोक-प्रशासन में स्नातकोत्तर की परीक्षा के दौरान जोधपुर आना हुआ। जहाँ पर उन्होंने देखा की उनके जैसे हजारों की संख्या में लड़कियाँ शहर आती है जिन्हें विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और सफलता भी हाथ नहीं लगती, इस दौरान उन्होंने समाचारों में देखा की सोशल मिडिया से भी लोग अपनी कला को आगे ला रहे हैं।

कौशल्या ने तक किया कि अब मारवाड़ी बोली और अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए काम करेगी। गाँव लौटी और मारवाड़ी में ही रेसिपी के विडियो बनाकर यूट्यूब पर डालना शुरू किया, लोकप्रियता ऐसी बढ़ी की एक साल में ही विडियो को देखने वालो की संख्या पाँच से छ करोड़ पार कर गयी।

भोपालगढ़ क्षेत्र के छोटे से गाँव कुड़ी में रहने वाले परिवार ने कभी सोचा नहीं होगा कि उनकी बेटी मोबाइल फोन के उपयोग से पूरे परिवार का नाम रोशन कर देगी। कौशल्या यूं तो दिखने में आम महिला की तरह है लेकिन इनकी कुछ कर दिखाने की लगन ने उन्हें एक अलग ही मुकाम पर पहुँचा दिया है। यू-ट्यूब व सोशल मीडिया पर इनके लाखों चाहने वाले हैं। अपने अलग अन्दाज के जरिये दिखा दिया है कि अगर सोशल मीडिया का सही सदुपयोग किया जाए तो यह बड़े ही काम की चीज है।

जिस भाषा को लोग देशी और गंवार के रूप में देखते है उसी भाषा को अपनाया। हालत यह है कि आज लाखों लोग इस भाषा और डायलॉग डिलेवरी के फैन हो चुके है। यूट्यूब से अच्छे खासे पैसे भी कमाती है।

कौशल्या कहती है की जब सब लोग उनके काम को लेकर असमंजस में थे और इसे न करने की सलाह दे रहे थे उस वक्त मेरे परिवार ने ही मुझे आगे बढ़ने की सलाह दी। देसी अंदाज के चलते आज देश विदेश में भी इनके लाखों फैन है।

राजस्थानी बाजरे की खिचड़ी, लापसी और कढ़ी भला किसे पसन्द नहीं है। लेकिन कौशल्या चौधरी ने इन रेसिपीज को अपने देशी अंदाज में सोशल मिडिया पर लाकर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आज इन्हे सोशल मिडिया पर दस लाख से ज्यादा लोग फॉलो करते हैं।

जोधपुर के ग्रामीण इलाके की यह महिला तकनीक के जरिये अपनी पाक कला लोगों के सामने ला रही है और इस तरह वह सोशल मीडिया यूजर्स की वाहवाही भी बटोर रही है। इसमें दिलचस्प पहलू यह है कि पारंपरिक राजस्थानी ड्रेस और माथे पर सजे बोड़ले के साथ जब वे रेसिपी सिखाती है तो भाषा के साथ रेसिपी का स्वाद भी देखने वाले महसूस कर सकते हैं। अपनी लोकल भाषा में सुविचार और ज्ञान की बाते बताते हुए कौशल्या लोकल व्यंजनों को ग्लोबल प्लेटफार्म पर प्रस्तुत कर रही है।

राजस्थान के ग्रामीण इलाके की एक साधारण सी लड़की कौशल्या प्रदेश ही नहीं, देश भर के लोगों के लिए प्रेरणा बन गई है।

कौशल्या चौधरी के १ लाख से ज्यादा फॉलोवर तो सिर्फ शुरवाती महीने में ही हो गए थे, दरअसल, कौशल्या कुछ अलग या खास नहीं करती, वह सिर्फ अपने रोजमर्रा के घरेलू खाना पकाने के तरीके देशी अन्दाज में इंटरनेट के जरिये लोगों तक पहुँचाती है।

कौशल्या का कहना है कि वह अपने घर में बनने वाले खाने की रिकॉर्डिंग करके शहर के लोगों को दिखाना चाहती हैं कि पारंपरिक तौर पर उसे कैसे बनाया जाता है, शुरुआत में वह अकेली ट्राईपॉड की मदद से विडियो बनाती थी, लेकिन अब एक वीडियोग्राफर उनके साथ हैं।

यूट्यूब चैनल सीधी मारवाड़ी के माध्यम से आमजन को ठेठ गाँव की रसोई के देशी चूल्हे पर मारवाड़ी व्यंजनों को जन-जन तक पहुँचाने के साथ देश-विदेश की कई रेसिपी को देशी अन्दाज में प्रस्तुत करने का काम कर रही कौशल्या चौधरी ने कोविड १९ महामारी के दौर में सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जागरुक करने का काम किया। कोरोना वायरस का बढ़ता प्रकोप भी उनकी कार्यशैली पर ब्रेक नहीं

लगा सका। समाजहित को अपने जीवन में प्राथमिकता देने वाली कौशल्या चौधरी ने सोशल मीडिया को इस महामारी में जागरूकता का हथियार बना लिया।

महामारी के दौर में यू-ट्यूब के अलावा फेसबुक, वाट सएप, ट्विटर व इंस्टाग्राम आदि एकाउंट पर वह लोगों से जुड़कर उन्हें मोटिवेट करने में जुट गई। लोगों के तमाम तरह के सवालों का जवाब देना हो, कोरोना बीमारी से बचाव के तरीके, लॉकडाउन में खानपान और सेहत से जुड़े या फिर पब्लिक की कोई भी सामाजिक समस्या हो उसका समाधान करने का प्रयास वह आज भी सोशल मीडिया के माध्यम से कर रही हैं। उन्होंने कोरोना से बचाव को लेकर तमाम तरह के जागरूकता फैलाने वाले छोटे विडियो, पोस्टर बनाकर, लेख आदि सोशल मीडिया पर पोस्ट किए जिससे समाज जागरुक होकर महामारी का मुकाबला कर सके। कौशल्या कहती है संयमित दिनचर्या के साथ सरकार द्वारा जारी होने वाले दिशा निर्देशों का पालन करने से भारत आज महामारी की जंग जीतने की तरफ बढ़ रहा है। अब तक जो जज्बात देशवासियों ने दिखाए हैं अब उनके परिणाम की घड़ी है।

गरीब परिवारों की मदद के लिए आगे आई कौशल्या

कौशल्या चौधरी ने अपने जन्मदिन पर कोरोना महामारी के शुरुवाती दिनों में खुद की कमाई से गरीब परिवारों की सहायता हेतु मुख्यमंत्री सहायता कोष में एक लाख रुपए की सहयोग राशि भेंट की, इसके अलावा कौशल्या ने अपने गाँव में बाहर से आये लोगों के लिए कोरोना वेलनेस सेंटर पर दस हजार रुपए देकर और ३५ जरुरतमंदों व्यक्तियों के लिए लगातार १५ दिन तक अपने हाथ से खाना बनाकर भिजवाकर मानवता की अनूठी मिशाल पेश की और सोशल मीडिया के माध्यम से आम जन से भी यथासंभव मदद करने की अपील की।

वह खुद तो सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जागृत कर ही रही है उनके साथ ही परिवार के कई सदस्य भी उनके कंधे से कंधा मिलाकर सरकारी सेवाओं के माध्यम से कोरोना वारियर्स की भूमिका निभा रहे हैं।

कौशल्या का कहना है कि देश और समाजसेवा करने के लिए किसी सरकारी सेवा में होना जरुरी नहीं है, समाज सेवा करने के विभिन्न रास्ते हो सकते हैं। सिर्फ व्यक्ति में निस्वार्थ भाव से सेवा करने का जज्बा भरा हो। जब तक अन्दर से समाज सेवा की लों नहीं जगेगी तब तक निस्वार्थ भाव से सेवा नहीं हो सकती। इसलिए प्रत्येक कार्य के माध्यम से समाज सेवा में अपना योगदान दे सकते हैं।

इसके अलावा राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओ मुहिम को आगे बढ़ाने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु भी कौशल्या सोशल मिडिया के माध्यम से जागरूक कर रही है।

उन्होंने अपने गाँव के युवाओं के साथ मिलकर वाट्सएप ग्रुप बनाकर दो लाख से ज्यादा रुपए एकत्र कर अपने गाँव की पथरीली जमीन पर ३०० से ज्यादा पौधे लगाये और उनकी देखभाल का संकल्प लिया।

कौशल्या ने स्वतंत्रता दिवस पर ग्रामीण इलाकों से वतन की खातिर अपनी जान कुर्बान करने वाले शहीदों की वीरांगनाओं का प्रशासन के साथ घर-घर जाकर सम्मान किया।

अपनी बेटी के जन्मदिन पर कौशल्या ने अपनी संस्कृति को बढ़ावा देते हुए बेटी को तिलक लगाकर दीप प्रज्वलित कर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का सन्देश दिया।

स्वास्थ्य ही धन है

बाजरा खाइये स्वस्थ रहिये....

बाजरे की रोटी का स्वाद जितना अच्छा है, उससे अधिक उसमें गुण भी हैं...

- बाजरे की रोटी खाने वाले को हड्डियों में कैल्शियम की कमी से पैदा होने वाला रोग "अस्टियोपोरोसिस" नही होता। बाजरे में भरपूर "कैल्शियम" होता है जो हड्डियों के लिए रामबाण औषधि है।
- बाजरे में "आयरन" भी इतना अधिक होता है कि खून की कमी से होने वाले रोग यानी 'एनोमिया' आदि कभी नहीं हो सकते।
- बाजरा लीवर से संबंधित रोगों को भी कम करता है। "लीवर की सुरक्षा" के लिए बाजरा खाना अत्यंत लाभकारी है।"
- खासतौर पर गर्भवती महिलाओं ने कैल्शियम की गोलियां खाने के स्थान पर रोज बाजरे की दो रोटी खाना चाहिए। बाजरे का सेवन करने वाली महिलाओं में "प्रसव में असामान्य पीड़ा" के मामले भी न के बराबर पाए गए।
- "उच्च रक्तचाप, हृदय की कमजोरी, अस्थमा से ग्रस्त लोगों तथा दूध पिलाने वाली माताओं में दूध की कमी के लिये यह टॉनिक का कार्य करता है।"
- यदि बाजरे का नियमित रूप से सेवन किया जाय तो यह "कुपोषण, क्षरण सम्बन्धी रोग और असमय वृद्ध होने" की प्रक्रियाओं को दूर करता हैं।
- रागी की खपत से शरीर प्राकृतिक रूप से शान्त होता है। "यह एंग्जायटी, डिप्रेशन और नींद" न आने की बीमारियों में फायदेमन्द होता है। यह "माइग्रेन" के लिये भी लाभदायक है।
- इसमें लेसिथिन और मिधियोनिन नामक अमीनो अम्ल होते है जो अतिरिक्त वसा को हटा कर "कोलेस्ट्रॉल" की मात्रा को कम करते हैं।
- बाजरे में उपस्थित रसायन पाचन की प्रक्रिया को धीमा करते है। "डायबिटीज में यह रक्त में शक्कर" की मात्रा को नियन्त्रित करने में सहायक होता है।
- गेहूं और चावल के मुकाबले बाजरे से 'ऊर्जा" कई गुना है।

डाक्टर तो बाजरे के गुणों से इतने प्रभावित है कि इसे अनाजों में "वज्र" की उपाधि देने में जुट गए हैं।

"आपके स्वास्थ्य का शुभचिंतक"

With the Best Compliments from :

C. L. Sarawgi

श्री

SAVERA SAREES PVT. LTD.

95, Park Street, Kolkata-700 016
Phone : 2226-2326, 2226-1695
Telefax : +91 33 2226-1695
Email : saverasarees@sify.com

With the Best Compliments from :

SHRI BISWANATH KEDIA

(Patron Member)

Diamond Heritage Building,
9th Floor, Suit No. 902
Kolkata – 700001

With the Best Compliments from :

M/s. Singhal Enterprise Pvt. Ltd.

(Sponge Power & Steel Manufacturing Units)
Vill. Taraimal, Po. Gerwani
Distt Raigarh - 496001 Chhattisgarh

Admn. Office :

Singhal House
10, Sector -1, Shankar Nagar,
Raipur 492007
Ph : 0771-2443238
Email : singhalraipur@yahoo.com

Head Office :

303, Century Tower
45, Shakespeare Sarani
Kolkata 700017
Ph: 033-4008 8168

GENU PATH LABS | ACCURACY GUARANTEED

MC-3205 | NABL ACCREDITED LABORATORY

Why Choose GENU Path Labs?

Trusted & Certified Labs | Accurate Report | Best Offers & Affordable Prices | Online Reports on all Devices

Chronic Care Packages

Cardiac Routine Check-Up	Diabetic Screening	Thyroid Profile
Cholesterol Triglyceride HDL Cholesterol SGOT CK Total	Lipid Profile Glucose Fasting Glycated HB (HBA1C) Creatinine eGFR	TSH T3 T4
₹575 ~~₹1065~~ 46% OFF	₹999 ~~₹1790~~ 44% OFF	₹570 ~~₹850~~ 33% OFF

Upto 70% OFF on Healthcare Packages

Now you can access your **Diagnostic Reports** anytime, anywhere

GET IT ON Google Play

FREE HOME COLLECTION 033 6480 6480

BUILD GREEN

TOPCEM CEMENT
Mazbooti ka bharosa...hamesha

Mazbooti
ka Bharosa...
Hamesha.

World's best rotary kiln technology
Manufactured from India's best limestone

Call:1800 123 3666 (toll - free)
topcem.in topcem topcem.cement

हार्दिक अभिनंदन के साथ

अशोक जालान फाउंडेशन

(एजेएफ)

सम्बलपुर

ओडैसी कम्प्लेक्स, ऐंठापाली

सम्बलपुर - 768004, ओडिशा

मो. 9437579833

email : ajaocodc@gmail.com

निस्वार्थ लोक सेवा की ओर कुछ कदम

एम्बुलेंसेज, डस्टविन्स, मोबाइल रक्त संग्रह वैन, रोगी वाहन, शौचालय, यात्री विश्राम स्थल, आर.ओ. ठंडे पानी की इकाइयां, वृक्षारोपण, आंख ओर दांत हास्पिटल के उपकरण, स्टेनलेस स्टील बेंचेंस, व्हील चेयर्स, बच्चों के खेलने के उपकरण, कचरा टिपर वैन, वाटर टेंकर, नेपाल ओर केरल आपदा के लिए रिलीफ, जरूरतमंदो के लिए हजारों कम्बल प्रदान, शव वाहिनी एवं फ्रीजर और सम्बलपुर में छात्रावास के लिए जमीन दान आदि

चेयरमैन

ई.अशोक कुमार जालान

पूर्व लायंस गवर्नर तथा

पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

अखिल भारवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

फोन : (033) 4004 4089 स्थापित : 1935 E-mail : aimf1935@gmail.com

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

(Regd. under W.B. Societies act XXVI of 1961)
4बी, डकबैक हाउस, 4 तल्ला, 41, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता–700 017
फोन : 033–4004 4089, e-mail : aimf1935@gmail.com

समाज सुधार | कुरीति उन्मूलन | मायड़ भाषा का प्रचार-प्रसार | महापंचायत

संस्कार संस्कृति | रोजगार सहायता

उच्च शिक्षा सहयोग | मारवाड़ी व्यक्तित्व सम्मान | मायड़ भाषा श्रीवृद्धि पुरस्कार | समाज सेवा पुरस्कार

देश के वरिष्ठ राष्ट्रनायकों की उत्साहवर्द्धक उपस्थिति

मारवाड़ी सम्मेलन के इतिहास की उपलब्धियों में तब कई और पृष्ठ जुड़ते है जब सम्मेलन के रजत जयन्ती, स्वर्ण जयन्ती, हीरक जयन्ती, कौस्तभ जयन्ती तथा स्थापना दिवस तथा अन्य समारोहों में ऐसे राष्ट्र तथा राजनायकों की उपस्थिति होती है, जो देश के सर्वश्रेष्ठ लोगों की श्रेणी मं आते हैं। इनमें शामिल है पश्चिम बंगाल के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. विधानचन्द्र राय, तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा, तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील, पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी, तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द (बतौर बिहार राज्यपाल), वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू (बतौर झारखम्ड राज्यपाल), उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ (बतौर प. बंगाल राज्यपाल), लोकसभा के स्पीकर श्री ओम बिरला तथा राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह। समय-समय पर इन सबको उत्साहवर्द्धक उपस्थिति ने उर्जा का नया संचार करने के साथ-साथ सम्मेलन की प्रासंगिकता तथा उपयोगिता को सिद्ध किया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अब तक के सिरमौर

स्व. ईश्वर दास जालान
सम्मेलन के प्राण पुरुष

स्व. रामदेव चोखानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९३५-१९३८

स्व. पदमपत सिंघानिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९३८-१९४०

स्व. बद्री प्रसाद गोयनका
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९४०-१९४१

स्व. आनन्दीलाल पोद्दार
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९४१-१९४३

स्व. रामगोपाल मोहता
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९४३-१९४७

स्व. बृजलाल बियानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९४७-१९५४

स्व. गोविन्द दास मालपानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९५४-१९६२

स्व. गजाधर सोमानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९६२-१९६६

स्व. रामेश्वरलाल टांटिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९६६-१९७४

स्व. भंवरलाल सिंघी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९७४-१९७९

स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९७९-१९८२

स्व. नन्दकिशोर जालान
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९८२-१९८६, १९९३-२००१

स्व. हरिशंकर सिंघानिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९८६-१९८९

स्व. रामकृष्ण सरावगी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९८९-१९८९

स्व. हनुमान प्रसाद सरावगी
कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष
१९८९-१९९३

स्व. मोहनलाल तुलस्यान
राष्ट्रीय अध्यक्ष
२००१-२००६

श्री सीताराम शर्मा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
२००६-२००८

श्री नन्दलाल रुँगटा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
२००८-२०११

डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
२०११-२०१३

श्री रामअवतार पोद्दार
राष्ट्रीय अध्यक्ष
२०१३-२०१५

श्री प्रह्लाद राय अगरवाला
राष्ट्रीय अध्यक्ष
२०१५-२०१८

श्री संतोष सराफ
राष्ट्रीय अध्यक्ष
२०१८-२०२०

राष्ट्रीय पदाधिकारी : 2020-22

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री

भानीराम सुरेका, पवन कुमार गोयनका, पवन कुमार सुरेका, अशोक कुमार जालान,
डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका, विजय कुमार लोहिया
राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण

गोपाल अग्रवाल, सुदेश अग्रवाल
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

बसंत कुमार मित्तल
राष्ट्रीय संगठन मंत्री

दामोदर प्रसाद बिदावतका
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

"मूंगफली : जानिये भिगोई हुई मूंगफली के चमत्कारी फायदे"

"मूंगफली पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है जो शारीरिक विकास के लिए बहुत जरुरी है। ऐसे में अगर आप किसी भी कारण से दूध नहीं पी पाते हैं तो यकीन मानिए मूंगफली का सेवन इसका एक बेहतर विकल्प है।"

"मूंगफली स्वाद में तो बेहतरीन होती ही है लेकिन कम लोगों को ही पता होगा कि ये स्वास्थ्य के कितनी फायदेमंद है।"

"अक्सर लोग इसे स्वाद के लिए ही खाते हैं पर यकीन मानिए इससे होने वाले फायदे जानकर आप भी चौक जाएंगे।"

"मूंगफली भिगोकर ही क्यों खाये"?

मूंगफली सेहत के लिए रामबाण है, दरअसल यह वनस्पतिक प्रोटीन का एक सस्ता स्रोत हैं।

"हेल्थ रिसर्च में ये बात सामने आ चुकी है कि दूध और अंडे से कई गुना ज्यादा प्रोटीन होता है मूंगफली में।"

"इसके अलावा यह आयरन, नियासिन, फोलेट, कैल्शियम और जिंक का अच्छा स्रोत हैं। थोड़े से मूंगफली के दानों में ४२६ कैलोरीज, ५ ग्राम कार्बोहाइड्रेट, १७ ग्राम प्रोटीन और ३५ ग्राम वसा होती है।

"इसमें विटामिन ई, के और बी६ भी भरपूर मात्रा में पाए जाते है। साथ ही स्वास्थ्य विशेषज्ञों की माने तो भिगोई हुई मूंगफली और भी अधिक फायदेमंद होती है। क्योंकि मूंगफली के दानों को पानी में भिगोने से इसमें मौजूद न्यूट्रिएंट्स बॉडी में पूरी तरह अब्जॉर्ब हो जाते हैं।"

"आज हम आपको भिगोई हुई मूंगफली खान के कुछ ऐसे ही फायदे बता रहे हैं जिसे जानने का बाद आप दूसरे महंगे पौष्टिक चीजों के बजाए इसका सेवन करना पसंद करेंगे।"

"मूंगफली के बेहतरीन फायदे"

"कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है"

मूंगफली कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रित करने से अहम भूमिका निभाती है। कोलेस्ट्रॉल की मात्रा में ५.१ फीसदी की कमी आती है। इसके अलावा कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन कोलेस्ट्रॉल (एलडीएलसी) की मात्रा भी ७.४ फीसदी घटती है।

"अनिद्रा, शुगर कंट्रोल करता है"

भिगोई हुई मूंगफली के सेवन से सुगर लेवल भी कंट्रोल रहता है। साथ ही ये डायविटीज से बचाती है।

"पाचन शक्ति बढ़ाता है"

मूंगफली में पर्याप्त मात्रा में फाइबर्स होने के कारण ये पाचन शक्ति बढ़ाता है। इसके नियमित सेवन से कब्ज की समस्या खत्म हो जाती है। साथ ही, गैस व एसिडिटी की समस्या से भी राहत मिलती है।

"गर्भवती महिलाओं के लिए है"

फायदेमंद मूंगफली का नियमित सेवन गर्भवती स्त्री के लिए भी बहुत अच्छा होता है। इसमें फॉलिक एसिड होता है जो कि गर्भावस्था में शिशु के विकास में मदद करता है।

"हार्ट प्रोब्लम का निजात"

शोध से यह भी पता चला है कि सप्ताह में पांच दिन मूंगफली के कुछ दाने खाने से दिल की बीमारियां होने का खतरा कम रहता है।

"त्वचा के लिए भी है लाभकारी"

मूंगफली स्किन के लिए बेहद फायदेमंद होती है। मूंगफली में ओमेगा-६ फैट भी भरपूर मात्रा में मिलता है, जो स्वस्थ्य कोशिकाओं और अच्छी त्वचा के लिए जिम्मेदार है।

"मूड अच्छा बनाता है"

मूंगफली में टिस्टोफेन होता है जिस बजह से इसके सेवन से मूड भी अच्छा रहता है।

"उम्र का प्रभाव कम करता है"

प्रोटीन, लाभदायक वसा, फाइबर, खनिज, विटामिन और एंटीआक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसलिए इसके सेवन से स्किन उम्र भर जवां दिखाई देती है।

"आंखों के लिए है रामबाण"

मूंगफली का सेवन आंखों के लिए भी फायदेमंद होता है। इसमें बीटी कैरोटीन पाया जाता है जिससे आंखें हेल्दी रहती हैं।

"आपके स्वास्थ्य का शुभचिंतक"

स्वास्थ्य ही धन है

"सीताफल/Custardapple"

सीताफल पोषक तत्वों से भरपूर होता है। सीताफल का सेवन कई शारीरिक समस्याओं को दूर करने में मददगार साबित होता है। क्योंकि सीताफल में विटामिन ए, विटामिन सी, आयरन, पोटेशियम, मैग्नेशियम और कॉपर जैसे अहम पोषक तत्व होते है, जो शरीर को स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन सीताफल का अधिक मात्रा में सेवन नही करना चाहिए, क्योंकि अधिक सेवन स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकता है।

आइए जानते है सीताफल के क्या-क्या फायदे और नुकसान होते है।

१. सीताफल का सेवन पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने में मददगार साबित होता है। क्योंकि सीताफल फाइबर से भरपूर होता है। इसलिए अगर आप सीताफल का सेवन करते हैं, तो इससे पाचन बेहतर रहता है। साथ ही कब्ज जैसी पेट से जुड़ी बीमारियां दूर होती है।
२. उच्च कोलेस्ट्रॉल (Cholesterol) का स्तर काफी खतरनाक साबित हो सकता है। इसलिए इसको नियंत्रित करना जरुरी होता है। कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के लिए सीताफल का सेवन लाभकारी साबित होता है। क्योंकि सीताफल का सेवन करने से बैड कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम होती है।
३. सीताफल का सेवन हृदय (Heart) के लिए फायदेमंद साबित होता है। क्योंकि सीताफल में विटामिन बी६ पाया जाता है, जो हृदय रोग के खतरे को कम करता है और हृदय को स्वस्थ बनाए रखने में भी मददगार साबित होता है।
४. सीताफल में विटामिन सी की भरपूर मात्रा पाई जाती है, इसलिये अगर आप सीताफल का सेवन करते हैं, तो इससे इम्यूनिटी (Immunity) मजबूद होती है। इम्यूनिटी मजबूत होने से आपका शरीर वायरस और वैक्टीरिया की चपेट में आने से बच सकता है।
५. जिन लोगों को अक्सर कमजोरी (Weakness) और थकान महसूस होती है, उनको सीताफल का सेवन करना चाहिए। क्योंकि इसका सेवन करने से शरीर में एनर्जी बनी रहती है।
६. एनीमिया (Anemia) की शिकायत होने पर सीताफल का सेवन काफी फायदेमंद माना जाता है। क्योंकि सीताफल में विट ामिन सी पाया जाता है, जो शरीर में आयरन को बेहतर ढंग से अवशोषित करने में मदद करता है।

सीताफल के नुकसान

१. सीताफल से कई लोगों को एलर्जी (Allergy) की शिकायत होती है, ऐसे में इसका सेवन करने से स्किन संबंधी समस्या हो सकती है।
२. सीताफल का अधिक मात्रा में सेवन करने से उल्टी की शिकायत भी हो सकती है।
३. सीताफल का सेवन अधिक मात्रा में करने से पेट दर्द (Stomach pain), दस्त, एसिडिटी (Acidity) और आंतों में जकड़न जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

"हिन्दुओं में विवाह रात्रि में क्यो होने लगे..."

क्या कभी आपने सोंचा है कि हिन्दुओं में रात्रि को विवाह क्यों होने लगे हैं, जबकि हिन्दुओं में रात मे शुभकार्य करना अच्छा नहीं माना जाता है?

रात को देर तक जागना और सुबह को देर तक सोने को, राक्षसी प्रवृत्ति बताया जाता है। रात मे जागने वाले को निशाचर कहते हैं, केवल तंत्र सिद्धि करने वालों को ही रात्रि में हवन यज्ञ की अनुमति है।

वैसे भी प्राचीन समय से ही सनातन धर्मी हिन्दू दिन के प्रकाश में ही शुभ कार्य करने के समर्थक रहे है। तब हिन्दुओं में रात की विवाह की परम्परा कैसे पडी?

कभी हम अपने पूर्वजों के सामने यह सवाल क्यों नहीं उठाते हैं? या स्वयं इस प्रश्न का हल नहीं खोजते हैं।

वास्तव में भारत में सभी उत्सव एवं संस्कार दिन में ही किये जाते थे। सीता और द्रौपदी का स्वयंवर भी दिन में ही हुआ था।

प्राचीन काल से लेकर मुगलों के आने तक भारत में विवाह दिन में ही हुआ करते थे।

तुर्की/अरबी/मुगल आक्रमणकारियों के भारत पर हमले करने के बाद ही, हिन्दुओं को अपनी कई प्राचीन परम्पराएं तोड़ने को विवश होना पड़ा था।

इन आक्रमणकारियों द्वारा भारत पर अतिक्रमण करने के बाद भारतीयों पर बहुत अत्याचार किये गये।

यह आक्रमणकारी हिन्दुओं के विवाह के समय वहां पहुँचकर लूटपाट मचाते थे। अकबर के शासन काल में, जब अत्याचार चरमसीमा पर थे, मुगल सैनिक हिन्दू लड़कियों को बलपूर्वक उठा लेते थे और उन्हें अपने आकाओं को सौंप देते थे।

भारतीय ज्ञात इतिहास में सबसे पहली बार रात्रि में विवाह सुन्दरी और मुंदरी नाम की दो ब्राह्मण बहनों का हुआ था, जिनकी विवाह दुल्ला भट्टी ने अपने संरक्षण में ब्राह्मण युवकों से कराया था। उस समय दुल्ला भट्टी ने अत्याचार के खिलाफ हथियार उठाये थे।

दुल्ला भट्टी ने ऐसी अनेकों लड़कियों को मुगलों से छुड़ाकर, उनका हिन्दू लड़कों से विवाह कराया।

उसके बाद मुस्लिम आक्रमणकारियों के आतंक से बचने के लिए हिन्दू रात के अँधेरे में विवाह करने लगे।

लेकिन रात्रि में विवाह करते समय भी यह ध्यान रखा जाता है कि - नाच - गाना, दावत, जयमाल, आदि भले ही रात्रि में हो जाए लेकिन वैदिक मन्त्रों के साथ फेरे प्रातः पौ फटने के बाद ही हों।

पंजाब से प्रारम्भ हुई परंपरा को पंजाब में ही समाप्त किया गया। फिल्लौर से लेकर काबुल तक महाराजा रंजीत सिंह का राज हो जाने के बाद उनके सेनापति हरीसिंह नलवा ने सनातन वैदिक परम्परा अनुसार दिन में खुले आम विवाह करने और उनको सुरक्षा देने की घोषणा की थी। हरीसिंह नलवा के संरक्षण में हिन्दुओं ने दिनदहाड़े - बैंडबाजे के साथ विवाह शुरु किये।

तब से पंजाब में फिर से दिन में विवाह का प्रचालन शुरु हुआ, पंजाब में अधिकांश विवाह आज भी दिन में ही होते हैं। अन्य राज्य भी धीरे धीरे अपनी जड़ों की ओर लौटने लगे हैं, हरीसिंह नलवा ने मुसलमान बने हिन्दुओं की घर वापसी कराई, मुसलमानों पर जजिया कर लगाया, हिन्दू धर्म की परम्पराओं को फिर से स्थापित किया, इसीलिए उनको "पुष्यमित्र शुंग" का अवतार कहा जाता है।

आप सबसे अनुरोध है अब तो विवाह करने के समय में परिवर्तन कर दिन में करने की पहल करें। (संकलित)

बाल श्रमिक

– शिव कुमार फोगला

विकसित देशों में आम है बाल मजदूरी लाड-दुलार में पलने वाला बचपन, बचपन ऐसा जो चिंता मुक्त हो, किसी बात की चिंता नही होती और न जिम्मेदारी। बस एक ही काम खाना-पीना, खेलना और पढ़ना। पर माता-पिता की पीड़ा, गरीबी, भुखमरी, लाचारी, अशिक्षा के कारण कई बच्चों को मजदूरी करनी पड़ती है। दुनिया के किसी भी कोने में बसा व्यक्ति का बचपन उसके जीवन का सबसे अच्छा पल होता है, लेकिन बाल मजदूरी एक ऐसी चीज़ है, जिसके कारण आज कई बच्चों का जीवन भर मजदूरी करने मं बीत जाता है। एक रिपोर्ट की माने तो कुल बाल मजदूरी के बच्चों में से ५० प्रतिशत ऐसे बच्चे है जो सप्ताह के सातों दिन काम करते है, वहीं ५३ प्रतिशत बच्चे यौन उत्पीड़न के शिकार है। साधारण भाषा में कहे तो किसी भी क्षेत्र में बच्चों से दबावपूर्ण काम करवाया जाये उसे बाल मजदूरी कहते है। जब बच्चे बाल मजदूरी की चपेट में आ जाए तब उनका शारीरिक और मानसिक विकास कम हो जाता है। कई देशों की रिपोर्ट के अनुसार बाल मजदूरी का दर विकासशील देशों में बहुत ज्यादा है। ऐसे देशो में बच्चे कम पैसो में भी पूरे दिन कड़ी मेहनत करते है।

किसी भी बच्चे का यह पूरा अधिकार है कि उसके माता-पिता बच्चे की सही परवरिश करे, उसे अच्छी शिक्षा दिलाये और दोस्तों के साथ खेलने का पूरा समय दे, लेकिन हमारे देश में १४ साल से कम उम्र के बच्चों को काम करवाना गैरकानूनी अपराध है। अगर कोई उनसे काम करवाता है तो उसके खिलाफ बाल श्रम अधिनियम के तहत कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। आइये प्रकाश डालते है आखिर कारण क्या है बाल मजदूरी की। सबसे पहला कारण बाल मज़दूरी का गरीबी है। गरीबी अभिषाप और ऊपर से महंगाई। जिससे रोज़ी-रोटी चलाना काफी मुश्किल होता है। अंत में थक हार कर वे अपने बच्चों को बाल मज़दूरी के लिए भेजते है। दूसरा कारण अनुचित शिक्षा, जो बाल मजदूरी को बढ़ावा देता है। शिक्षा के अभाव में वे अपने बच्चे से चाहते है कि वह जितना जल्दी कमाना सीखेगा उतना ही उनके परिवार के लिए अच्छा होगा। एक संशोधन के अनुसार लगभग ७६ मिलियन से अधिक बच्चों ने अभी तक स्कूल का मुंह तक नही देखा है। तीसरा कारण है, कई माता पिता के लालची होने के कारण वे स्वयं कुछ काम नहीं करते है और कमाने के लिए अपने बच्चो को बाल मजदूरी के लिए भेज देते है। कई बार गुंडे-माफिया के लोग अच्छे परिवार के साथ अनाथ बच्चों को पकड़कर भीख माँगने पर और बाल मजदूरी करने पर मजदूर कर देते है। ऐसे बच्चो की जिंदगी बर्बाद हो जाती है। कई बच्चों को बचपन में ही अपने परिवार को संभालने की ज़िम्मेदारी आ जाती है, क्योकि उनकी ज़िदगी में कुछ ऐसी घटनाएं होती है जिसकी वजह से घर में कोई कमाने वाला नहीं रहता। इसलिए ऐसे बच्चों को अपने परिवार की मजदूरी के कारण कारखानों, होटलों और ढाबों में काम पर जाना पड़ता है। विश्व के सबसे ज्यादा आबादी वाले देशो में भारत दूसरे पायदान पर है। और जहां लोग ज्यादा होंगे वहाँ लोगो का भरण-पोषण करना थोड़ा कठिन होगा। इससे जीवन जरुरियात वस्तुओं का मूल्य बढ़ेगा। इसकी वजह से गरीब परिवार को कमाने के लिए घर के सभी लोगों को मज़दूरी करने जाना पड़ता है जिसमें छोटे बच्चे भी शामिल होते है। इससे भी बाल मजदूरी को बढ़ावा मिलता है। भ्रष्टाचार के कारण भी बाल श्रम बढ़ता है, क्योंकि बड़ी-बड़ी होटलों और कारखानों में बिना कोई डर के बच्चो को काम पर रख लेते है। उनको पता है कि अगर पकड़े भी गए तो पैसे देकर छूट जायेंगे। इसके अलावा भी ऐसे कई कारण है, जिससे बच्चो को मजदूरी करनी पड़ती है। विश्व लेबर रिपोट के मुताबिक बाल मजदूरी को मजबूर श्रम भी कहा जाता है। हर बच्चे का अधिकार है कि वो खिलौने से खेले, घर के सभी सदस्य उसे प्यार करे, अच्छी से अच्छी शिक्षा ले और पढ़-लिख कर ज़िंदगी में सफल हो। लेकिन जिन बच्चों को बाल मज़दूरी के दलदल में डाल दिया जाता है, उन्हें यह कुछ भी नसीब नहीं होता है। पूरे विश्व में १४ वर्ष से कम उम्र वाले २१५ मिलियन ऐसे बच्चे है, जिनका वक्त स्कूल, किताबों और दोस्तों के साथ नही बल्कि होटलों, कारखानों और घरो में बर्तन, झाड़ु-पोंछे के साथ बीतता है। पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बाल मजदूर हमारे देश भारत में है। आंकड़ों को बात करे तो १९९१ की जनगणना के अनुसार भारत में बाल मजदूरों की संख्या ३ मिलियन थी, लेकिन यह संख्या साल २००१ में बढ़कर १२.७ मिलियन तक पहुंच गयी है। मजदूरी कर रहे बच्चो को बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है। लगातार शारीरिक और मानसिक पीड़ा के कारण बच्चे नशे का शिकार हो जाते है। इसके साथ-साथ कई खतरनाक आदतें जैसे ड्रग्स, शराब और हिंसा भी बच्चे अपना लेते है। बाल मजदूरी के कारण कई बच्चे कुपोषण का शिकार हो जाते है और अंत में इन फूल जैसे प्यारे बच्चों की मृत्यु हो जाती है। अमेरिका में हुए एक रिपोर्ट के मुताबिक बाल मज़दूरी में फंसे कुल बच्चों में से लगभग ४० प्रतिशत बच्चे शारीरिक शोषण का शिकार होते है। हमारे देश के लिये यह जरूरी है कि इस गंभीर समस्या को जड़ से मिट ाने के लिए हमें सबसे पहले अपनी सोच में एक बड़ा बदलाव लाना होगा। इसके लिए हमें अपने घर, ऑफिस और कारखाने में किसी भी बच्चे को काम पर नहीं रखना चाहिए। यूपी-बिहार में सबसे ज्यादा बाल मजदूर भारत में बाल मजदूरों का सबसे ज्यादा संख्या ५ राज्यों बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में हैं। यहां बाल मजदूरों की कुल लगभग ५५ प्रतिशत है। सबसे ज्यादा बाल मजदूर उत्तर प्रदेश और बिहार से हैं। उत्तर प्रदेश में २१.५ फीसदी यानी २१.८० लाख और बिहार में १०.७ फीसदी यानी १०.९ लाख बाल मजदूर हैं। राजस्थान में ८.५ लाख बाल मजदूर हैं। सबसे ज्यादा अफ्रीका में बाल मजदूर पूरी दुनिया में बाल मजदूरों की सबसे ज्यादा संख्या अफ्रीका में है। अफ्रीका में ७.२१ करोड़ बच्चे बाल श्रम की कैद में हैं, जबकि एशिया-पैसेफिक में ६.२१ करोड़ बच्चे बाल मजदूरी कर रहे हैं। दुनिया के सबसे विकसित कहे जाने वाले देश अमेरिका में बाल मजदूरों की संख्या एक करोड़ के पार है।

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

रामादिमूर्तिषु कलानियमेन तिष्ठन्
नानावतारमकरोद् भुवनेषु किन्तु।
कृष्णः स्वयं समभवत् परमः पुमान् यो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ, जो राम, नृसिंह अवतारों तथा अन्य उप-अवतारों के रूप में सर्वदा स्थित रहते हैं किन्तु जो आदि भगवान् हैं और कृष्ण कहलाते हैं और जो स्वयं भी अवतरित होते हैं।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।

हे भगवान्, आप अपने व्रत से कभी भी विचलित नहीं होते जो सदा ही पूर्ण रहता है क्योंकि आप जो भी निर्णय लेते हैं वह पूरी तरह सही होता है और किसी के द्वारा रोका नहीं जा सकता। सृजन, पालन तथा संहार–जगत की इन तीन अवस्थाओं में वर्तमान रहने से आप परम सत्य हैं। कोई तब तक आपकी कृपा का भाजन नहीं बन सकता जब तक वह पूरी तरह आज्ञाकारी न हो, इसलिए इसे दिखावटी लोग प्राप्त नहीं कर सकते। आप सृष्टि के समस्त अवयवों में परम सत्य हैं इसलिए आप अन्तर्यामी कहलाते हैं। आप सबों पर समभाव रखते हैं और आपके आदेश प्रत्येक काल में हर एक पर लागू होते हैं। आप आदि सत्य हैं इसलिए हम नमस्कार करते हैं और आपकी शरण में आए हैं। आप हमारी रक्षा करें।

वेणुं क्वणन्तमरविन्ददलायताक्षं
बर्हावतंससमसिताम्बुदसुन्दरांगम्।
कन्दर्पकोटिकमनीयविशेषशोभं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ, जो दिव्य बाँसुरी का वादन करते हैं। उनके नेत्र कमलपुष्पों के सदृश हैं। वे मोरपंखों से सुशोभित हैं और उनका वर्ण स्वच्छ श्यामल बादलों के सदृश है। उनका यह स्वरूप करोड़ों कामदेवों को लजाने वाला है।

श्रीशुक उवाय

मत्स्याश्वककच्छपनृसिंहवराहहंस–
राजन्यविप्रविबूधेषु कृतावतारः।
त्वं पासि नस्त्रिभुवनं च यथाधुनेश
भारं भुवो हर यदूत्तम वन्दर्न ते।।

हे परम नियन्ता, आप इसके पूर्व अपनी कृपा से समस्त विश्व की रक्षा हेतु मत्स्य, अश्व, कच्छप, नृसिंहदेव, वराह, हंस, भगवान् रामचन्द्र, परशुराम तथा देवताओं में से वामन के रूप में अवतरित हुए हैं। अब आप इस संसार के उत्पातों को कम करके अपनी कृपा से फिर से हमारी रक्षा करें। हे यदुश्रेष्ठ कृष्ण, हम आपको सादर नमस्कार करते हैं।

श्रीदेवक्युवाच

योऽयं कालस्तस्य तेऽव्यक्तबन्धो
चेष्टामाहुश्चेष्टते येन विश्वम्।
निमेषादिर्वत्सरान्तो महीयां–
स्तं त्वेशानं क्षेमधाम प्रपद्ये।।

हे भौतिक शक्ति के प्रारम्भकर्ता, यह अद्भुत सृष्टि शक्तिशाली काल के नियन्त्रण में कार्य करती है, जो सेकंड, मिनट, घंटा तथा वर्षों में विभाजित है। यह काल तत्व, जो लाखों वर्षों तक फैला हुआ है, भगवान् विष्णु का ही अन्य रूप है। आप अपनी लीलाओं के लिए काल के नियन्त्रक की भूमिका अदा करते है, किन्तु आप समस्त सौभाग्य के आगार हैं। मैं पूर्णतः आपकी शरणागत हूँ।

श्रीशुक उवाय

अथो यथावन्न वितर्कगोचरं
चेतोमनः कर्मवचोभिरञ्ज सा।
यदाश्रयं येन यतः प्रतीयते
सुदुर्विभाव्यं प्रणतास्मि तत्पदम्।।

अतएव मैं उन भगवान् की शरण ग्रहण करती हूँ और उन्हें नमस्कार करती हूँ जो मनुष्य की कल्पना, मन, कर्म, विचार तथा तर्क से परे हैं, जो इस विराट जगत के आदि-कारण हैं, जिनसे यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड पालित है और जिनसे हम इस विराट जगत के अस्तित्व का अनुभव करते हैं। मैं उन्हें सादर नमस्कार ही कर सकती हूँ क्योंकि वे मेरे चिन्तन, अनुमान तथा ध्यान से परे हैं। वें मेरे समस्त भौतिक कर्मों से भी परे हैं।

कृष्ण कृष्ण महायोगिंस्त्वमाद्यः पुरुषः परः।
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं रूपं ते ब्राह्मणा विदुः।।

हे कृष्ण, हे कृष्ण, आपकी योगशक्ति अचिन्त्य है। आप सर्वोच्च आदि-पुरुष हैं, आप समस्त कारणों के कारण हैं, आप पास रह कर भी दूर हैं और आप इस भौतिक सृष्टि से भी परे हैं। विद्वान् ब्राह्मण जानते हैं (सर्वं खल्विदं ब्रह्म–इस वैदिक कथन के आधार पर) कि आप सर्वेसर्वा हैं यह विराट जगत अपने स्थूल तथा सूक्ष्म रूपों में आपका ही स्वरूप हैं।

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
- **Radiology**
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- **Cardiology**
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

RUPA
TORRIDO
PREMIUM THERMAL
TORRIDO
सर्दियों में
only
TORRIDO
EXTRA WARM | STRETCHABLE | BODY-HUGGING | ATTRACTIVE COLOURS | SOFT AND NON-ITCHY
www.rupa.co.in | SMS 'RUPA' to 53456 | Toll Free No: 1800 1235 001 | Shop Online: www.rupaonlinestore.com

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com

www.genus.in

Genus
energizing lives

Making society **more smarter, sustainable, efficient, equitable, and liveable**

15+ Million
Happy Customers

35+ Megawatt
Solar Rooftop Installations and counting...

R & D Centre
Recognized by Govt. of India

Export to 22+
Countries across the world

• End-to-End Smart Metering • Power Back-up • Solar Solution

Genus
energizing lives

SPL-3, RIICO Industrial Area, Sitapura, Tonk Road, Jaipur-302022,
(Raj.), INDIA T. +91-141-7102400/500
metering_exports@genus.in, metering@genus.in

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2018-2020
Date of Publication - 24th December 2022
RNI Regd. No. 2866/1968